झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा स्वीकृत
10+2 कक्षा हेतु खोरठा भाषा की पाठ्यपुस्तक

खोरठा गइद-पइद संगरह

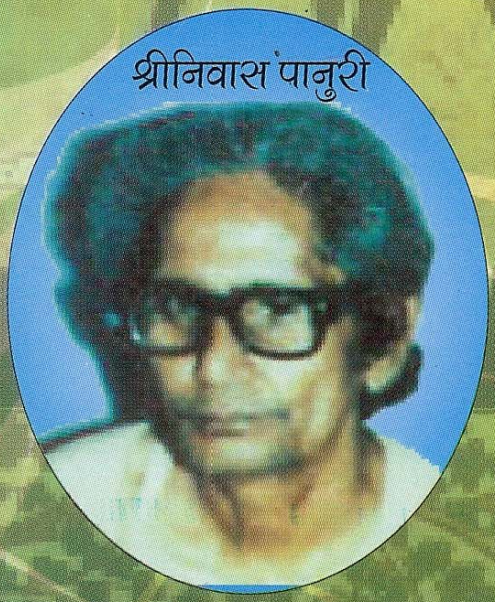
श्रीनिवास पानुरी

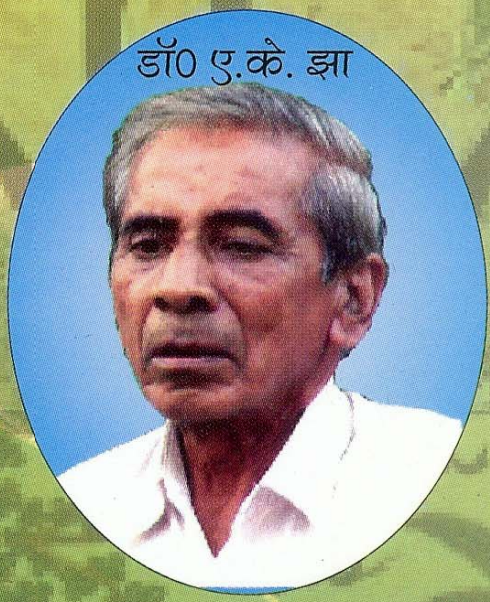
डॉ0 ए.के. झा

प्रकाशक
खोरठा साहित्य-संस्कृति परिषद
रामगढ़

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
एवं झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा स्वीकृत
उच्च माध्यमिक (10+2) कक्षा हेतु पाठ्यपुस्तक

खोरठा गइद-पइद संगरह

खोरठा साहित्य-संस्कृति परिषद्

प्रकाशक
खोरठा साहित्य-संस्कृति परिषद
प्रधान कार्यालय : ओहदार भवन, एन.एच. 33, काँकेबार, रामगढ़
निबंधन : सोसाइटीज रजि. एक्ट 21, 1860, सं0 656/2016–17
मो0 : 9939386799, 9835795412, 9471758549
khorthasahitya2016@gmail.com

अलंकरण एवं मुद्रण :
सुचिता कम्प्यूटिंग
बिजुलिया, रामगढ़ कैन्ट
मो0 : 9431394527, email. : suchitacomputing@gmail.com

© सर्वाधिकार सुरक्षित

खोरठा गइद–पइद संगरह

प्रथम संस्करण : 1989
प्रकाशक :
बोकारो खोरठा कमिटी,
3–238, 2डी
बोकारो इस्पात नगर – 827001

संशोधित संस्करण : 2018
प्रकाशक :
खोरठा साहित्य–संस्कृति परिषद
ओहदार भवन, एन०एच०33, कांकेबार
रामगढ़ – 829122

प्रतियाँ – 2000

मूल्य : ₹ 100

मोहड़ाक बात

तोहनिक हाँथे खोरठा गइद–पइद संगरह के 'परिष्कृत', 'परिवर्द्धित' दोसरका संस्करण देते हामरा बेजाऊ खुसी बुझाइ लागल हे। मकिन एहो एंगो लाजेक बात जे ई संस्करण के अइते–अइते सताइस साल लागइ गेलइ। ई माँझें दामोदरेक पुलें कतेक पानी बहराइ गेलइ। खोरठाक पुरखा रचनाकार, श्रीनिवास पानुरी, ए0के0 झा, कृष्ण चन्द्र दास 'आला', महेश गोलवार, संतोष महतो सिराजुद्दीन 'सिराज', हामनिक माँझ से उइठ गेला। संगे संगे खोरठाक रचना संसार टाउँ ढेइर परिस्कार भेलइ। तकरा मगजें राइख के ई संस्करण के इंजराइक चेस्टा करल गेल हइ।

पहिला संस्करण बोकारो खोरठा कमिटी बाट ले इंजराइल हलइ मकिन ई बेर ई जिम्मेवारी खोरठा साहित्य परिषद के देल गेल हइ मकिन पुरना संपादक मंडल के बाँचल सभे सदइस शिवनाथ प्रमाणिक, बंशीलाल बंशी, परितोष कुमार प्रजापति, डॉ० बिनोद कुमार, डॉ० पारसनाथ महतो, लुआठी के संपादक गिरधारी गोस्वामी, प्रो० दिनेश दिनमणि, प्रो० भुनेश्वर साहु, प्रो० शशि कुमारी, प्रो० नागेश्वर महतो के अनखाइ सहजोग आर साल्हा के बगइर इंजरावेक काम टा कटि कठिन हलइ।

ई संस्करण के बहरइतें सब ले बेसी धइनबाद के जुकुर आर हकदार हक प्रो0 दिनेश दिनमणि जे जिरिंगजिट महीना–महीना लागल रहला आर तबे साँस लेला जब एकरा बहराइ छोड़ला।

सेसें ई किताब ऊ पढ़निहार गुला के नामें समरपित हे जे इंटरमीडिएटें खोरठा के एगो आपन बिसइ के रूपें राखल हथ।

बाकी सभे पढ़निहार आर समीक्षक के परतिकिरियाक प्रतीछाऊ।

निदेशक

डॉ० बी०एन० ओहदार

खोरठा साहित्य–संस्कृति परिषद

संपादक मंडल
(पहिल संस्करण)

प्रधान संपादक
डॉ० ए०के० झा

❋❋❋

कार्यकारी संपादक
शिवनाथ प्रमाणिक

❋❋❋

संपादक
डॉ० चतुर्भुज साहु
बंशी लाल वंशी
डॉ० बी०एन० ओहदार

❋❋❋

सहयोगी संपादक
जयवीर साहु
शांति भारत
विनोद कुमार
पारसनाथ महतो
भुनेश्वर साहु

❋❋❋

प्राक्कथन

पाठ्यक्रमों का निर्धारण एवं ग्रंथों का सृजन राष्ट्रीय महत्व का एक पुनीत कार्य है। देश की आजादी के पूर्व एवं पश्चात् खोरठा भाषा में श्रीनिवास पानुरी की कुछ अनूदित एवं कुछ मौलिक पुस्तकों की रचनाएँ हुई, जिसमें से कुछ तो कालान्तर में दुर्लभ हो गई। परन्तु, सरकार द्वारा जब से जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं को मान्यता प्राप्त हुई, तबसें योजनानुसार क्रमबद्ध रूप में शिष्ट साहित्यों का सृजन प्रारंभ हो गया है। हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि वर्तमान दशक में अन्य भाषाओं के साहित्य में जो बदलाव आया है, वही बदलाव खोरठा भाषा के साहित्य में भी निश्चित रूप से आया है। रहस्यवाद, छायावाद, की कुछेक रचनाएँ आती भी है तो आधुनिक साहित्य के 'फ्रेम' में 'फिट' नहीं हो पा रही है। परिणामतः मानववादी–जनवादी तथा प्रगतिशील चिन्तन–धारा इन रचनाओं में मुखर हो उठी हैं। गीतों, कविताओं के तेवर बदल चुके हैं सम्प्रति ये रचनाएँ मनोरंजन कम, पर मानवरंजन अधिक कर रही है।

कुछ वर्ष पूर्व 'खोरठा साहित्य–परिषद' का विधिवत गठन हो चुका है। परिषद द्वारा चयनित खोरठा भाषा के विद्वान सामूहिक रूप से रचनाओं का संकलन एवं ग्रंथों का संपादन कर रहे हैं। इन ग्रंथों का प्रकाशन संथालपरगना सहित सम्पूर्ण उत्तरी छोटानागपुर (हजारीबाग, गिरिडीह, धनबाद) तथा राँची से होना प्रारंभ हो चुका है।

विद्वान साहित्यकारों, सम्पादन– सलाहकारों तथा अन्य विशेषज्ञों का हम आभार प्रकट करना चाहते हैं, जिन्होंने समय–समय पर अपना बहुमूल्य सुझाव देकर हमें उपकृत किया है। हम उन्हें हृदय से धन्यवाद देते हैं।

अन्त में, शिक्षकों एवं पाठकों से बहुमूल्य सुझाव एवं स्वस्थ आलोचना का हम स्वागत करते हैं।

संपादक मंडल

परकासक बाट ले (पहिल संस्करन के)

सामाजिक, सांस्कीरतिक आर साहितिक संस्था 'बोकारो खोरठा कमिटि' 1984 ले लगस्तरे माञ, माटी, मातरीभासा आर मानुस के सेबा करले आइ रहल हे। 'रूसल पुटुस', दामुदरेक कोराञ', खोरठा लोककथा' बहरवल बाद 'खोरठा गइद–पइद संगरह' तोहिन के हाँथें हो।

काँचा–कउड़िक फेचांग आर छापाखानाक छेवांइदेक बेड़ी के तोइर–ताइरकें ई किताप मातरीभासा खोरठा के पढ़वइया सोब के आगु जोहाइ गेल हो। किताप बहरइतें देरी तो भइये गेल, मुदा बाहराइल। अइसने आरो कईगो गइद–पइद संगरह तलिआइल, सांगाठल खपें बहरवेक हामिन के नजीकें परसताव हे, मुदा खोरठा छेतरेक कुइछ अइसनो साहित–परेमी हथ जे मदइत करइतें तनी कर–काइट दे–हथ आर कुइछ के मन तो केंचमेंचाहे। से–ले, हिंयाँ–हुवाँ ले उदार–मनेक साहित–परेमी ले चोंगइर–चाँगइरकें जोगाड़ करल पोहीं अइसन जुगजीतवा काम भइ रहल हइ। ऊ सोब धइनबाद के 'पात्र' हथ।

ई कितपवाक लेताइरें हामिन कुरचे खोज–ही, जे नाँइ चाहल बाधूँ कइगो गनल–गुथल सबदवइन बेंड़ाइ गेल हइ। मानै 'प्रुफ' में गलती भइ गेल हइ। तावो जे गातें–मथें लाइग के कमिटिक प्रबंध सचिव कबि बंशी लाल बंशी 'प्रुफ रीडर' के काम करल हथ, ई कम बड़ाई के बात नखे। आसा हे, पाठक सोब तनी सुधाइरकें पोढ़ता। तावो कितपवाक सेंसे सबदवइनके आञा रूपो देल गेल हइ।

ई संगरह बिद्यारथी सोबके धइयान राइख के तइयार करल गेल हइ, जे पढनिहार छउवा सोब गइद साहितेक भिनु–भिनु विधा से परिचित होवथ। काइब खंडे पुरान–परियाक साहितकार व्याकुलजी, पानुरीजी, गोलवारजी, 'राज' जी जइसन कबिआर कबिता गलइन के चिन्हथ – जानथ आर नावाँ परियाक शांति भारत, प्रमाणिक, प्यारे हुसैन यायावर, सुकुमार, दास, गरीब जइस युवा–कबिक रचना सेहूँ 'प्रेरणा' लेथ।

सेंसे 'जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय के हामिन धइनबाद देही, जकर निरदेसने खोरठा भासाक ई किताप छइप रहल हइ। संगे–संगे छोटानागपुर प्रेसेक मालिक अरूण दा के मधुर सहयोग हामिन भुले नाँइ पारब।

खोरठा साहित–परेमी, भासा – जानकार आर विद्वान सोबके सल्हा हामिन मथें पाइत लेब।

बोकारो खोरठा कमिटी
बोकारो इस्पात नगर

बिसइ सूची

गइद खाँधा

			पृ० सं०
1	भुनेश्वर साहु	माँझो (कहनी)	1
2	दिनेश कुमार 'दिनमणि'	धरम–करम (कहनी)	4
3.	डॉ0 बी0एन0 ओहदार	सोंध माटिक टान (कहनी)	8
4.	बंशी लाल 'बंशी'	चासा (कहनी)	12
5.	अमर कुमार	परपन सर्टिफिकेट (फिंगाठी लेख)	18
6.	महेश गोलवार	उड़ीस महातम (फिंगाठी लेख)	21
7.	शिवनाथ प्रमाणिक	खोरठा–एगो 'स्वंतत्र–समृद्ध' भासा (लेख)	24
8.	शांति भारत	बोरवाअड्डाक अखय बोर (संस्मरण)	27
9.	गोविन्द महतो 'जंगली'	उइड़ गेलक फुलवा रइह गेलक बास (संस्मरण)	31
10.	डॉ० चतुर्भुज साहु	दारजिलिंग आर गंगटोकेक जातरा (जातरा बिरतांत)	34
11.	डॉ0 ए०के० झा	पुटी आर पालु (सबद चितर)	40
		बड़का बुजरुक बिरसा (जीवनी)	45
12.	डॉ0 पारस नाथ महतो	सेख भिखारी (जीवनी)	48
13.	सुकुमार	डाह (एकांकी)	50

पइद खाँधा

1.	भुनेश्वर दत्त शर्मा 'व्याकुल'	छउआ दुलार	53
2.	श्रीनिवास पानुरी	किसान	54
3.	महेश गोलवार	जय जवान जय किसान	56

4.	संतोष कुमार महतो	एखनेक जिनगानी	58
5.	पी०के० मरांडी (आँथरी)	बाह रे अंगरेज	59
6.	ए०के० झा	चाइल–चीन्हा	60
7.	प्रहलाद चन्द्र दास	मानिक हामर	62
8.	भारत यायावर	बखरी	64
		बसंत राग	65
9.	अनंत कुमार झा	मरदेक पुथइल	67
10.	बंशी लाल 'बंशी'	गाँवेक मानुस	68
11.	शिवनाथ प्रमाणिक	पयान गीत	69
12.	शांति भारत	जुगेक मरम	70
13.	सुकुमार	बेंड़ाइल सवञ	71
14.	प्यारे हुसैन 'प्यारे'	डाइन भूतेक सबूत नाञ	72
		बिना सिंघेक काड़ाइँ	73
15.	प्रदीप कुमार 'दीपक'	कखन हतक भोर	74
16.	दर्शन प्रसाद सिंह	धिक रे ! धरतिक पुता	75
17.	विनोद कुमार	देसेक जुवान	76
18.	शिवनन्दन पाण्डेय 'गरीब'	धरती छोटानागपुरेक	77
19.	रामशरण विश्वकर्मा	हाँसिक जोगाड़	78
20.	विश्वनाथ दसौंधी 'राज'	लहर	79
		तनी सुन रे मानुस	81
21.	वासुदेव महतो	दामोदर भेल खिदोर	82
		झारखंड के अँखिया ले ढरकी गिरे लोर	84

❋❋❋

1

भुनेश्वर साहु

इनखर जनम 8 जनवरी 1959 के साँकुल (पररातू) गाँवें भेल हई। इनखर बाप के नाम राम किशुन साहु, जे एगो बेस चनफनियाँ खेतिहर किसान लागथ। भुनेश्वर साहु आपन बिदआरथी जिनगीं बेस हुइबगर आर चेठगर रहथ। इनखर पढ़ाइ–लिखाइ एम०ए० (खोरठा) तक हइन। सुरूवे ले साहु जीक आपन माटी आर मातरीभाखा के परति बड़ी हुइब। खोरठा भासा के कहानीकार के रूपें ई आपन मोहड़ा बनाइ रहल हथ। इनखर कहनी 'संतोख' आर 'कुलदिपा' चरचित हइ। 'मांझो' इनखर टाटका–आब्गा रचना हइ। एकर संगे–संगे इनखर खोरठा कविता 'दिएक कहि लइ लेलइ' 'एगो पारिख नव गो झोरा' बोड़ रचना में हइ। एखन ई आपन मातरीभाखा खोरठा में रचना कइर रहल हथ।

❑ *कहनी*

मांझो

भुनेश्वर साहु

राइत के भरखर जुवानीं। सगरे कुचकुचिया अंधारेक राइज। चाइरो बाट सुनसान! ई सुनसान राइतें कखनु–कखनु झींगुर के बोली सुनाइ परे हे, तो कखनु धुर कहुँ कुकुर झाञ–झाञ कर हथ। गाँवेक लोक आन घर आँगनाञ सुतल हथ। एगो–दुगो मुनीस (गोरखिया) दुवाइर तरें नाक डाके हे। जेकर नाकेक घर–घरी रातीं सफा सुना हे। ठाँव हीं बाँस गजारें कखनु हुआँ–हुआँ कइर सियार झुक–हथ। ई आँधारराइतें सब के सब निंदाइ गेल हथ मकिन एक के आँखीं नींद नाञ। ओकर आँइख ले खाली लोर बोहे हे। ऊ लागिन माँझो। माँझो कखनो आपन लुल्हा हाथ के छुव–ही जेकर में एगो फाटल चेंथरा के पट्टी बाँधल हइ। तो कखनु उपरें देख–हिक जने छाइन के कोठा–पाटी आर काही–जाही जिनिस देखा हे, तो कखनु ढिबरी देखहिक जे ढेइर देरी ले धुँइ–धुँइ कइर निंझाइ बाला हे। मकिन निंझाइल नखे। कखनु ठाँवहीं सुतल खइटली में आपन माञ के देख–हिक जे माञ आपन बेटी माँझो खातिर बेस–लेबेस बर टावान कर–हलिक। माँझो सोचलिक कि आर ओकर बीहा नाञ होतक, एहे सोचइते कखन ओकर आँइख लाइग गेलक।

झलफल खभइर पहुँचल सानडीह, जे डिहें माँझो के बीहा बिनोद के संगे तइ भेल हलइ कि माँझो के राँची मेडिकल हस्पतालें भरती कइर देले हथिन। बिनोद दोहरी गतर के गोर–नार एकीस बछरेक चनफन आर चेंठगर जुवान। ओकर बाप गनपतिया एक लम्बर के ललचिहा आदमी। ऊ आपन बेटा बिनोद के लेल गिरिडिहें बिहाक बात चलावल हल जहाँ बेस टाका–कोउड़ी तिलक रूपें आर अनठेकान दहेज मिलेक बात तइ भइ गेल हलइ। मुदा तनी कनिआइ बेसी उमइरगर हली। बिनोद के बाप के ई रिसता मंजूर भइ गेल हल किलेना तिलक बेस मिल–हल। जखन बिनोद के ई बात के पता चलल तो ई

बीहा करेक लेल सफा नामंजूर कइर देल। घुइर बछर रजरपा के नजीके गाँव ले जखन रिसता आइल तो कनिआइ (मांझो) बिनोद के पसिंद भइ गेल रहइ। मुंदा कम तिलक–दहेज दियेक कारन गनपतिया ई रिसता के मंजूरी नाञ देलक। बिनोद मांझो के रजरपा के मेलाञ देखल हलक, से ले पसिंदो करल। ई बात आपन घरें बिनोद आपन माञ के कहियो देल हल – "माञ, हम बीहा करबो तो रजरपे में आर नाञ तो एखन पाँच बछर तइक बिहा नाञ करबो।"

गनपति हलक किसान खेती–बारी करे वाला। घर करना चलवे में एकाइ बिनोद के माञ थइक जा हली से ले बिनोद के बीहा जुनजुनात दरकार हलइ। जखन गनपतिक बेटी छउवा गुलइन हलथिन तखन माञ के मदइतो कइर दे हलथिन मुदा एखन ओकर घरे खटेवाला जनिक मइधें एकाइ बिनोद के माञ। बेटी छउवइन आपन–आपन ससुर घर चइल गेलथिन। से ले बिनोद के बीहा तइ भेल ओकरे पसिंद के मोताबिक। फागुन तिरतिया के दिन हरदी राँगाइ गेल हल आर बिहाक दिन पइछला पख नौमी के तइ भेलइ। जे दिन कनिआइ के लगन बांधे जितला तकर दू दिन पहिले रजरपा ले ई खभइर सानडीह पहुँइच गेल कि कनिआइ के पाँचों अंगरिअइन कटाइ गेल हे। ई खभइर बोनके आइग तरी टोला–मोहल्ला में पसइर गेल। बिनोद के घरें तो हाँव–हाँव गोहाइर होवे लागलइ – "हम आपन बेटा के लुल्ही–ठुठह कनिआइ से अब कइसें देबइ ? कि दुनिआइ में लड़की के अक़ाल पइर गेल हे।" तब तक दोसर कहलक – "मार तो लड़किये के तकदीर फुटल हे तो हमर लड़कबा के नाञ ने भाइ" – कइह के भाइगवाद के सहारा लइ चुप रइह गेलक।

अब बिनोद की करे। कइसन तो सपना देखल हलक आर की होइ गेलक ? घरेक पीड़ाञ बइस बिनोद मुड़ धइर भाभ–हलक की करें ? ता ले बिनोद के बाप गरगरइलक – "हम बारम्बार कह–हलियो कि ऊ घरवा बेस नखे। हुवाँ बीहा नाञ कर। हमर बात तनिको एकर गोदीं नाञ ढुकलइ। एखन बीहा कर ठुठी छँउड़ी से। तनिकुन पइढ़–लिख लेलक तो बुझलक आपने के लाइट साहब। अरे बुढ़ाइ गेल हीं। हमनियो के बुइध गियान हे। जेटा लिखल रहतो ओहे हतो, आर जे करे भगवान मंगले करे।" कइह बइस गेलक। "अब हमरा के बोले पारतक" – गनपति हंकइद उठलक ।

बिनोद मनमाइर रइह गेलक आर मनेक कथ मनहीं राखल। "ठीक हउ, अब हाम बीहा नाञ करबो। हामरा काचा–कउड़ी दे। हामें राँची जाइ आर पढ़बो।" मने एगो जुगुत भाइभ बिनोद बाप के कइह देलक।

"ठीक हउ। ई भला कि तोञ आर पढ़ाइ कर। तोञ काल्हे जउ।" बिनोद के बाप सांइ देलक।

दोसर दिन बिनोद राँची जाइवाला बसें बइस गेलक आर बितल दिनेक आँखी देखल 'दृश्य' टा देखे लाग लक। रजरपा के मेलाञ आपन बोहनइ के संग घुरे हे। ओकर बोहनोइ दुरे ले माँझो के देखाइ देलक। माँझो बिनोद के दीदी के संग मेला में घुर हली। संगे गाँवेक आर संगी बेटी छउवा हलथिन। माँझो कखनु चुरिक दोकान तो कखनु टिकली

बेचवइया के पास जांही। गोर–नार आठारो बछरेक बेटी छउवा माँझो। सनो, पाउडर नखवेसर, कनपासा, हाथें भइर लइके हियाँ–हुवाँ चेरँइ नियर फुदइक बुल–ही। जखन बिनोद के दीदी माँझो के कइह देली कि एहे हमर भाई बिनोद हके तो दुइयों के आँइख मिल गेलइ। बिचकुन माँझो तनी सरमाइयो गेलिक, मुदा मने–मने ओहो पसिंदो कइर लेली।

कखन जे बस छुटलक बिनोद के मन तखन घुइर अइलइ जखन बसवा में तनी जो से 'ब्रेक' मारलक। बिनोद तो खुब भाभे लागलक कि अब का करों। अइसने भाभइते ऊ राँची पहुँच गेलक।

हुँदे लुल्हा हाथ लइ माँझो राँची के मेडिकल हस्पतालें आपन 'बेड' में सुतल हीक। ओकर आँइख उपर दने पंखा के घुरइते ताके लागल। आर ओकोर मुड़ी घुरे लागलक–– घरें धुम–धाम ढेंकिक साड़ा । घर आंगना गहगहा हलइ। माँझो के बीहा के सरंजाम। भौजी ढेंकी कुट–हलिक आर माँझो उसकावइत हलिक, कखन जे ढेंकिक उखइर, कांड़ी में परल माँझो के फहम नाञ, से सँवइ माँझो के हाथ कांड़ी में हल। बस पाँचो अंगरी कांड़ी में कइट के रइह गेलइ आर ठुठ हाथ उपर। लोहू से कांड़ी भइर गेल। एहे भाभइत माँझो मने मन कहे लागली – "अब तो हमर बीहा नइये होतक !" ई सोइच आँइख ले झर–झर लोर ढरके लागलक। तब तक "मांझो" सबद के साड़ा काने पहली। हिंदे–हुँदे चकर–मकर थनवे लागली तब तक बिनोद माँझो के पास जाइ डाँड़ाइ गेलक। आपन ठुठा हाथ नुकवे लागलिक माँझो। तब तक बिनोद ओकर हथवा के चुमा लइ लेलक। माँझो के मुँह ले तो कोन्हो बात नाञ उसरे लागलइ। माँझो जखन बिनोद के चिन्ह लेलिक तखन तो दुइयो आँइख एक बेर आर जोर बाँईध देलक। ऊ फफके लागलिक।

बिनोद कइह उठल – "चुप रह। आर बेसी नाञ काँद। हम बीहा करबो तो तोर संग।"

मांझो एक बेर भइर आँइख बिनोद के ताकली आर कइह उठलिक– "ई जानियो के, कि हम लुल्ही ठुठी भइ गेल हों।"

"हाँ, सब जानियो के। हमरा रोके वाला केउ नाञ हे ई दुनिआइ में, हमर बापो नाञ" – बिनोद निडर भइके कइह उठल आर माँझो के आँइख ले लोर पोंइछ देलक।

बिनोद के आंइखों मे लोर भइर गेलक। "तोर हस्पताल ले छुट्टी हइ जितो, तब तोर हमर बीहा होतक। अब हम जाहियो, भाभिहें नाञ" – कइह बिनोद बेड रूमवा ले बाहर भइ गेलक। माँझो के माञ कोनवाँ में डाँड़ाइ के सब सुइन लेलिक – ओकरो आँखी लोर। ऊ बिनोद के पाछु बाट ले चाल करे खोजली मुदा मुँह ले सबद नाञ फुटल।

परें बिनोद तकदीर के आपन डहर ले हटाइ के ततवीर कइर देखवलक। माँझो के नावाँ जिंनगी मिललक।

❋❋❋

2

दिनेश कुमार 'दिनमणि'

'दिनमणि' एगो बेस डंटगर चेठगर कलम चलवइया के नाँव। इनखर जनमथान गिरिडीह जिलाक जैनामोड़ेक नजीकें बारडीह गाँव। बाप महेश्वर महतो सिखित विद्वान लोक। इसकुल मास्टर महेश्वर महतो खोरठा साहितकार ए०के० झा के संगी। बुझा हे ई विद्वान लोक गुलइन के गुन टा दिनमणिजी के नजीकें करमें–करमें आइ रहले हइ। दिनमणि जी हिन्दी आर खोरठा भासा दुइयों में आपन अधिकार राख–हथ। इनखर कइगो कविता पत्र–पत्रिकाहुँ छइप बाहराइल हइ। काव्यकार के संगे–संगे दिनेश कुमार 'दिनमणि' एगो बेस चित्रकारो लागथ।

इनखर धरम–करम कइहनीयें समाजें भोरल काना–पतियार गुलइन के डहरें चले गेलें कते मानुस दुख काटेहे, देखवल गेल हइ। ई पुरना चाइलें चले गेलें मानुस के बिकास नखे बलुक बिनासे हे।

❑ *कहनी*

धरम-करम

दिनेश कुमार 'दिनमणि'

आइज सात दिन लागइ। गाँवेक माहतो मुखिया आर बेस–बेस लोक अघनुक दुवरीं जोहड़े लागल हथ। आइज ई फइसला हतइ जे – अघुन बापेक भोज कि–कि आर कि रकम करत।

फागुन मइहनाक दिन। बेरा तीन टा होते–होते गाँवेक गाइन–माइन लोक सब जामा भइ गेलथ। अघनु बोरा पटिया आगुवे कुल्हिक पिंडा बिछाइ राखल हले। सब आइ के बइसल हथ। बिड़ी–माचिस आइन के अघनु देलइ। एक–दू लोक छाइड़ के सोभिन बिड़ी पिये लागला आर हिंदे–हुंदेक बात करे लागला। अघनु हेंठ मुड़ कइर के काँथ टाँइ ओठइंग के डाड़ाँइल हल। नेगा हाथें लोहाक छड़ टा से ऊ भुँइटाक ऊपर छोट–छोट चिहा कर–हल, मेंतुक कुछ बइजके नाइ दाहिना गोड़ेक बुढ़ा आगुर टा से भुँइ टाक उटक हलइ। ओकरा देइख के हामरा नौ–दस बछर आगुक एगो बात टा मने पोइर गेल –

अघनुक बाबा मोरल हलइ। तखन अघनु ओहे ..... चौदइ पनदरह बछरेक हल। ओकर मुँहे मिसी मिन–हलइ। जे रकम अघनु बापेक एकेग– बेटा, सइये रकम समर काव बापेक एके बेटा हल।

समर काकाक बाप गुजर महतो बड़ी नामी लोक रह–हल रामायनेक कथाँइ तो ओकर मुँहे केउ हाथ नाञ दिए पार–हल्थिन सइ खातिर ओकर सभे गाँवे डाक आर मान–इजइत हव–हलइ।

ई दुनिइयाञ के सब दिन बाँचे ले आइल हे ? जे रकम सोभिन मोरथ सइये रकम

एक दिन गुजर माहतो मोइर गेल। आइझेक रकम समर काका–हूँ गाँवेक गइन–माइन लोक गुलाक बापेक सात दिने डकवलइ। सोभिन मत देल्थिन जे जइसन लोक टा रह–हल तइसने ओकर किरिया–करम टाव होवेक चाही। ई लोक टा सुधे एहे गाँवेक नाँइ ई तो हामनिक जाइतेक सभे गाँवेके लोक रह–हले। सइ खातिर वि–सर्ग किरिया ना करले एकर जीव टाक साँति नाँइ मिलतइ।

बेचारा समर काका दस लोकेक बात टा काटे नाँइ पारलइ, दस लोकेक मते एहो साइ दइ देलइ। सियार खोंधाक डाबइर टा बेइच आर एक दू लोक ठीन पँइचा–पानी कइर के बापेक भोज करल। वि–सर्ग किरिया साढ़–साढ़िन छाड़ल आर कइ गो गाइयो बाभन के दान–देलइ। तेरह दिने मरखी करल। कते–कते बाभन बाँइध–छाँइद पेट उर्राय चइल–गेली। कइ दिन तक समर काकाक बड़ी नाम गह–गहइलइ।

कुछ दिन तक समर काका मन झान बुझा हल। मेंतुक असते–असते मन टा थिर भेलइ आर रिन गुला सोधइक उपाइ करे लागल। उपाइ आर कि करत खेतिक भोरसाहीं तो ओकर सब हलइ। बइरसा काल अइलइ। सोमर काका रोपा–डोभा करे लागल। एकाइ. कते करतल बेचारा सइ खातिर अघनुक पोढ़े ले छोड़ाइ देलइ।

एक दू गो खेत रोपाइल हलइ आर सोमर काकाक हारेक दाहिनेक गरू टा मोइर गेलइ। एगो बाछा हलइ जे टा बच्छर दाँवले चलतलइ सेटा तक बापके भोजहीं साँढ़ दगाइ गेल हलइ। एगो गरूँ कि हार चलइ ?

सोमर काकाक तऽ रोपा डाँड़ाई गेलइ। कि करत बेचारा ? कई लोक ठीने गरू माँइग देखलइ मेंतुक आपन काम छोइड़के के देतलइ ? सोमर काकाक ठीनें टाकाव नखइ जे लौतन गरू किन आनतल। कोन्हो उपाइ नाइ।

सोभेक रोपल बादे भादर मासे आपन खेत गुला कोन्हो रकम लोकेक हार गरू माँइग के रोपल।

आघन मास अइलइ। समर काकाक खेते धान नाञ भेलइ। जेटा भेलइ सेटाइ बछर दिन चला मुसकिल रिन पँइचा सोधेक तो दूरेक बात समर काकाक हालइत बहुत खराप भइ गेलइ। दू बछर बादे आरहो कइगो खेत बेइच के रिन गुला सोधलइ।

एहे चाइर–पाँच बछर, अघनुक बीहाक बाद से समर काका कहुँ आसा–जावा नाँइ करतल। बेसी घइर सुतले रहतल आर खोंइख–खोंइख आस–पासेक लोक के सड़वइते रहतल। आइज ओकरे सात दिन लागइ।

"हाँ तऽ बाबु अघनु कोन किरिया टा करबें" – गाँवेक माहतो पूछलइ। अघनु कुछ नाँइ कहल। माहतो फइर पूछलइ – "तोर बाप जेटा आपन बापेक बेरीं करल रहो सेटा तो नाञ पारबें नाकि ? कि बिचार हो ?"

"नाञ बाब हामें ओते नाञ पारबो।" – अघनु घेंचाइ लुगा लइके कहलइ।

"तो कि पारभी सइटा कहीं।" – एगो लोकें कहलइ।

अघनु – "हामर दासा तो देखबे कराहा। तोहनिये कोन्हों उपाइ कइर दे।"

माहतो – "तो सुन बाबु ! तोर बापें तऽ 'बृषोत्सर्ग' किरिया करल हलो। तोंय कम से कम पँचदान टा करिहें, नाञ तऽ तोर बापेक जीउ टाक सांति नाँइ मिलतइ।"

"हाँ–हाँ ठीके कहल्थून" – पँचेक बाट ले सभिने कइह उठलथिन।

"पँचदाने कि भोज लागतइ" – भूंइटाक ताइक के अघनु पूछलइ।

एगो लोकें कइह उठलइ – "दहि चिउरा चाहे, दाइल रोटिक सेंगें कोन्हो गुरूवा जिनिस।"

"गुरूवा जिनिस मानें बुन्दिया चाहे मिठाइ। गुर देलें नाँइ ना चलतो !!" एगो दोसर लोक कइह उठलइ।

अघनु कहलइ – "नाँइ बाबा ! ओते हाम नाँइ परबों।"

"एतना नाँइ पारबें तऽ कि पारबें ? तोर बाप कि रोज–रोज मोरतउ। बाँस झारें बाँसे जनम रे बोका। तोर बाबाक रकम तोर बापो धरमिस्टि लोक रह–हलो आर तकर बेटा अइसन करलें कइसे काम चलतो ? तोर बापेक जीउ टा उड़इत रहतइ सेटा से कि तोर बेस हतो ?" इटा माहतोक उकित हलइ।

एगो दोसर लोक कहलइ – "एहे गुलाइ तो मानुस जिनगिक करमो लाइ हो .... काइल दिनें सोमर बापेक भोजें 'बृषोत्सर्ग' किरिया करल हल तबे ना आइज ओकर नाम होव–हइ। फइर एहे सब समइये तो मानुस के चिन्हल जाहइ।"

अघनु चुप–चाप मुड़ टा गाइड़ के सुन–हल आर सोंच–हल जे कि करब कि नाँइ? मेंतुक ओकर गोदी कोन्हो काम नाँइ कर–हलइ।

माहतों अघनुक बाते मुँहटा कइर के कहलइ – "साहोस धर रे अघनु ..... सब भगवान पार करब्थिन।" माहतोक संगे आरहो एक दू लोके हाँ से हाँ मिलवलथिन। "केकर जे कोनटा अँटकल हइ। खाली मन टा छोट नाँइ करेक चाही .....। अघनुक कथीं बा कमी हइ। बाबाँइ एते खेत कइर दइ राखल हइ .....।"

ई बात गुला सुनल बादें हामें अघनुक बाटे भाललों तो देखलो जे अघनु दोसर बाटे मुँह टा घुराइ के धोतिक खूँटटाँइ आँइख–धाइर टा पोंछ–हल। ओकर इ दसा देइख के हामर से नाँइ रहल गेल आर हाम ओगवाइ के कहलिअइ – "एकरा एते बोड़ बोझटा काहे जबरजस्ती लाइद देहक, जे टा ई पारत नाँइ ? ईटा तो अनिआइ लागइ।"

"के लागइ रे ? बाड़का नियाय–अनियाय देखाने वाला। ई गुलाक मरम तोंय कि जानबें। हामनिक एहे गुला करते–करते मुँड़ेक चुइल पाइक गेल आर काइल्हेक जनमल टाँइ हामरा बतवत जे कोनटा नियाय आर कोनटा अनियाय .....। एहो सँकरू ! आपन नतियाक तनी बुझाइ देहाक अटर–पटर नाँइ करतो ....।" खिसिआइ के माहतो कइह उठलइ।

हामका बाबा खुभे डाँटे लागल। ताउले एगो दोसर लोकें कइह उठल – "आइझ काल्हिक गिदरेक बुइध टा भरस्ट भेल जाइह।" आरहो कि–कि कहते रहला, हामें हुँवाले टसइक देलिअइ । घार अइते–अइते हामर देही टा घामे भिंज गेल। कुछ घरी बादें हामें सोचलो जे जाइके देखियोक अघनुक उसब कि करलथिन।

अघनुक कुल्ही ढुकल परें हामें अघनुक मायेक काँदनाक साड़ा सुने पइलों। काँइद–काँइद कह–हलइ – ''तोंय मोरलें नाँइ, बेटवा के मोराइ राखल्हीं राजा हो .... ।''

आर तनी आगु गेल हों आर अघनुक देखे पइलों। देखलों, बाँवा गोड़ेक हाँठूटाँइ हाथगुला दइके ओकर उपरें मुड़टा लाइद के बइसल हे, आर लोहाक छड़ टा हाँठूटा से भूँइ तक सटल हइ। आँइखेक लोर'टा, डोरा रकम ढरके लागल हइ। ओकर आढ़ाई बछरेक गिदरटा बाबु–बाबु कहइ के अघनुके खोट'क–हलइ।

हामर आर साहास नाँइ भेल जे जाइ के अघनु से राव करब। आर राव कइरके कि करतली ? सब तऽ भये गेल हलइ। हामें ओहे ठिन से भारी मन लइ के घार घूरलों। कुल्हीं जाइके देखलों दू–तीन गो गिदर गाल भार–हल्थिन। एगो गिदर – "एरे रोबिया। सुकुरबार दिनें समरा बाबाक भोज लागइ रे।"

दोसरका – ''हाँ–हाँ जानिये ..... कि भोज हतइ जाने हे ..... दाइल रोटी बुन्दिया । हामर बाप एगो पलास्टिक आइन देत ..... । ''

पहिलका – ''काहे ?''

दोसरका – ''काहे ! भोज खाइ ले नाँइ जिबइ। तोंय भोज खाइ ले नाँइ जिबें ?''

"जिबइ कइसें नाँइ।"

''तो बुन्दिया कथीं आनबें ? पलास्टिक नाँइ लेगलें।"

''हाँ रे ठीक कहे–हें । तबे हाम्हूँ बाप के पलास्टिक आने कहबइ।''

गीदर गुलाक बात सुइन के हामें घर घुइर चललों। घर आइके हाम खाटी टाँइ बइसलों आर पीठेक भोरें गिर गेलों.....। हामर गोदी (दिमाग) टाँइ एगो सवाल घुरे लागल – ''कि दाइल रोटी बुन्दिया खिवलें मोरल अघनु बापेक जीउटा सांति पइतइ ? कि ऊ एखनो बाँचले हे ? ई सरग टा कहाँ हइ ..... ?''

3

भोगनाथ ओहदार (डॉ० बी०एन० ओहदार)

सितम्बर 1952 ईस्वीं गाँव चेटर, डाकघर गोसा (रामगढ़), जिला – रामगढ़ में इनखर जनम। कोलेंजिया बेरे ले डाकदरी करेक बाट आनखाइ हुब। सइ हुबेक पोहाक सवादी फोर हे – 'आइडियल क्योर' । हाँ एहे नाम भोगनाथजी के डाकदर खानाक नाँव हइ। डाकदर खानवाँ रामगढ़–गोला सड़केक कोठार गाँवें हलइ। एखन ऊ डाकदरखाना कांकेबाइरे हइ। कोठारे खोरठा ढाँकी छेतर कमिटिक आफीस रहे आर खोरठा आफीसेक भोगनाथ जी सचिव हला। बरतमाने डॉ० ओहदार खोरठा साहित्य–संस्कृति परिषद के अध्यक्ष हथीं।

बिसेस – भोगनाथ जी मेडिकल एसोसियेसन के सदइसो लागथ। ऊ राँची विश्वविद्यालय के जन जातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में खोरठा भाषा के व्याख्याता हला आर ई दिन विनोबा भावे विश्वविद्यालये खोरठा पढ़व हथ। हिन्दी आर खोरठा भासाञ् इनखर शब्दचित्र, लेख, निबंध, कहनी पत्र–पतरिका में छइप बाहराइल हइ। राँची आकाशवाणी केन्द्र से इनखर खोरठा भासाञ कहनी बहुते बेर परसारितो भेल हइ। खोरठा साहितिक जगत के ई एगो नाँवजइजका कहानीकार लागथ। इनखर शिक्षा एम०ए० (खोरठा) तक हइन।

"सोंध माटिक टान" – ई कहनीयें मोटामोटी एहे देखवल गेल हइ कि गाँवेक पढ़ल–लिखल छउवा आपन जनम थान भुइलकें कि तरि सहरे डेरा माइड़ रहथ हथ। मुदा 'श्रम एवं समाज कल्याण' में डिग्रीधारी रवि आपन गाँवहीं रइह के गाँवक लोक के सेवा करेहे।

❑ *कहनी*

सोंध माटिक टान

भोगनाथ ओहदार

खुभे झलफल–झलफल पहर रबि आपन घर से सहर जाइ खातिर बरहइलक आर आपन आजी के गोड़ लागलक। तखन ओकर आयो काँदा–कुँदु हइ गेलिक आर कइह उठलिक – "जऊ बेटा निके सुखे रह, मेंतुक फइर घुइर आवे ले जो।"

रबिक आँइख छलछलाइ गेलइ आर एक मुँहड़ी डहरलक। सगरे डहर आयो के चलचलौती बेराक बतिया रबि के घुइर–घुइर इयाइद आवइत रहलइ जे – "फइर घुइर आवे ले जो ।" काले आयो अइसन लेपटउवाँ बात कहलिक भाइ। रबि सोंइच आवे सोंइच जाय मेंतुक जस के तस। ई बातक ज़रूर कोनों सकत मानें नुकाइल हे – रबि सोंचलक।

रबि के आयो एहेले अइसन लेपटउवा बात कहलिक जे ऊ बेचरंगी के घारें ओकर बुढ़ा के छोइड़ कोइ नाँइ रइह गेल हे। ई बुढ़ा–बुढ़िक तीन गो बेटा हत्थिन आर तीनों अड़ा–सड़ी बुइधगर। ई तीन ढाकिक जोत–वइया बुढ़ा–बुढ़ी मन भइर छउवा के पढ़–अइला।

बड़का बेटा डगदरी पास कइरके सहर जाइ माड़लक। मँइझला एगरीकल्चर विभागें नोकरी पावलक आब सुन ही सहरे में कुम्बा कुरिया कइर के जनिये–छउवे रहता।

छोटका जे रहे ओहो पढ़लक । "श्रम एवं समाज कल्याण" में एम०ए० कइर के सहरिये बाबु बनलक। आपन छौवा–पुता के पोटरले–पाटरले गेलक से गेले रहलक। माने एको गो के आरो बात को बंसाही एड़ी नी उलटलइन।

ई तरी आरो–आरो पढ़ल लिखल दू गो जोड़ा सहरे जाइ माड़ला। गाँव एकदमे सुनसान लागे हे। गाँवें एक दू गो बुढ़ा–बुढ़ी खोंइख–खोंइख रहथ। किछु पोढ़वइया छोंड़ो भेंटइतो तो अइसन बुझा हे जे ई गाँवे कोइ आदमियो नखे एकदमें।

जखन बड़का बेटा डागदरी पास कइर के आइल रहे तखन बुढ़ा–बुढ़ी पूछल्थिन आब तो तोंय घारें रहबे बेटा ? तखन बड़का बेटा आपन माँइ के कन्हुवाइ के देखलक आर गुरइर उठलक – "तोंय कि बोललें माँइ ? हाम एहे खातिर डागदरी पढ़ली जे ई उजरल–पजरल गाँवें रइह के आपन जिनगी सड़ावब।"

माँइ कहलिक – "तो आँय बेटा, कि हिंया बेमराहा नखथ ? हिंये तो तोर काम पसरल हो। ई तरी कहल जाइ कि बरेक बिहा तो बरेक माँइ पीपर बीछे गेली।"

एतना सुनते रबिक बाप फाटल बाँस तरी फटफटाइ उठलक – "तोर गोदिये नखो तो हम कि कहिहो। बताव तो के दिये पारतक हिंया हामर फीस। ओते–ओते महरंग दवाइ किने कोइ हिंया पारतक बोल तो ? सब तो लंगटा बुचा हिंया हथ।"

"आँय बेटा तो तोर फीस नाँइ दिये पारतक से तो मोरिये जाइत।"

"मोरत तो मोरूक, मोरवइया के केउ टेके पारल हइ ?" रबिक बाप बोललक आर सेहे साँझ जे गेलक से गेले रहलक।

एतना सुनते बुढ़ा–बुढ़ी हाइचक हइ गेला। "ई कोन पढ़ाइ हामर बेटा पढ़लक रे बाप। आर ससुर के देख नी, जकर संगे, जकर कोरा–काँखा में बाढ़लक, ओकरे लंगटा–बुचवा कह हइ। जेहे माटीधुरा में खेललक–कुदलक, जेहे गाँवेक अन खाइ के सवांग पावलक आर बुइधगर भेलक, ओहे गाँवेक गमक लागे लागलइ। बाह रे डागदर !" एहे तरी आर दुइयो बेटा गेला से गेले रहला।

रबि बड़काक बोड़ बेटा रह–हलक। ओहो बापे संगे रइह के एगरीकल्चर पढ़लक। ई बेरा आपन गाँव आइल। थोर दिन गाँवे रइह के सहर घुरल जा हलक। बेचारा के सुभाव बेस देइख के बुढ़ी अइसन बात कहलिक।

रबि सहर गेलक आर आपन आयो के भुलाइ गेल। एक राइत रबि के आयो सपने देखा देलिक। सपने देखलक जे ओकर आयो खुभे बीमार ही आर पुइछ रहलहिक, "तोहुँ नाँइ घुरबें बेटा आब ई गाँव ? तोर जरूरत हइ बेटा ई गाँव के।"

रबि के जान हदहदाइ लागलक आर राइत सगर नींद नाँइ भेलइ। होव बिहान, रबि आपन माँइ–बाप के कहल जे – "हाम आयो ठीन गाँव जाइ रहल–हियो, हुँवे जाइ के आपन घारे रइह के गाँवक सेवा–संच करब। हामर पढ़ाइयो तो अइसन हे। खेती–बारिक पढ़ाइ तो सहर में हामर कि काम हे। खेते तो हामर काम हे।"

एतना सुनते रबिक बाप फुफकाइ उठलक – "तोंय खेपाइ गेलें का रबि ? तोंय ऊ संडवाहा गाँवे जाइ के की करबें ? सड़बें आर कि ? चुपें–मटें नउकरी पकइड़ के रह।

की राखल हइ गाँवेक सेवा में ? ई सब ढकोसला होव बाबु।"

"तोंय तो ठीके कहले बाप, गाँव तो गलल–पचकल हइये हें, मगर तोहिन अइसन–अइसन बुइधगेरा तो ओहे गाँव में जनमल हा, मगर तोहिन गाँव खातिर तो तनिको नाँइ करलाइ तो गाँव कइसे ठीक–ठाक रहतक ? आब तो गाँवेक हालइत आरो बेंड़ाइल हे। जइसन सौ बछर पहिले रहे, ओइसन के ओइसने।" रबि जवाब देलक।

ओकर माँइ कहलिक – "तोर निसा लागल हो का रबि ? "

"हाँ माँइ ! हामरा सोंध माटिक निसा लागल हे। हाम मतुवाइ गेल हियो।

माँइ–बाप खिसाइ के कुट–पाट। कहलक – "तोंय जाइ के देखीं। अगर चाइरे दिने मोचा लरकावले नी घुरले तो कहियें। बोड़–बोड़ हाथी बोहाइ गेला, बोक कहे कते पानी !"

मेनेक रबि नाँइ मानलक ! आपन डिसना–बिछवना सोमइट–सामइट के चइल देलक।

ठीक फुलसुंदरी के बेरा रबि आपन आयो घार पोंहचल। ओकरा देइख के आयो के आँइख पेरमेक लोरें डबडबाइ गेलइ आर कहलइ – "बेरडुबिया अइलें बेटा। आब तो तोंय नी जाबें। का तरी कह–हथ जे बेरडुबिया मेहमान आर पानी झट के नाँइ जाहे....।"

घुइर दिन से रबि आपन गाँवे घुरेक सुरू कइर देलक। ओहे टुटल–फाटल घार–दुरा, हेंड़गे–ठेठंगे सिंघन चटवा छउआ। नाना बरन के बाढ़न–सोढ़न, खपरा–खपरी सब खोइरे–डहरें फेकल। कहवइया सब, करवइया कोइ नाइ। ओझा–सोखा के भरोसे जे बाँचलक से बाँचलक, नाँइ तो टिड़वाइल। वइसने डायन–भूत, ओइसने आँगुर–बीता खातिर काटा–काटी आर आग मुँहे गाइर। खेती बारी के तो कोनो कहले नी जाइ। गाँवेक पढ़वइया छोंड़ के खेती बारी गाँव गुड़ाम से कोन्हो मतलबे नाँइ। अजवाइर बइस के तास खेइलके दिन काटेक छाड़ा कोनो नाँइ।

एक दिन रबि देखलक जे एगो आदमी धान खेतक आरीं 'हूरूतूतू' फूंकले चल–हल। अरे बाबा ! ई का कइर रहल हें भाइ। ई कोन सोंख–मोज हेके – रबि सोंचल। हुरूतूतू बजवाक पूछलइ तो पता लागलइ जे, धाने रोग लागल हइ। सइले एकर रोगवा भाइग जितइ। सुइन के तो रबि हाइचक भइ गेल।

आर कते–कते से अंधविसवास देखलक। सेहे राइत रबि गाँवेक–लोक के समझावल आर बलोक आफिस से धानेक दवाइ मँगाइ धान खेंते दिअइलक। सब रोग पाप विलिमान हइ गेलक। देइख के गँवइया तो हाइचक भइ गेला।

एक बइर आधा रातीं रबि के नींद टुइट गेलइ। घार से बाहराइ के देखे हे तो कुचकुचिया आधार देखा हे। खुब धूर कंधी से खुब रस मातल गीतेक आवाज सुनलक। ओनवइत–ओनवइत रबि हुँआ गेलक तो देखे हे कि बोड़ पहान के डिंड़ा पुतहिया के चुइल छितराइल आर नींद मतुवा लेखे आँइख मंदाइल हइ।

थापइर पीट–पीट ओझवइन गाइ रहल हथ। आर कह–हथें, "भाग ! भागबें कि नाँइ? नाँइ तो एहे देखी।" आर बेल के लपलपावे लागलक।

रबि पहानाइन के पुछलक–"ई का हइ काकी ?"

पाहनाइन कहलथी – "ए बेटा, ई बड़की पुतहिया के भूत छूवल हइ। भूत सवार भेइ गेल हइ। तकर उपाइ कइर रहल हिअइ। राइत भइर आवर–बावर बकइते कहाँ के तो कहाँ के !"

रबि जाइ के ओकरा छुइ–छाइ के देखलक, ऊ बेचारी तो जोरेक मारीं बेहोंस रहिक आर सार ओझा सोखा ओकरा मोरावे पर लागल हथे। मोरेक दसा। पहनाइन के रबि समझावल जे – "काकी आब तो ओझा सोखा करबे–करलाइ, बिहान अनगुते एकरा डागदर ठिन लइ जा हामहूँ चलबो।"

हुँआ से घुरते–घुरते खूभ झलफल हइ गेल। बड़की नदिक पानी कलकल–कलकल करले बोहल जा हल। रबि सोचते रहल, आयो के से दिन के बतिया के एहे माने रहइ – जऊ मगर फइर घुइर के आवे ले जइसें। सचे हामर कतना जरूरत हे ई गाँव में, भाववेस में बड़की नदिक पनियां के उठाइ के रबि किरिया खालक – जब हाम ई गाँव के छोइड़ के नाँइ जाइब ठीक ओहे पहर किरिन फुइट गेलक। एकदम नावाँ किरन, रकत नियर सूरज लक–लक करले आर ऊपर उठे लागलक। रबि आपन घर मोहड़लक रबिक आँखी एगो चमक हल। जीतेक खुसिक चमक !!

❋❋❋

4

बंशीलाल 'बंशी'

जन्म – 11 मार्च 1954, जन्मस्थान – चौफान्दं, बोकारो इस्पात नगर, माँयेक नाम – बासनी देवी, बापेक नाम – मोतिलाल साहु, पढ़ा–लिखा – स्नातक, पत्रकारिता में डिप्लोमा।

खोरठा साहितिक आकासें 1984 ई0 में उठल एगो जगजगिया तरिंगन। एकर से हिन्दी कहानी, कविता, लेख, यात्रा, वृतांत लघुकथा हेन–तेन विधाञ देसेक कइ गो पत्र–पत्रिका में इनखर रचना छपल आइल हइन। खोरठा लोक कथा के संगिया संपादक आर बोकारो खोरठा कमिटिक प्रबंध सचिव रूपें आपन मातरीभासाक सेवा कइर रहल हथ। काव्य रूचि देइख जमशेदपुर काव्यलोक संस्था इनखर 'काव्यभूषण' के मानद उपाधि देल हइ। एखन बोकारो इस्पात कारखानाञ काम कइर रहल हथ।

इनखर 'चासा' कहनियें समाजेक बिसमताक ऊपर किसान आर जमींदारेक माँझेक भेदाभेद देखवल गेल हइ जे, कि रकम जमींदार सब आपन सवारथें समाजेक मंगरू जइसन लोकेक जमीं जइगा सब हड़प कइर लेलथिन। एतने नाँइ ओकरा नेसनाबुद करे खातिर कि कि नाँइ षड़यंत्र कर हथ। एकर फला फले सोसित, पीड़ित किसान मजदूर सोसन अतियाचार के खिलाफ करे खातिर एकजुट भई के संघरसेक डहर अखतियार कर हथ। जकर फलें सुमिताभोगी मालिकेक उपर कठिन मेहनइत करवइया कमियाँ सब बिजयी होव हथ।

❑ *कहनी*

चासा

बंशीलाल 'बंशी'

मंगरूक बीहा भेल दू बछर भइ गेल हलइ। ताओ एखन तक संभरे नाँइ पारल हल। बाप छोटही मोरइक चलते माँइ संगही मामु घरें रहहल। मेनेक, जखन माँइयों सिराइ गेलइ तखन बापेक माटिक इयाइद भेलइ आर आपन बापेक डीड़ा घुइर आइल। हियाँ भयादेक लफड़ा। जे घार दुवाइर रह–हलइ से–सब भयादें मँड़ियाइ लेल हल्थिन। बहुत पंच–पंचायतेक बाद मंगरूक बपउती डींड़ाई घार बनवेक जगह मिललइ। कन्हो रकम एगो छोट–मोट माटिक घार बनवल आर पोवाँर ढाका दइ रहे लागल।

घार तो बनाइ लेल, मेंतुक खाइत–पियत कि ? संइ खातिर कामेक टावान करे लागल। ओकर ई अबस्था देइख गाँवेक जमींदार ओकरा गोरखियाक काम देलइ। दिनें–दिन मंगरू गोरखिया से मुनिस भइ गेल। आब हुवें खाइ–पिये आर रहे लागला। एहे रकम मंगरू आब जमींदार घारेके भइ गेल। मंगरू जमींदारेक बहुत बिसवासी लोक भइ गेल। जमींदारो मंगरू के सब रकम खेयाल राखे लागलइ।

एक दिन जमींदार साहब मंगरूक कहलइ –"मंगरू तोर खेत तो बहुते हो, मेंतुक सब बेकार। जतनेक बिना टाँइड़ भइ गेल हो। तोर खेत पानी बोह–हो। काहे नाँइ

तोंय हामरा दइ देहें। बेकार परती पोरल हो। हामर हार, हामर गरू, हामर खरचा, सब करबइ। तोरहुँ कुइछ–कुइछ दइ देबो।" मंगरू जमींदार के बात माइन गेलक।

आब मंगरूक खेते जमींदारेक हार घुरे लागलइ। जते आबाइद होवइक सब जमींदार घारे रहइक। मंगरूको बाँटा टा। जमींदार कहलइ – "तोर जखनी दरकार होतो हामर घार से लइ जिबें।"

मंगरू जी जान से खेतें खटे लागल। मंगरूक सब चीजें आब जमींदारेक मोहर लाइग गेलइ। मंगरू को ऊपर। मंगरूक जिनगी आज अइसने चले लागलइ। एका जिउ खातिर कि भाभना।

मेनेक आब तो मंगरूक बीहा भेल दू बछर पार भइ गेल हइ। देखइत–देखइत परिवारो बाढ़े लागलइ। आब तो खनिहारो बाइढ़ गेल हत्थिन। जे काम मंगरू कर–हल ओकर से परिवार चलवा दाइ भइ गेलइ।

आब करत–तो कि करत ? एहे भाइभ–भाइभ बइसल हल। ओकरा मनझान देइखेक ओकर बहु करमी कहलइ – "सब दिन गोरखिया मुनिस खटइतै रहभे तो गिदर बुतरू कइसें पोसभे ? बापेक एतना जमीं रहइतें आइज हामनिक अइसन दासा। आपन खेतें काम कइर के अन ऊपजइबे आर जमींदारेक भाँड़ार भोरतइ। सब कुछ रहइथुँ हामनिक पास कुछु नखे। हियाँ तक कि हामनिक जिनगियो जमींदारेक बंधक। इटा देखियो के मने कुछ नाँइ बुझा हो। आपन से चास करेक मन नाँइ करो हो। आपन से चास करे गेल एक बछरेक आबाइदें हामनिक सब दुःख पुराइ जितल।"

मंगरूक आपन बहुक मत टा बेसे लागलइ। ऊ आपन मन बनाइ लेल कि ई बछर निजहीं चास करब। हार गरूक जोगाड़ कहुँ से ना कहुँ से करे हे पोरतइ। से नाँइ भेले आर काम नाँइ चलत।

एहे सब मनें थिर कइर के मंगरू आपन बहुक कहलइ – "तोरा भाभे नाँइ हतो। हम एखनी से इटाक उपर धेयान देबइ। तोंय एगो काम कर । काइल से हाम आरहों लोकेक संग हाजरी कामें जाइबइ। बिहान तनी चाँड़े उठाइ देबें।" ओकर बहुँइ साइ दह देली।

निरन मासेक दिन चाँड़ही बिहान भइ गेलइ। मंगरू चाँड़े चाँड़ तइयार भइ के आर हो कमियाक संग लाइग गेल। गोटे दिन हाजरी खटें आर साँझें घार घुइर आवे। एहें रकम काम धाम कइर मोटे रकमें कुछु टाकाक जोगाड़ कइर लेल। मेंतुक जतना जोगाड़ भेल हलइ सेटा से हार गरू हवा टा असंभव। जे रकम जिनिसेक दाम बाढ़ले जाइ रहल हइ से रकमें तो एकदमें नाँइ। आच्छा देखल जितइ। हार–गरूक तो जोगाड़ करे हे परतइ।

सँवइ देइख के मंगरूक बहुँ कहलइ –"सुना हो तोहें जिनगी भोइर जमींदार घारें काम करल हा। काहे नाँइ एखनी कइह राखा हाक नाँइ तो बादें झंझट हतो। तोहर कहल टा नाँइ उठइबथुन।" मंगरू मुँड़ टा हिलाइ के रइह गेल।

एतवार दिन–देइख के मंगरू भरखर दू पहरियाक सँवइ जमींदार घार बाठे गेल। जमींदार साहब के बेसे जोंखाइ पइलइ। कुल्हिक दुवारी नीम गाछेक जुड़ाँइ बड़का खाटीं जमींदार साहब बइसल हथ। आर हो दू चाइर गो लोक गप–सड़ाका कर हथ।

सकपकइले मंगरू जमींदारेक नझिक चइल गेल आर सेंप ढोइक सलाम कइर कहलइ – "तोहरे ठीन आइल हों मालिक आइज कई दिन से आवे खोजो हलो। एगो काम ....."

मंगरूक ताइक के जमींदार साहब कहल्थिन – "हाँ ..... हाँ .....कह कि काम हो ?"

मंगरू खखइस कहलइ – "हामरा तनी मदइत करे हतो। ई बछर हाम निजहीं चास करे खोजो ही। हामर जतना खेत हे सब तो तोहरे ठीन हो सइ ले हाम कहे खोज हिओ कि..... ।"

"आर तोरा कहे नाँइ हतो हाम बुइझ गेल हियो तोंय निजहीं चास करबें।" मुचकी हाँसी हाँइस के जमींदार साहब कहल्थिन। आरहो कहल्थिन – "देख मंगरू तोर ऊपर तो हामर बहुत हिसाब बाकी हे। तोंय जखन निजहीं चास करबें तखन तो हामरा मदइत करहे परतो। मेंतुक एक बात इयाइद कइर ले अघन महीनें सूदमूर सब लइ लेबो। सेटा बुइझ ले।"

हाँ हुमानी कइर मंगरू घार घुइर आइल। दुइयो बेगइत बहुत खुस भेला .....।

करमीं कहलइ – "जोदि सब ठीक ठाक भेलइ तब ई बछर बोड़ो मुनुक इसकुलें भोरती कराइ देबइ।"

बहुक बाते मंगरू बहुत खुसी भेल – "हाम तो जिनगी भोइर मुरूखे रहलों। गोरखिया–मुनिस खइट के जिनगी काटलों। जोदि कहसहुँ हामर बेटाक तनिको आखर गियान हतइ तो लोके काना तऽ नाँइ कहब्थिन .....।"

बिहिन बिचेक दिन अइलइ। लोक आपन–आपन खेते बिहिन पारे लागला। मंगरू एक दिन लोकेक हार गरू माँइग के आपन खेतें बिहिन छींट देलइ।

आब तो आर माँइग–चाँइग के काम नाँइ चलतइ। काम धंधाक दिनें मांगलें के देतइ ? एहे सब भाइभ के मंगरू आपन बहु करमिक कहलइ – "आब तो दिन नइजकाइ गेलइ। बोरटाँइड़ेक हाट जाइ के देखतलिअइ। जोदि पटवे पारतलों तउ गरू लइये आनतलों।"

"ठीक हइ बोरटाँइड़ेक हाट तो सुकुरबारें लागइ, सइदिन चइल जिभे" – बाँटल भातवा अगुवाइ के करमीं कहलइ। मत–साल्हा कइर के दूइयों बियारी पानी करला आर सुकुरबारेक आसराँइ सुइत गेला।

होव बिहान आर मंगरूक ससुर घार ले खभइर अइलइ जे ओकर सास आलाचार हइ। जोदि मुँह देखइक लागइ तो चाँइ–चाँड़ी आवथ।

ई खभइर जखन करमी सुनली तखन भोंकइर–भोंकइर काँदे लागली। ओकर काँदना सुइन आस–पासेक मेहरारू जमा भइ गेला। सोभिने एकेगो साल्हा देल्थिन – "आइझ तो नाँइ जाइ पारभे। झलफले बिहान्हीं उइठ के चइल जा। माँइ अइसन बात लाइ कम से कम जीअंते मुँहवा तो एकबइर देखतइ। फइर एके गो बेटिये हइ ओकरो तऽ आसरा हइ।"

ई सब बात सुइन के मंगरूक सोठिक भइ गेलइ जे बिहान्हीं सब के लइके ससुर घार जाहे परतइ। काँदा खिजा होवइत रहलइ। अइसने में राइत बीत गेलइ।

दोसर दिन झलफले मंगरू गिदर–बुतरूक लइके ससुर घार सोझाइ गेलक। पोंहचइत–पोंहचइत ओकर सासेक धुकधुकी टा सेस बाँचल हलइ। जइसहीं जाइके करमीं माँइ के मुँहें पानी देलइ तइसहीं बुढ़िक हचकी उइठ गेलइ।

बुढ़िक हेंचकी उठबाइ आर करमी डोंबाई लागली। ओकर काँदना सुइन बहुत मेहरारू जमा भइ गेला। सोभेक आँखी लोर छलछलाइ गेलइ। मेनेक काँदले कि हतइ। मोरइक तो एकदिन सोभे के हइ। करमिक कते बुझबथिन मेंतुक ओकर आँखिक लोर थाम्हइ नाँइ। अइसेने सँवइ बुढ़िक हेंचकी बंद भइ गेलइ। आब तो करमी खुभे काँदे लागली। गोटे गाँव गोहाइर भइ गेलइ जे करमिक माँइ मोरलइ .....। मंगरू आगु बाटेक भाइभ के गुडुम।

मंगरूक ससुर घारें बारह दिन तक बड़ी चहल–पहल रहलइ। बुढ़ी मोरी हलइ। दाइल रोटी, बुन्दिया भोज भेलइ। साँढ़–साढ़िनों छाड़ल गेलइ। तेरह दिनेक बरखिक बाद मंगरू आपन घर घुइर आइल।

घार घुरल मुदा मंगरू गुम–सुमें रहे लागल। ओकर मनें फिकिर भइ गेलइ जे आब गरू कइसें किनअइता। जेबा पूँजी रह–हलइ सब सासेक भोजें खालास। ताउ ले एगो आसे चापट मगरूक ऊपर–परलइ। बड़का छोंड़ाक पेटझरी भइ गेलइ। जे कुछ बाँचल–खुँचल हलइ सब झइर गेलइ।

आब तो मंगरूक हाँथ–गोड़ एकदमें बइस गेलइ। आर हार–गरूक बात कोन्हो नाँइ करइ। जहाँ बइसइ तहीं बइसले रहइ। मंगरूक ई दासा देइख के ओकर बहुँइ कहलइ– "एते हलदिल भेलें काम नाँइ चलतो। कुछ तो उपाइ करे हे परतइ।"

मंगरू गुमसुमें रहल। उपाइ करत तऽ कि ? आँखा हइ तो पाँखा नाँइ आर बुइध हइ तो भोरोसा नाँइ।

हिन्दे पानी बुँदिक दिन आइ गेलइ। किसान हार–गरू लइके खेतबाट सोझाइ लागला। मंगरूक छतिया साले लागलइ। मंगरू एकटक घारेक मुंधनाटाक भाइल रहल। अइसेन सँवइ ओकर बहुँइ कहलइ – "हुड़गुम भइके कि बइस रहल हो। बइसल रहलें हार–गरू हतो।"

राइग के मंगरू कहलइ – "तो कि करबइ ? हार–गरू कि मुँहवाइ हतो।"

मंगरूक ई बात सुइन के करमी चेंथरा लेपटल एगो गाँइठ आइनके मंगरूक देलिक आर कहलइ – "एकर में हामर बिहाक सब गहना हइ। जा चास जाइकें सब बेंइच देहाक आर काइल बोरटाँइड़ जाइके गरू लइ आना।"

करमिक कथा सुइन मंगरू छटपटाइ उठल आर कहलइ – "नाँइ–नाँइ तोर गहना बेंइच के हाम गरू नाँइ किनब। एकर से आर धिकारेंक, कि बात हतइ .... ? हाम कोन्हों महाजन से .....।"

करमी हकइंद के कहलइ – "अइसन कोन्हो बात नाँइ लाइ। जोदि जनी–मरद सुखे–दुखे काम नाँइ आवइ तो कखन काम आवइ। एतना गहना रहइतें हामनी महाजनेक मुँह काहे देखब। एकर से बेस गाहना बेइच काहे नाँइ देबइ। जखन पारत हवत तखन

गहना फइर किनाइ जितइ।" एतना कहइके करमी गाहनाक गाँइठटा मंगरूक धराइ देलइ। मंगरूक नजइर खुइज गेलइ। हुँवे से उठल से सोझे चास सोंझाइ गेल। चास जाइके .....।

* * *

जघन मइहनाक दिन। भरखर धान कटनी चले लागल हइ। मंगरूक खरिहान धानेक बिंड़ाइ भोइर गेलइ। दूइयो बेगइत खरिहाने मन लागाइ के काम करे लागला। वइसने सँवइ जमींदार साहबिक एगो लोक आइ के मंगरूक जमींदारेक हुकुम सुनवलइ – "तोरा जमींदार साहाब एखनी डाकल्थुन। कइ दिन से डाइक पठवहथुन आर तोंय सुनबे नाँइ करे हें। चाइर बीड़ा पोंआर कि डिगवल हे खरिहानें, बड़का चासा भइ गेल हें !"

"फुरसइते नाँइ भाइ। जमींदार साहाब के कइह दिहखिन काइल जाइ के भेंट करबइ। एखन तो मांड़ा देलहिअइ आर बेराउ लिहचिहाइ लागल हइ। चांड़े नाँइ उठवलें कि रकम जाइब ?" एतना कहइ के मंगरू आपन कामें लाइग पोरल।

करमी खरिहान बाइढ़ के धान पोंछइर–पोंछइर जमा करे लागली। ओकर बड़का छोड़ा आरहो गिदरेक संग कोरवनी झुरी जोइर के आइग ताप–हल।

डींग लागवल धानटा देखाइ के करमी मंगरूक कहलइ – "आब छोइड़ देहाक। जेटा रहतइ सेटा भिनसरे करे हतइ। एखन जेटा जमा भेल हइ सेटा चाला घार लेइग राखबइ आंधारो भइ रहल हइ। मंगरू गोछा चड़कवे छोइड़ देलइ।

दूइयो बेगइत खाँची धान भोइर के घार जाइ लागला आर जइते–जइते आपन बड़का छोंड़ाक कइह राखल्थिन नुनु तोंय हिंये रहबें हामनी एखनी घुइर आव हो। बेस से देखबे खरिहाने गरू नाँइ ढुके, नाँइ तो सब धानवा खाइ जितो। गिदरवाँइ मुड़वा हिलाइ के हाँ कइर देलइ आर आरहो दूगो कोरवनी झूरी अगिआइ दइके फूँके लागल।

मंगरू करमी धानेक खाँची मुँड़े उठवलथ आर घार सोझाइ गेलथ। खाँचिक धानटा घारेक कोना टाँइ उझइल के एकघरी परे जखन घुइर आवहथ तखन घुरे से देखहथ कि गोटे खरिहानें आइग लागल हइ। हादहादाइ के पोंवार आर धानेक चाकी पोड़े लागल हइ। गिराबजरा दुइयो गोहाइर देल खरिहान बाट दउड़े लागला। ताउ ले जमींदारेक लोकवा काँथुवा डेइग के चरपट के झाँप दइके पाराइ लागल।

एहे दौड़ा–दौड़ी मंगरू जमींदारेक लोक से बजर दइ देहइ। जइसही ओकरा देख–हइ तइसहीं मंगरू बुइझ जा हइ जे ई सब कारामात एकरे लागइ। मंगरू ओकरा रगइद के धरलइ।

हिंदे करमिक गोहाइर सुइन के गाँवेक बहुते लोक जमा भइ गेलथ। "आइग कइसें लागलइ ? ..... कइसें लागलइ" चाइरो बाट ले गोहाइर होवे लागलइ। ताउ ले मंगरू जमींदारेक लोकवाक धइर के सोभेक पास लइ आनलइ आर जुमल लोकवइन के देखाइ कहलइ – "ई सब कारामात एके लागइ, गाँवेक लोक देखा !"

जब ई खड़जंतर पता चललइ तखन सोब लोक ओकर उपर टुइट पोरला। आइग निंझवे छोइड़ के लोक "मारहाक ..... मारहाक" करे लागला। आपन जानेक खतरा देइख

लोकवाँइ कहलइ – "हामर कोन्हों दोस नाँइ बाबा ! हाम तो चाकर लागीं। जमींदार साहाबेक हुकुमें हाम .....।"

जमींदारेक नाम सुनबाइ आर लोकेक आँइख से आइग बाहराइ लागलइ। "चाला सोभिन जमींदारेक घार ....." चाइरो बाट ले आवाज उठे लागलइ।

"हाँ– हाँ चाला .....।" हुँवे से सब लोक जमींदारेक घार चइल गेला।

गोहाइर सुइन के जमींदार साहाब बहरइला आर कहल्थिन – "कथिक गोहाइर लगइ ?"

धरल लोकवाक देखाइ के सोभिन एक संगे कहल्थिन – "एकरे पुछ कथिक गोहाइर लागइ।"

जमींदार साहाब गरइज के कहलइ – "एकरा कि पुछबइ ई तो तोहनिक लोग लागो। हामरा खाली बदनाम करे खातिर तोहनी अइसन कहा हा ।"

एतना सुनबाइ आर सोभिन ओकर देइख के थुइक देला आर सामिलात निरनय लेला। जे –

"सुना भाइ ! देखइत–देखइत गाँवेक सब लोकेक जमी हड़इप के आइज ई जमींदार कहव हइ। सब लोक के बंधुवा मजदूर खटवहइ ताओ एकर साध नाँइ पुरलइ। जते किसान आर कमिया हिंया हा सोभिन किरिया खा जे – आब हामनी जते लोकेक खेत हड़इप लेल हइ केउ ओकर खेतें काम नाँइ करब। सोभिन आपन–आपन खेत आपन खातिर काम करब। जे काम करत ओहे ऊ खेतेक अन खाइत। जोदि सोभेक मत हो तो छोइड़ देहांक एकरा आर तइयार भइ जा .....।"

जते किसान कमिया हुँआ जुमल हला सोभिन तइयार भइ गेला आर किरिया खइला जे – "हामनी तब तक सोसन अतियाचार के बिरोध करते रहब जातक हामनिक आपन हेराइल अधिकार घुइर के नाँइ मिल जाइत।"

एतना सुनबाइ आर करमीं अगुवाइ आइके कहलइ – "ई अधिकार के लड़ाइ में हामनी जनी जाइतो पेछु नाँइ रहब। मरदेक संग दइ के सोसन अतियाचार के नास करे खातिर गाँवे–गाँवे जनी सब के जगवेक किरिया खा हों।"

एहे सब होवइत–होवइत ढेइरे आँधार भइ गेलइ। करमिक देइख के मंगरू कहलइ – "अच्छा भाइ हामर तो धानेक चाकी पोड़िये गेल। आब राइत तो बाढ़ल जाइ रहल हइ चाला काल्हिक खातिर तइयार होआ।"

मंगरूक बात सुइन एके एके सब सोझइला। सोभेक सेंसे मंगरू आपन बहु करमिक आर बोड़ छोड़ाक लइ के ढेइर घरी तक सोब के जाइते देखइत रहलइ। फइर बिहानेक आसें घरेक डहरें चले लागल .....।

* * *

घुइर बछर गाँवें केउ ककरो मुनिस नाँइ रइह के निजे चासा बनला आपन खेते आने हार धुर चलवे लागला।

5

अमर कुमार

जन्म – 1948, जनमठाँउ – गोलवारी खोरठा छेतरेक गाँउ – चंडीपुर, गिरिडीह

बाप–माएक नाम – ला०ना० झा आर कु०बा० देवी,

पेसा – बिजली मिसतिरी आर आपन "राहुल ग्रंथालय" के संचालन

रचना – गइद–पइद दुवो में। एगो गइद आर पइद 'संगरह तइयार' 'कारदोष' नाँवेक एगो बंगला नाटकेक उल्था। रचनवइन में मानबबादी बिचारेक आलो।

❑ *फिंगाठी लेख*

परपन सर्टिफिकेट

अमर कुमार

हामें मोंटें चउदऽ बछरेक फुंधी डेरका छउआ रह–हलों, जखन ऊ बड़का बिदियालइ (कॉलेज) में हामर नाम लिखइलक। गाँउ–देहाइतें मानुस भेल के चलते एकर आगु हामें सहर आर अइसन बोड़ बिदियालइ के मुँहो देखल नाँइ हलों। हामर दूगो ददा सब के हामर ले बछर–आठ दसेक आगुवे भरती भइ गेल हलइन ओहे कोलेजवें। आंर तखने हामनिक बापो आपन आँइखें देइख आइल हला ऊ कोलेजवा के। सइले हाम्हुँ ऊ कोलेजवाक रहे। पिंधेक आर पढ़े–पढ़वेक तारीबत के खूभे परउसाइँ कर–हलिअइ। सइए कोलेजवें नाम लिखाइक नाम सुइन के तो हामें फुइल के ढाक भइ गेल हलो।

जे सब हामनिक डीह–कुल्हीं बड़का बुजरूक बुझल जा हला, सेवो सभेक मुँहें ऊ कोलेजवाक दइके हामें ढेइर बोड़–बोड़ बात सुइन चुकल हलों। बड़का–बड़का डिगरी वाला बोड़ लोकेक गुँहलें, जेखिन हामरे जनम भुँइ के आस–पासेक रह–हलां – ओखिन के मुँह ले ऊ कालेजवाक डेमनी–डेमनी भइर बड़ाइ सुनल। सइए नाम जइजका कोलेजें हामरी भरती होवेक बात ! कइसें नाँइ कुरच–तलक हामर रोआँ–रोआँ।

माँइ कहतइल, "मुनू ! हामर बाप सुधा नाँइ पढ़ल हलक, तो हाम पढ़ाइ–लिखाइ के दइके तोराँ कि सल्हा देबउ। मेनेक कइगो मोटा–मोटी बात कह–हिअउ। कभुँ पंडित सबके आपमान नाँइ होवे दीहक ! लगस्तरे आदर–मान करिहन उसब को। बेस भाबें ओखनिक हुकुम मानभन ! कहु जाइक भेलें, कुछो करेक भेलें ओखनिक हुकुम पाइल बाधी करबें। कभुँ कोनो–किसिमें ओखनिक हुकुम ले कर काटेक कोनों काम नाँइ करिहें। नाँइ तो ओइसन करलें बड़ी पाप लागतउ। कुलें कलंक के टीका लाइग जीतइ – सुनल नखें।

"यह तन बिष की बेलरी
गुरू अमृत की खान,
शीश दिए जी गुरू मिले
तो भी सस्ता जान !"

तो ऊ कोलेजवें नाम लिखवे ले हामर संग सवाल–जबाब करल गेलक। गिदरालिए ले मगजें बोइज देल ओहे नेग–नियम पालेक दइके सवाल। आर एक दुगो जे–से सवालो। तो, ई गुलइन तो हामें बेसे भाबें जान–हलों। किले ना हामें सनातनी बुखरिक 'धरमें मति रखवइया' गीदर। आर मन–कान लगाइ के दोसरो–तेसर बतिअइन जाने–बुझेक चेठा राखबे कर–हलों। से–ले बड़ी सुभीस्ता आर बड़ी उसासे से पास कइर गेलों हामें दुवो किसिमेक परीक्छवइन। ढेइरे–ढेइरे नंबरो पइलों।

हामनिक समाजेक सनातनी लोकेक आँइख – खास कइरके हामर जनम भुँ एक–लागल हलइ हामरे बाटे बिना मिटिक मारल ! बाह रे गीदर–सबले सेरा नंबर आइन के आपन कुलेक माथा उँचकाइ देलइ।

एहे किसिमें ऊ सबले नाम–जइजका कोलेजवें नाम लिखवेले बाछाइ गेलक हामर नाम। आर सोझाइ लागलक हामर जिनगिक सगर गाड़ी एगो आन सगरठें। कि कहल्हे, ऊ कोलेजवाक नामो जाने खोज हा। नाँइ–नाँइ रहे देहक। ओकर नाम सुइन के कि करभे? के जान तोहें हामरो दइ के कोनो आन भाबें लागभे नाकि ? कहभे .....।

एक कान ले दू कान होते–होते सुनानी भइ गेलइ साराइ जे ऊ कोलेजवें नाम लिखवे ले हामें बाछाइ गेलेहों ! सइले हामर घर–डिंड़ाक आस–पासेक धरमी बुजरूक सब आर दोसरो–तेसर लोक सब बड़ी ची–ऽज–को–ऽड़आर दुलार से हामराँ बइसव तला। उसब कहतला – "नुनू, पइत लोक के सुख सांतिक परेहे दरकार। तो सुख–सांतिक से डहर के पाँजे आर पारिख करेके सनातनी सगरठ के सुझवेहे वाला हउ तोर ऊ कोलेजवा। मैनेक आइझेक परिएँ एगो बड़ी आइग टँगवा ढढ़नइच सुरू करल हथ लोकें। जकराँ कहथिन ओखिन 'समताबाद' ! अइसने बाद–फाद के हावा हामनिक परपन सासतरीय डहर के मइलछाइ दिए वाला हे। भाला पाँचो आँगुइर कि कभुँ बराबइर होवे पारे। से अइसन सरगमूता बाद–फाद से बाँइच के रहबें.....।

एतना सब रंग–चंगिया परउसाइ के बात–बाखन सुनते ओनउते अब हामर सोल–ऽ आना पतियार भइ गेल हल जे दुनियाइ के आगु बढ़ावेले अइसने–अइसने कोलेज आर बिस्व–विदियालइ साराइ बनवेक चाही।

* * *

अब हामें हामर से कोलेज के एगो नाम जइजका बिदियारथी। पढ़–हों आर पढ़–हों। लगस्तरे पढ़हों, आर ओखनिक मते आगु बाढ़ हों। बेसे बाढ़हों, सरसरइले बाढ़–हों ! दस बछर ले !

मेतुक आइजले हाम एतगे नाँइ जाने पाइल हों जे असल में सिक्छा ककराँ कहल जाहे। मानवता ककर कहल जाहे ? अइसन कोन जुइतगर उपाइ होवे पारे जे सभे आदमी के सिक्छा पावेक बतर मिलतइन। डरें–मरे कोन्हों गुरू के आब्छा–आब्छा पुछियो बइसलों तो जबाब कुछ दोसरे मिललक जे हामें बादे बाटे बाढ़े लागल हों।

हामर काम हलक छुछे पढ़ेक आर पढ़ेक ! रटेक आर खटेक ! गुरू आर गुरूबाबा के फरनवल आढ़ान के पुरवेक। आर रटरटउआँ तेर–ऽ बछर तक अइसने गोलाक गोड़इती करते–करते जीउ आनसाइ–अकबकाइ के आलाइ गेलक ! गोड़इती ? हाँ

गोड़इतिए तो ! जाहाँ खाली आढ़ाने–आढ़ान हे, सुधे फरमाइसे आर फाराम हे! बठेकान फरमाइस ! जकर ना आड़ा ना गोड़ा।

तो, सइ, बाबा सभेक बनवल कड़कड़िया आर आँट नियम कांदून (कोलेजवाक काइना–कांदून) संब के जीउ–मुँ–ऽ जाँइत के पालते गेलों, तो एक दिन बड़का बाबा (पिरिंसिपल) कहला – 'तोंय जो दिनवा खातिर आपन घाम गारले आइल हें, ऊ दिनवा अबे अवइया हइ। ऊ परपन सर्टिफिकेटवा अब तोराँ मिलेक चाही। मेनेक तकर आगु तनी बाकी–ढाकी, देना–थुना, दान–दइछना गुलइन दइ–धुइ के निंगराइ देहीं तबे तो !'

पिरिंसिपल साहेब के फरनवल मोताबिक दाएँ पइर के से सब जोहड़े परलक आर मिल गेलक ऊ परपन सर्टिफिकेट !

अबे हाम बइन गेलहों आपन इलाकाक सबले बड़का बुजरूक। सबले बेसी, सबले बीस पढ़ल–लिखल।

ऊ परपन सर्टिफिकेटवा आइझ तक हामर कोन्हों काम में नाँइ अइलक। एक दिन नाकें–मुँहे भेल तरी अवस्थें हाम एगो पुरना डिगरी वाला के खोइज पइलों। ओहे डिगरियाक परतापें ऊ कते कि–कि कमइला, कते नाम–जस, कते पइसा–परोसाइ पइला।

तो एकदिन हामें उनखे–से एते फरदुवाएक उपर अरजल ई परपन सर्टिफिकेटवाक की करल जीतइ। लोके तो कहबिन जे इरकम परपन सर्टिफिकेट पाइकें लोक नेहाल भइ जाथ।

हामर बात टा सुइनके ऊ अइसन भाभें हामर बाटें भालला जे रकम कि हामर ब्रोकानुक ऊपर उनखा अंजगुइत ताहाद लागे लागल हइन ! आर तबे कहला – कइ जान तोंय इस्पीसल गुरू दछिना विभागें सामिले नाँइ भेले। सइले तोराँ ई जिनीस टा नाँइ जनवल गेलउ जे ई सर्टिफिकेटवाक जोरें कइसें–कइसें बोड़–बोड़ धरमी, बोड़–बोड़ बिदुवान, बोड़–बोड़ हाकिम–हुकाम आर हियाँ तक कि बोड़–बोड़ ऑफीसर–मिनिस्टर तक के की रकम घमवे पारभन आर आपन मन मोताबिक काम कराइ लिए पारभन।

❋❋❋

6

महेश गोलवार

जनम 1 फरवरी, 1911 में हजारीबाग जिलाक गोला गाँवें। 1941 ई० में कोडरमा मिडिल इस्कुलें मास्टरी सुरू करला। 1943 ई० में बलरामपुर (पुरुलिया), तबें 1944 में रामगढ़ें पाँड़रा सरकारेक नउकरी धरला। सरकारी नउकरिक मइधीं 1945 में कलकत्ता आर फइर 1946 में 'एम्युनिशन' ओपिस, रामगढ़ आइ गेला। 1947 में गोला हाइ इस्कुलें आपन निंघरउती नउकरी।

गोलवारजी मूल रुपें कबि ललागथ। 1957 में 'दामोदर–उत्पत्ति–कथा' नाँवेक हिन्दी काइब परकासित भेल हइन। 'आदिबासी' पतरिका (राँची से) में तोहर बहुत रचना छपल हो। राँची आकासबानियो तोहर कबिता–कहनी परसारित कइर के धइन भेल हे।

हिन्दी आर खोरठाक नाँवजइजका कबि महेश गोलवार झारखंडी भासा–संस्कीसतिक एगो बोड़ बिदुवान हला। इनखर निधन 03 अगस्त 1996 साले भइ गेलइ।

'उड़ीस महातम' हाँसी आर फिंगठिक संगे एगो गियानेक रचना हइ।

❑ *फिंगाठी लेख*

उडोस महातम

महेश गोलवार

अइसन कोनो आदमी आर कोनो घर नखे, जेकर उड़ीस से पाला नाञ परल हे। आर जहाँ उड़ीस नखे। एकरे कुछ अजगुत करगुनी के बखान हियाँ करे जाहों।

उड़ीस हे तो छोटेकुन जीब मकीन रंग–रुप तो जरूरे होवेक चाही। उड़ीस होवे छउगोड़वा, चेपटा, दु सूँडवाला, काला बादमी रंग लइ के छोटे–मोटे लंका टापू कर आकार के। एकर डेरा खटिया, मचिया, पलंग, बेंच, कुरसी, केंवार, चउखट, भीतक कोना, हुल हेने–तेने लुकाइल रहे हे। कलकत्ता, बम्बइ, मद्रास, दिल्ली, ढाका, कटक, राँची, कराँची, रातू, पतरातू, जबलपुर, नागपुर, चुनार, कोनार, रोला, गोला, पानागढ़, रामगढ़ चाहे सहर रहे बा गाँव, कोन्हो अइसन जघ–नखे जहाँ एकर बथान नाञ हइ। सहर–गाँवके बात तो दूर ई बाबू मइखाना, मोसाफिरखाना, गुसलखाना, बाबरचीखाना, चिड़ियाखाना, जेलखाना आर कते कहब पैखाना में हुँ हाजिर रहे हे।

एकर सुभावो अइसन हे कि आलो देइख के तो पाराइ लागे हे, मेनेक घोर अँधरिया देइख के मैदान में जुइट जाहे। रक्तबीज के धिया–पुता आर तामस परकिरती के ई जीव राणा हमीर लेखें बड़ा हठी होवे हें। एकर दाँत नखे से ले 'विरद' कहावे हे। मुदा एकर दोसर–दोसर नामो हइ–खटमल, मक्तुण, शय्याकीट, छार, बग हेन–तेन। ई जीव दिन भइर आपने आपन आड्डाञ लुकइले रहे। तनिको हल्ला–गुल्ला नाञ। जइसन 'करफु' लागल रहला से आदमी साड़ा माइर के घरे भीतर चुपचाप बइस रहे हे, तइसने। मेनेक सुरूज डुबलक कि मोरचा पर डइट के राइत भइर आदमी से जुझे के तइयारी करे लागल।

गोरिल्ला जुइध करे में ई सब तो बड़ा तेज हव हथ। शिवाजी मराठा सैनिक तरी कट्ट से काइट के खटियाक पउवा में दबइर जा हथ। राइत भइर तोहरा एतना तंग करतौ जे खटिया छोड़ल्हीं सुबधान पइभे। हिंदे ओकर अछल–गदल। तोहर तो खाटी आपन आर तोहें भुइयें घोलटा आर ऊ भइर पेट बियारी खाइके खाटी के दखल कइर मउज करतो।

अरे भाई, हामिन तो मामुली आदमी ही। तैमुर, चंगेज, दुरीनी, सिकंदर, गोरी, गजनी, अंग्रेज सब केरो बाप, बाबर, अकबर, शेरशाह तक, ककरो नाञ छोड़ल हे। सबके काइट–काइट के असथिर कइर देले होतक। एकर सिरिफ इयाद से बड़का–बड़का शुर वीर जोधा के दिल काँपइत रह–हे। जदि ई हिटलर हके तो एकर संगी मखरी मुसोलिनी। जे तरि गुलीवर के बउना सब छेकल हलथी से हे तरि उड़ीस आपन छउवा चेंगइर संग सुतल आदमी के धइर सँतवे लाग–हथ। ई अइसन परजरंत जीव हके जे खाइ–पीये जुकुर बिनठाइल भातें गिर के बेड़ाइ देहे। लुगा–फाटा में एकर लहुक दाग देइख पुलिस बेकसुरो के कसुरवार माइन हथकड़ी लगाइ दे हथ।

ई चालाको तो कम नाञ हे। जखन आपन ऊपर खतरा पहुँचल जाइन लेहे तखन खाटी ले हेंठ ओहे तरि झाँप दे हइ जे तरि हवाइ जहाज ले सैनिक बिपइत के सँवयें छतरी लइ धरतीं झाँप दइ दे हथिन। जे आदमी के ऊपर ई किरपा करेहे ओकोर लहु पानी कइर देहे।

ई एक नंमर (नंबर) के भेदियाउ (जासुस) हके। आदमी के लुगा–लतरें ढुइक के गोटे देहेक तलासी लेना एकर लेंगा हाथेक खेल हइ। भीतर महले भीतें सइट के जनी–मरद के पेस गबती बातचीतो ई सुनते रहे हे। एहे से तो कहल जाहे 'देवालो के कान होवे हे।' जे कानो सवारी से सगरे दुनिआइ सइर–सपाटा बिना पासपोर्ट, बिना भाड़ा के कइर लेहे। एकर सीट आगुवे रिजर्व रहे हे। अइसन तो ई हे तकदीर वाला।

मुदा हामिन के जानेक चाही कि नोकसान के संगे कुछ हामिन के फइदाओ पहुँचावे हे। जेरंग किसान, गिरहस्थ के राइत–राइत भइर जगाइ राखे हे। ई ओजह से चोरी, सेंधमारी के कोनो डर नाञ रहे–हे। पढुवा छउवा सब के खातिर तो बड़ा उपगारी जीब हके। जखन छउवा पढ़ते–पढ़ते झुपे लाग–हथ, तखने कलें–कलें 'खट'।

आर छउवा सुतत ! सुगा तरि पाठ रटेक सुरू कइर दे हथ। माञ–बाप बा गुरूजी छउवा सबके ओतना धेयान नाञ देवे पार–हथ जतना उड़ीस। पढुवा–छउवा के ई तरि मेहनइत कराइके काबिल बनावे बाला कोई जीब हे, तो ऊ हे उड़ीस।

जे काम फौजी जोद्धा से नाञ होइ सके हे सक काम चुटकी बजइते ई कइर दिये पारे। पुछबा कइसे ? कमजोर पछ जोदि कोन्हों तरि एक डेमनी नियर उड़ीस जमा कइर के दुसमन के फौजी आड्डा के ऊपर दे गिराइ, कि हालइत बलगर सब के होतइ से तो जाने पारा। जखन नींदेक निसें मातल सिपाही सुइत रहथ। तो राइत भइरीं ऊ सब के गातेक लोहू साफ।

सोचला पर तो बड़ बात हके कि आजुक जुगें आरथिक समइसा, बेकारी, महंगी बोड़ परिबार आर कम आमद बाला आदमी खातिर जनमरवा साबुत होइ रहल हे। सभे

चाह–हथ कम खरच, जेकर से कुलाइ के चलवे पारता मुदा हामिन तो समाज के आदमी हकी। चाइर गो से जोर–नार, दुगो से दोसती, दसगो से जान–पहचान फइर तकर आवा–जावा लागल रहे हे। एकर से बाइच के रहा मसकिले बात हके। ककरो कइसें कहल जाइ बा मना करल जाइ कि हामर घर नाञ आवा। अइसन संकटें उड़ीसे हामिन के मदइत कइर सके हे। पहुँचल पहुना के उड़ीस वाला खाटीं दे सुताइ। फइर देखा एक राइत तो कोन्हो तरि दोसर दिन पहुना उड़ीसेक डरें फक पार। फइर कोइ पुता जे ऊ घर बाटे हुलकहुँ के बिचार आनत से तो ढेइर दुरेक बात।

मेनेक एगो बात कर मने खुटखुटी रइह जाहे कि गाँधी जी के उड़ीस तो जरूरे कहियो काटले होतक। फइर ऊ हिंसा से भिनु कैसे रहला। ई बात तो उनखरे से पुइछ सका हा। तब ई अनुमान करल जाइ कि गाँधी जी उड़ीस के दाँत सहइते–सहइते अपने के उड़ीस प्रुफ बनाइ लेले होता। तइसने फइर बिनोबा जो आपन लहुक छठवाँ भाग उड़ीस के चूसे देवल पारें उनखर मने ई बात जरूरे जागल होतक कि गरीब जनता के बाँचे खातिर आदमी के आपन जमीन के छठवाँ भाग कर मलिकाना हक छोइड़ देना जुनजुनात दरकार हे।

❋❋❋

7

शिवनाथ प्रमाणिक

जनम – 1950 में बोकारो इस्पात नगरेक धारी बैदमारा गांवें एगो साधारन चासा घारें प्रामाणिकजी के जनम। माँएक नाँव तिनकी आर बापेक नाँव मुरलीधर। अभाबेक द्राएँ 1968 में बोकारो कइरखानाञ नउकरी। नउकरिक मइध्रीं एम०ए० 'पत्रकारिता' आर लेबर ओपीसरेक डिगरी। साहित्यिक सेवा खातिर चतरा बाट ले 'परिवर्तन' विशेष पुरस्कार' आर जमसेदपुर बाट ले 'काव्यभूषण' के उपाधि।

प्रमाणिकजी मूल रूपें एगो कबि लागथ। तोहर हिन्दी आर खोरठा कबिता, गीत कबि–सम्मेलने आर राँची आकासबानी से गुँइज रहल हो। एखन तोहें माय (नारी) माटी (जन्मभूमि) मातरीभासा (खोरठा) आर मानुसेक सेवाञ राइत–दिन लागल हा। तोहे खोरठा कबिता संगरह 'रूसल पुटुस' के संपादक आर कइगो किताबेक संगिया संपादक लाघे।

प्रामाणिकजीक खोरठा खंड–काइब 'दामुदरेक कोराञ' छइप चुकल हइन आर 'तातल आर हेमाल' पाहांर कोचाक लुआठी' (काइब) 'भाव और भंगिमाएँ (हिन्दी काइब) छपेवाला हइन।

ई निबंधे खोरठाक सरगताइल रूप के बखान करल गेल हइ।

❑ *लेख*

खोरठा एगो 'स्वतंत्र-समृद्ध' भासा

शिवनाथ प्रमाणिक

आइज ले पच्चीस बछर आगु खोरठा एगो बोली रह–हलइ, मुदा मेहन–गोंदर मिल–मिस के भाखा बिगियानी एकराँ एगो भासा के रूप दइके डड़वल्थिन। आइज खोरठा सुधे डँड़इले नखी मल्किन बड़ी छेंवाइदें–फेंचांगेक पचरी डेग के दोरे लागल ही। खोरठा भासा के छेतरफल मोटा–मोटी एकतीस हजार वर्ग किलोमीटर हइ आर मोटामोटी एक करोड़ लोक सब के आपन मातरीभासा ई हखी। निजेक माँय रूपें खोरठा एखन आपन दुधेक धार पियाइकें सब छउवा चेंगइर के पोइस रहली। अब हामिन के बिचार करे हतइ कि खोरठा भासाक आपन बा निजेक 'अस्तित्व' हइ ? देखल जाक एकर तनी आड़ा–गोड़ा।

जखन खोरठा बोली आर भाखाक गोड़ा तक चिन्हा मुँदा के टावान करही तो हामिन पावही परकिरितिक रंग–चंगिया आयाँ छटा। बुइधलक भाखा बिगयानी सब तो बिचार करबे कर–हथिन मुदा हामर आपन बिचारे एहे हे कि खोरठा बोलिक जनम दिये वाली आयाँ आर निरठ परकिरती। किले ना कि दु–चाइर गो पटतइर गुलइन नजइर गाब्वाई देखलें पता मिल जाइत। परकिरतिक दुत भेला – जोरिया–नदी, पहार–परबत, झार–बोन, पसु–पंइखी आर फइर रितु बा मउसमेक मतें रउद, हवा, पानी आँधी, झइर, बदरी, मलका–मलकी, ठेरठेरी, माटी, आकास आरो कते–कते। अब देखल जाक ई 'दुत बा' घटना गुलइन से हमर बोली के लेताइर कि हे। जखन बदरी ठेरठेराहे तो सबद पाव–ही डेरडेरान – ठेर–ठेर ऽ ऽ ऽ.....

तो ई सबद के फुनगी फुटल। ई बदरिक ठेर–ठेरी एक खन खातिर इंजोर बा नलइक जाहे तो 'मलइक' सबद के जनम होवे हे। सेले हामिन ऊ छँउड़ी 'मलइक ुल–ही' बा 'माछ मलके हे' परजोग कर ही। झइरेक पानी बुँद–बुँद झारेक पाते गिरलें टप–टप बा रप–रप सबद फुटेहे से ले 'टुपटपा हे' बा 'रपरपा हे' सबद के जनम भेल। ो तरू गाछ से झाँप देले 'झरपट', केंवार लगवलें 'हड़ास', बोनेक पात हिले बा कांपे गेले सर–सर' बा 'लुहु–लुहु', चेरँइ–चुनगुन गगइलें गुर्रगुर, साँढ़ेक बोली ले 'हंकदे हे', हुँड़ार ने 'हुँड़रहें हे'। ई तरू अनठेकान सबद हे जे आयाँ खोरठा हे। ई सबदवइन संस्कृत ले ुभुँ हामिन पइँचल बा छीनल नाञ ही। तनी आर पटतइर देखल जाक –

इंगा – डोंडा, मुंधाइन, सुंइध, लटलटी, पिंधना, पंगबल, ढेऊ, फेऊ, रंफ, मेरखु, कुल्ही, घेरा, आर गरू गाड़िक साना–फाना, घर डींडाक, बसुत गुलइन, आपन देहेक साना–फाना गुलइन, नापा, जोख के दोसना, खुंड़ी ढाको बा ढेपड ढेंगुर बिता, पुरसा .....।

र्वनाम – अउरी–पाथारी, कटि, तनी, गुलइन, आरो कते।

सेसन – लारू–पातु, रंगचंगिया, चनफन, छटपटिया, लुइरगर, बुइधलग, गांजल, चेपतल, संइतल, निमन, गुमन, लगहर, पेसगबती, भेदकल, चोखाइल, निफुट, हदकल, पेंचटल, गुलमुठाइल आर सबदवइन से भंडार भोरल हे।

क्या – गुइल करा, अलगा करा, आम्हा लागा, इंड़का, पिदका, गादा, टावान, पयान करा, दहँजा, हुँडरा, आरो कते।

करिया–बिसेसन – लुसुक–लुसुक, करमें–करमें, रसें–रसें, गरगराइल, मनमनाइल, इंड़कल, हंकदल, हेन–तेन।

व्यय – जेनियर, तेतरू, सेले, मइधें, खातिर, हेन–तेन।

गो पुरना–परियाक गीत है –

एह डींडा ओह डींडा,
चला पोखइर पींडा।
आइन देबो चिटा–माटी,
लेइस देबो पींडा।।

ई गीत टा बंदर खेलवा बिरहोर के हके। तनी भाइभ कें देखल जाक बिरहोर जाइत ा द्राविड़ परिवार के हे आर भारत के 'प्राचीन' जाइत जखन आइज सब हमर मुलुक नाञ लल हला तो बोली–भाखा टाओ तो पुरना हवे पारे। ई गीतें ठेठ खोरठा के परजोग हे ार अर्थालंकार के पटतइर हे। ई ले हामिन ढाँक बजाइकें कहे पारि कि खोरठा एगो वतंत्र भासा हे। भले आइज आइज परिवार के भासवइन संग मिल–मिस तनी भेस्ताइ गेल । जे तरू निष्ठा से निस्टे, बाड़ी ले बारी, पर्व–त्योहार ले परब–तिहार, खोजना ले ोजाइर, पुछना ले पुछाइर, ब्रह्मा लैं बाम्हन एहे तरू स्टेशन ले टीसन, आफीस ले ापीस, टिकट ले टिकिट अइसेन। आरो एगो बड़ बात कुरचेक हे कि हामिन कहे पारी क हामिन के खोरठा ले आनभसवइन पँइचा लेल हथ, जेरंग मुंधाइन ले मुंडेरा, सुंइध ले न्धान बा अनुसंधान। आर खोरठाक ठेठ सबद हिन्दीओं में परजोग भइ रहल हे जे तरू ारू–पातु, तीतकी, लुवाठी, तितकी, लुवाठी, ढेऊ, रंफ, बिहान, गराज, दहंजा, टउवा, ालगा, करा आरो कते–कते।

ई पाठेक दोसरा खंडे हामिन के कुरकेक हे कि खोरठा एगो समृद्ध भासा हे।

भासा बिगियानी ए०के० झा क मतें – "खोरठा के जइर–बुदा 'खरोष्ठी' बहुत पुरना हे, 'संस्कृत' ले हो बेसी। एकर सबद भांड़ार, ढेइरे तलिआइल आर मोटाइल हे। भाभ फुरछेवेक खेमता (व्यंजन क्षमता) ढेइर डंटगर"। आवा कुछ परजोग देंखल जाक।

जेनियर एंहे लेख टाँञ ऊपर उखरल गेल हइ एगो बांदर खेलवाक गीत, जकर में 'पींड़ा' सबद के दु बइर परजोग भेल हे। पाहिल पाइतेक पींडाक अरथ होवे 'आइर' आर दोसर हेंठेक पाँइतेक सबद के मानें भेलइ 'बइसेक जोगान'। भाभ फुरछवेक कतना चनफनिया पटतइर हे। तइसने फेर

जे करिलेक काँड़–धनुक, से करिलेक कमल।
कइर–काइट गेल करी–कलम करहीं अइलें बल्लम।
"दामुदरेक कोराञ"

अनुप्रास देखल परें ई पांइते देखा।

आर फेर – *ऊ कि चिन्हत हमरा*
जकर आंखी चील–गीध लकरा – "पानुरी"

एतना तलिआइल 'लक्षणा' के पटतइर साइत कहुँ हइ। तकर परें घरें–घाटें कुल्ही–डाडीं मेहुँ जे निपट–काना जइसन लोकवइनें बइजक हथ 'डँडउ तो !' हियाँ डँडउ तो माने 'डाँड़ाइ' नाञ कह–हइ बलुक एक लोक दोसर के धीरव–हइ बा आपन खेमता टा ओकराँ ओजोन करे कह–हइ। एक सबद के ढेइर अरथ 'सबदवइन के खोरठा तो आर चेपतल–संइतल जे तरू –

सोंटा – पइना, मारवा, पानी, तारा, मालिस करा
झोरा – हिलवा, झुरें–पातें खोजा, धान गरू गाड़िक एक जोगान
चेला – चिलकी, फाइट के, टुकरा, शिष्य

तइसन बाइक परजोगें पर्यायवाची पानी बइरसा – टिपटिपा, फुसरीकाटा, सुता काटा, फुही काटा, झिमझिमा, अगरीभींजा, अंइगना, निपवा, सुप उझला, हाड़पा आर कते।

छंद–बिचारेक मइधें एगो गीतेक पटतइर –

बइगन बारिक भीतरें – 13 मातरा
ककर छउवा कांदे – 13 मातरा
ओं छउवा दुधु देबउ – 13 मातरा
पिठें आ कोरें लेबउ – 13 मातरा

आर आइने फइर रस अलंकार, छंद, पटतइर से भोरल–पुरल खोरठा भासा हे। "खोरठा भासा मुलायम, धनी और ताजगी एवं जीवन–शक्ति से भरी हुइ नदी के समान है जो प्राचीन संस्कृत भाषा से बिल्कुल ही अलग है।"

डॉ० चर्तुभुज

से ले हामिन कइह सक–ही कि खोरठा एगो स्वतंत्र आर समृद्ध भासा।

❋❋❋

8

शांति भारत

6 अप्रैल 1965 में बोकरो इस्पात नगरेक धारी चौफान्द गाँवें जनमल शांति भारत के माँयेक नाँव रतनी आर बापेक नाँव कुँजू महतो। बिदियारथी जिनगी सेही हिन्दी आर खोरठा में कबिता लिखेक रूचि। तोहर हिन्दी लेख कइगो 'पत्र–पत्रिका' में छपल आइल हो। राँचीक 'आदिबासी' पतरिका में तोहर कइगो खोरठा कबिता परकासित भेल हो।

भारतजी एखन हिन्दी आर खोरठा में कबिता, कहनी, नाटक, लेख संस्मरन आर मानवबादी बिचारेक किताप लिख रहल हथ। 'जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग' राँची के कइगो कितापेक सल्हाकार लागथ। तोहर कबिता आर बारता आकासबानी राँची से परसारित हवइते रहल हो। सामाजिक आर सांस्कीरतिक कामें तोहर बड़ी मधुर सहजोग। एखन तोहे बोकारो नोकरी करइत मातरीभासाक सेवा कराहा।

हियाँ खोरठा भासाक महान कबि श्रीनिवास पानुरी–क ऊपर लिखल तोहर संस्मरन दिअल गेल हइ।

संस्मरण

बोरवाअड्डाक अखय बोर

शांति भारत

खोरठा में कुछे दिन आगु से लिखेक सुरू करल हलों। मेंतुक, अवइया दिनेक कोन्हों सफा–सुथर आसा मने नाँइ हल। ताउ, मनेक संतोस खातिर बेसी भाभें कबिते लिखतलीं। कखनो आकासबानी राँची बाट ले खोरठाक लोकगीत सुइनके मन गदगदाइ उठ–हल। मनेक मइधें मधुर बिचार उठतल, जे खोरठाको मान हइ। एतनाक बादो एखन तक खोरठाक कोन्हों कबि बा लेखक से परिचइ नाँइ भेल हल। सइये ओसर, टावान–ठेकान करल खोरठा भासाक बिदुंवान ए०के० झा बोकारो अइला। उनखर से पता चलल जे राँची बिस्वबिदियालयें खोरठाक पढ़ायो चइल रहल हइ। तोहर बात सुइनके मने बड़ी खुसी भेल। खोरठाक परति मने जे एगो मइलछाइल रूप हल सेटा धोवाइ गेल। एगो लिखइया खातिर एकर से आर गरबेक बात भला कि हवे पारे जे ओकर मातरीभासाक सम्मान कम नखइ।

झाजीक संपरके आइकें खोरठा में साहित्य लिखेक एगो लउतन हुइब जागल। मनेक भाव आर बिचार कबिता आर कहनी रूपें फुटे लागल। एहे लेताइरें खोरठाक सबले पुरना पतरिका 'तितकी' के माइधमें कइगो लिखवइयाक नाँव–गाँव जाने पइलों, जे सोंब भासा परेमें मोहित भइकें खोरठाक सेवा कर–हला। तकरें मइधें एगो हला श्रीनिवास पानुरी,

जे बीस–तीस बछर आगुवे ले मातरीभासा खोरठाक बिकास खातिर समरपन भावें साहित्य लिख हला। से सँवएक नाँवजइजका मानबबादी बिदुवान राहुल सांस्कृत्यायनेक संगे खोरठाक बिकासेक लेताइरें पानुरीजीक कइ बेर चिठी तो 'तितकी' पतरिकें छपाइलो हइ जकर में राहुल सांस्कृत्यान आपन संदेसें खोरठाक मधुर भभिसतेक कामना करल हथिन

आब तो मने एगो बिचार हिलोर मारे लागल जे श्रीनिवास पानुरी से कधिया आर कइसें मिलब ? मेंतुक, कुछे दिने एगो बेस मउका अइलइ। शिवनाथ प्रमाणिकेक संपादने 'रूसल पुटुस' नाँवेक एगो पइद–संगरह छपवेक बिचार उठलइ आर 1985 के दिसम्बर मासेक एकदिन प्रमाणिक जी आर बंशीजीक संगे पांडुलिपि लइकें हाम्हुँ बोरवाआड्डा पोंहचलों। एगो दोकाने पुइछकें हामिन पानुरीजीक घार तक गेली। उनखर बेटा के आपन परिचइ देलिए तो ऊ बइसेक जोगाड़ दइके कहला – "तोहनी बइसा, हाम बाबुजी के डाइक देहियो।"

हामिन बइसली । मने कते रकम बिचार उठे लागल आर छाती धड़के लागल एगो महान कबिक दरसन करेक हुइबें। आर तनिए देरी में साइठ–पँइसठ बछरेक एगो बुजरूक लोक घार भीतर बाट ले बाहराइल। मुँड़े काँचा आर पाकल चुइल्हेक मेसर। आँखी चसमा टेंहना तक धोती। गातें गंजी आर तकर ऊपर एगो गामछा। माने खोरठा–कबि श्रीनिवास पानुरी।

हामिन तीनो झने उनखरा जोहाइर करलिअन। वइसने जबाबो पइली। हामनिके धारीं पानुरीजी बइसला। बातें–बातें एक–दोसर के परिचइ भेल। पानुरीजी आवइक ओजह पुछला तो कहलिए जे तोहर दरसन करे आइल ही। सइ सँवएक उनखर कहल बात एखनो मने आवेहे – "तोहनियो खोरठा साहितेक सेवा कराहा, इटा जाइनक बड़ी बेस लागल। हाम तो आपन जिनगी खोरठा भासा खातिर समरपित कइर देलहिए। हामर रोपल खोरठाक, पोहाके जेइसें आपन कलम–करीं पाटाइके गाछ बनइहाक, एहटाइ हामर निबेदन।"

हामर मन, भावें भोइर गेल। सोंचलिए जे एते दिन खोरठा भासाक सेवा करलो बादे पानुरीजीक लउतन परिया से कते आसा हइन। आइझ–काइल तो दूगो कबिता लिखले परें लोक आपंन के महाकबि से कम नाँइ बुझथ्र। आर हियाँ बीस–तीस बछर खोरठा साहित्य लिखलो बाद पानुरीजीक कोन्हों गरब नाँइ हइन।

करमें–करमें बातचीत आगु बाढ़ल। चा–पानी भेलइ। बोर गाछेक जुड़े बइसके खोरठा साहितेक सागरें हामिन उबु–डुबु हवे लागलीं। कुछ सिखे खातिर आर कुछ जाने खातिर। हामराँ बुझाइल अइसें तीस बछरेक खोरठाक अतीत आइझ मानुस रूपे हामनिक नजीकें परगट भेल हइ। 'कबिजी' के नाँवें परसिध पानुरीजी से पुछलिए – "कबिजी तोहे कते दिन से खोरठाक साहित्य लिखाहा ?"

तोहें ऊपर बाटें ताइककें कहल्हे – "देखो, हाम तो खोरठा में तखने से साहित्य लिखहों, जखन ई गुला केउ सोंचलो नाँइ हल। खोरठाक कबिता लिखकें जखन ककरो सुनउतलिए तो ऊ हामराँ एगो पागल लोक बुझतल। माने, देसेक आजादिक आगुवे ले हामर कलम चल–हल।"

हामिन एक दोसर के मुँह ताके लागली। तकर बाद पानुरीजी घार भीतर गेला आर आपने डायरी आइनकें आपन कुछ कबिता सुनवें लागला। कुछ में धरमेक गाथा तो कुछ में मजदूर–किसानेक जिनगिक दुख–दरद। कबिताक कुछ लाइन एखनो हामर मने हे। मेंतुक, ऊ गुला लिखलें रचनाक बिसइ बदइल जाइत। मोटामोटी, पानुरीजी धरमेक गाथा के कबिता रूपें बेसी लिखल हथ। हामिन सुरूवे ले मानबबादी झारखंडी संस्कीरतिक चहइता ही। से–ले, भाइग–भगवानेक उपर लिखल पानुरीजीक रचना आझिक सँवएक मोताबिक ओते बेस नाँइ बुझाइल। मन नाँइ मानल, तखन उनखर से पुछलिए – "कबिजी, धरमेक बाटें तोहर एते टान काहे?"

पानुरीजी तनी रागल रकम कहला – "बुझलियो, तोहनियो झाजीक डहरें डहरल हा। हामरो उनखर मानबबादी बिचार बड़ी बेस लागे। मेंतुक, जखन हाम साहित्य लिख–हलों, तखन केउ बिचार दिए वाला नाँइ हल। खोरठाक साहित्य भाँड़ार बढ़वे खातिर हाम 'मेघदूत' आर 'उदबासल कर्न' के खोरठा में उल्था करलों। आर खोरठा भासाक मान बढ़वे खातिर हरिवंश राय बच्चन, जानकी बल्लभ शास्त्री, हंस कुमार तिवारी रखम नाँवजइजका कबिक मंचे खोरठा कबिता पाठ करलों। तावो, हामर बिचार कम्युनिस्ट के हे। ई कबिता टा देखा –

"हे राम ! दिए नाँए पारल्हे
एक पियासल के
एक बुँदा पानी
आर चलल्हे राम
जगत पिपासा मेटवे ले।"

तखन हामनिक मने भेल जे श्रीनिवास पानुरी एगो जनकबि लागथ, जें खामखयाली देता–भुता से मानुस के बोड़ मानथ। सँवएक सोभाब जाइन के कुछ रचना करले कबि धरमभीरू नाँइ हवे पारे ! आर फइर तोहर बादेक रचना में तो मानुस जिनगिक दरद छाड़ा आर कोन्हों हये नाँइ हो।

तीन–चाइर घंटा साहितेक चरचा में बीत गेलइ। तावो मनेक साध सिराइल नाँइ। हुँदे सुरूज आपन आलो समइटके डूबे लागल। गोरखिया सोब गाय–गोरू ढुकवे लागला। हामनिके घार घुरेक हल। तखन पानुरीजी से आरो आवेक वादा दइकें बिदाइ माँगअइन। आवेक सँवइ तोहर कहल बात एखनो आत्रा बुझा हे। खुसी मने तोहें कहल हल्हे – "देखा, खोरठाक ऊपर राजनीति चइल रहल हो। राँचिक, छेतरीय भासा बिभागें खोरठाक बिकास देइखके कुछ लोकेक सइन छुटहेइन। बड़ी दुखें खोरठा साहितेक बिकास भेल हइ। एकरा आगु बढ़वेक भार तोहनिक कांधे हो। सोभीन के जागल रहेक चाही।"

एहे लेताइरें पानुरीजी डॉ० राम दयाल मुंडा के बड़ी नाँव करल हला। 'रूसल पुटुस' के पांडुलिपि देइखके तोहर खुसिक ठेकान नाँइ हलो आर खुसी मने आपन सल्हा देल हल्हे।

जखन हामिन बोरवाआड्डा से चललों, तखन मधुर मने पानुरीज बिदाइ देला। गोटे डहर हामिन आनंदेक लहरें मातल रहली आर मुँह आँधरा ले घार घुरली।

*　　*　　*

हामराँ जखन फुरसइत मिलतल, श्रीनिवास पानुरी से भेंट करे चइल जितलों। सभेक खभर सुइनकें उनखर आनंदेक कोन्हों सीमा नाँइ। एखन तक हाम उनखर से दू–तीन बेर मिल चुकल हलों। 1986 में खोरठाक रजत–जयंतिक अबसरें पानुरीजीक अभिनंदन करल गेलइ। सइ सँवएक कइगो फोटो हामनिक उनखर संगें हे।

कुछ दिन बादें, जखन शिवनाथ प्रमाणिक के मधुर खंड–काइब 'दामुदरेक कोराञ' छइप रहल हलइ, तो एक दिन पानुरीजीक थकइक बानार पइलिए। हामर मन नाँइ मानल आर ताता–ताही बोरवाआड्डा पोंहचलों। देखलिए जे उनखर गोड़–हाँथ फुइल गेल हइ। हालचाल पुछल बाद 'दामुदरेक कोराञ' के खभर देलिए। आनंद मने तोहें कहल्हे – "एखन हाम नाँइ मरबो। हल–दिल हवेक दरकार नाँइ ! तोहनिक कीरति आर 'दामुदरेक कोराञ' के छपाइल बादे हाम मरबो।"

एतना कहल बाद तोहर आँखी एगो अजगुत बिस्बास हाम देखे पइलों। आर सइ बिस्वासेक दू टिपका लोर तोहर आँइख ले भुइए गिर पोरलइ। हामराँ बुझाइल जइसें कबिक मने कोन्हों बिसाद हइन बा कोन्हों दुख। मेंतुक, हामर काँचा मन बुझे नाँइ पारल कबिक लोरेक मरम !

सइदिन पानुरीजीक पासें हामराँ सोब ले बेसी सुख बुझाइल। असुक गात रहलो बादें ऊ हामर कइगो कबिता सुनला। उनखर सोब ले बोड़ गुन हलइन जे बुजरूक रहलो बादें ककरो लेकाइर नाँइ मारतल्थिन । गोटे दिन उनखर पासें रहल बाद जखन हाम घार आवे लागलों, तखन भाव–विभोर भइकें हामराँ कहला – "पता नाँइ, तोहर से हामर एते परेम काहे। तोहे अइले हामर मन हलुक भइ जाइ। तोहर जखन मन करतो, हामर ठिन चइल अइहा। सभेक खभरो पाइब आर बातो हवत।" तकर बाद हाम घार घुइर अइलों। के जाने जे कबिजीक संगे एहटाइ हामर निमराझारेक भेंट हल ।

एकाएक, एकदिन अखबारें खभर देखलिए जे खोरठा भासाक महान कबि श्रीनिवास पानुरी सिराइ गेला। हामराँ अइसन बुझाइल जइसें खोरठा–साहितेक एगो जुग–जीतवा सुरूज पाहारेक पारें सोब दिन खातिर नुकाइ गेल। पानुरीजी आपन दिइल वादा बिसइरकें 'दामुदरेक कोराञ' के छपाइक आगुवे चइल बइसला। तोहर 'निधन से गोटे खोरठा सामाज टुअर भइ गेल। 7 अक्टूबर 1986 के दिन हामिन कधियो भुले नाँइ पारब।

आइझ श्रीनिवास पानुरी बीचें नाँइ हथ। मेतुक हिन्दी आर खोरठा साहितक उनखर सेवा अमर रहतइ। तोहर बारल साहितेक दिया जुग–जुग तक समाज के इँजोर करतइ।

❋❋❋

9

गोबिन्द महतो 'जंगली'

जनमथान – चेटर (रामगढ़)। 'जंगली' जी के पहिल पढ़ा–लिखा जनम थान्हीं भेल हलइ। परें रामगढ़ से 1962 में मेटरिक पास कइर हजारीबाग कॉलेज से स्नातक भेला। तकर पर राँची विस्वविदिआलय से एम०ए० हिन्दी से करला। सुरूवेले सिक्छा परेमी रहेक चलते फइर कानून की डिग्री लेला। हजारीबाग आर राँची कचहरीं जंगली जी ओकिलाती करल बादें तारीख 02 अक्टूबर 2014 के राइतें राँचींक घारें केंसर से ऊ सिराइ गेला।

जंगली जी एगो बेस चेठगर चनफनियाँ आर रइसका लोक। खोरठा भासा के बाटें इनखर अजगूत टान। मातरीभासा खोरठा आर झारखंडेक संसकिरती के अनुरागी जंगली जी एगो समाज सेवियो हला। आपन पंचायत के मुखिया बइन के आपन जनमथान के सेवा करल हथ। खोरठा भासा के पतरिका 'तितकी' के फिर परकासने इनखर बेस जोगदान। कोठारें खोरठाक ऑफीस खोइल के ई बेस नाँव कमवल हथ।

ई रचनवें हिन्दी के उपन्यासकार राधाकृष्ण जी के मुलाकाइत (संस्मरण) लिखल हथ ।

❑ *संस्मरण*

उइड़ गेलक फुलवा रइह गेलक बास

गोबिन्द महतो, 'जंगली'

राधाकृष्ण बाबू नाञ बुझाहत कि मोरल हथ। एखन्हूँ कहियो–कहियो जखन ओकर 'वार्ता' वा आलाठन (व्यंग्य) वार्ता राँची आकासवानी से सुनही तो बुझा हे कि अदमिया नाञ मोरल हथ आर घाइरें बइसल हथ आर हम देखे लागल हियन। राधाकृष्ण बाबुक छाप जिनगियो नाञ मलिन भेतक। बराबइरे हमर मने दग–दग इंजोरिया नियर रहत।

जखन हम रामगढ़ हाई इसकुल के पढ़वइया रहों तखनी (1961–62) से कबिता कहनी साहितिक जिनिस गुलइन पढ़े में बड़ी मन लाग–हले। मेटरिक कितपवइनें हिन्दी साहितें लेखक, कबि सभे के जिनगिक बखानो के हम मन लगाइ के पढ़–हलों आर मने सोच हलों कि तनि लिखवइया सब से भेंट हो जइतलक। मने कुरच–हलों कि कहाँ जाइके ई विदुवान सबके भेंट होतक। ई बतवा रइह–रइह के तड़पाव–हलक। ओहे मेटरिक के सहितवें 'रामलीला' नाँवें कहनियें राधाकृष्ण बाबुक जिनगिक आता–पता मिललक। हमर मन तो कुहइक उठल कि हमर घरेक धाइरें राँची के रहवइया ई लागथ। एहे माटिक जनमल, बाढ़ल फइर संपादक साहितकार लागथ तो कइसे इनखर से भेंट करब? पुछते–गछते टावान करते 'आदिवासी' पतरिका के पता लगाइके मंगवे खातिर बछर पुरउती बिहरीओ पठाइ देलिये। तखनी से आदिवासीं पढ़े लागलों आर संपादक राधाकृष्ण जी के रचनवइन से परिचित हवे लागलों।

पतरिका के पता लगाइके मंगवे खातिर बछर पुरउती बिहरीओ पठाइ देलिये। तखनी से आदिवासीं पढ़े लागलों आर संपादक राधाकृष्ण जी के रचनवइन से परिचित हवे लागलों।

1962 में मेट्रिक पास कइर 'एगो मेरा है यही कलाम' हिन्दी कविता आदिवासी में छपेले राधाकृष्ण बाबु के पठाइ देलिये। कुछ दिनेक परें आदिवासी आपन छपल कबिता पइढ़ के हम बड़ी खुसी भेलों। मुदा उनखर से मुलाकाइत करेक साध टा रहिये गेलक।

आखिर हजारीबाग कॉलेजे पढ़ेक बछरे राधाकृष्ण जी के लिखल उपनियास 'रूपान्तर' किन के पढ़े लागलों। पढल परें हमर तो उनखर से भेंट करे खातिर मने आरो हुचुक उइठ गेल। एकदिन एतवार के राँची आये गेलों। बाजारे खोजाइर–पुछाइर करइतें इनखर डेरा खोजिये लेलो। हमतो छउवा रहों तनी मने खुटखुटियो रहे कि एते बड़ आदमी, हामर भेंट होतक कि नाञ। एहे भाइभ–गुइन के साहस धइर आखिर उनखर 'बइठकीखाना' ढुइक गेलों आर उनखर लोक के खभइर दइ देलिये कि हम उनखर से भेंट तनी करब।

आखिर खुटखुटी मेंट गेल ! हमर डाके राधाकृष्ण जी अइला आर पुछे लागला – 'कहाँ आइल हे छउवा ?'

ओहो बइसकें हमर जबाब सुनला – "हमर बड़ी मने साध रहे कि हम तोहर से भेंट करब, सेहे ले हम रामगढ़ ले हियाँ पहुँचल हो। तोहर लिखल रूपान्तर पइढ़ के हमर मने ई हुचुक उठल। आइज तोहर से दरसन कइर हमर साध मेट गेलक।"

सुइन के ऊ बड़ी खुसी भेला आर पुछला, – "तोहिन के रूपान्तर के पढ़ाव हथुन?"

हम कहलियन कि "प्रो० आर०एस० राय।"

फइर पुछला – "कितपवा के कोन ठाँव कइसन लागलो।

"हियाँक माटिक गमक, सोंध–सोंध हवा, पानी टिटिहिंग आर डाहुक चेरँइ के बखान बड़ी बेस लाग–लक।"

फइर ऊ पुछला – "तोञ पहिले कि सोच–हलें कि लेखक दाढ़ी बढ़ाइ के साधु नियर–होता।"

हम कइलिअइन कि – "नाँइ हम सोचल हलों कि लेखक जरूरें बुढ़ा होता। खादी के कुरता, धोती पिंधइत होता। वइसने अबिकल तो हम तोहरा देखलियो।"

हमर जबाब सुइन के ऊ तनी मुसइक देला आर कुछ देरी तक चुपे रहला। तकर पर चाह–पानी मँगवला। पियर परें जखन रामगढ़ के हरहरि पाठक, कैथा के जागीदास महतो, गोला के चुनी बाबु आर महेश गोलवार के हाल–चाल पुछला तो हम अड़गुड़ भइ गेलों कि राधाकृष्ण बाबु हमर गाँव भइरेक ई गइन–माइन लोकवइन के कइसे जान–हथी?

हमर मनेक सवाल टा ऊ भाँइप लेला तो आपने कहे लागला, 1940 बछरेक रामगढ़ कांग्रेस सम्मेलनेक कथा, फेइर – "तखन हम रामगढ़े ढेइर दिन तक रहल हलों सइ सँवई ऊ आस–पासेक डीहवइनें घुरलहों। रामगढ़े माहतो घरेक छिलका रोटी हमरा खाइतें बड़ी सोवाद लागल हले।"

उनखर नेतागिरिक बयान सुइन के हम्हुँ बीचें टोइक देलियन – "कखनु, कखनु हमरहूँ लीडरी करेक साध लागेहे आर मुखिया, प्रमुख, एम०एल०ए० बनेक मन हे।"

तखन ऊ कहला – "बाबू, बनबें तो गरीब आर मेहनइत करवइया लोकवइन के भलाये करिहें। उनखर ई बात एखन्हूँ हमर मने हे आर संजोगे एखन हम आपन पंचायत के मुखियो बनल हों।"

आखिर सँवये उनखराँ लकवा माइर देलइन । तखन ई माटिक एगो मजगूत खुंटा हिल गेल। हमर मने एगो साध रइह गेल कि उनखराँ आपन घर एक धाँव डाकाइके छिलका रोटी खिआवब मुदा ताउ तकले राधाकृष्ण बाबु सिराइ गेला। ई झारखंडेक माटी ले जनमल बाढ़ल धमके वाला फुल उइड़ गेला। मगुर ई माटीं ऊ फुलवाक बास रइह गेल।

एखनु तक साहितेक छेतरें हमरा रूचि देइख ऊ कहल हला – "हियाँ (झारखंडेक) नदी–नाला, बोन, पहार–परबत, झरना, दह–घाघ हेन–तेन परकिरती के बिसयें लिख। हियाँक संसकिरतिक संबंधे कलमेक माधइमें जगाव। ई माटिक गरीब आदिवासी लोकवइन के उठाव, जगाव।"

उनखरा हियाँक अदमिक सोसन के देइख नाँइ सोहा हलइ। ऊ गरीब, आदिवासी, हरिजन, मेहनइत करे वाला आदमी सब ले बड़ी परेम कर–हलथ आर ई सबके जागवे खातिर राइत–दिन लाइग परल हलथ। हाँ ऊ राँची रेडियो से खुस नाँइ रहथ। हुवाँक अफसर साही, मछरी–मुरगा हेन–तेन घूस के मन से घिरना कर–हला। एतना बात हमर सवाल के सल्हा रूपें देल हला कि राँची रेडियो ले हामिन आपन कविता नाटक, कहनी हेन–तेन कइसे परसारन करवावब ?

आइज तो राधाकृष्ण बाबू नखत मकिन कखनु–कखनु रइह के उनखर बतवल बात एखनो हमर मने परते रहइ।

❋❋❋

10

डॉ० चतुर्भुज साहु

जनम 3 जनवरी 1950 में हजारीबाग जिलाक साँकुल गाँवें। शिक्षा एम०ए०, एम०एस०सी०, एल०एल०बी०, पी–एच०डी०।

मानवशास्त्री डॉ० साहु हंसमुख, मिलनसार आर सादा जीवनेक एगो पटतइर लागथ। तोहर हिया–खलास मधुर बेबहारें कोन्हों लोक मोहित भइ जाथ। तोहे खोरठा भासा–संस्कीरतिक एगो बोड़ विद्वान लाघे। मानबबादी बिचारेक परचार–परसारेक लेताइरें तोहर कइगो किताब छपल हो।

खोरठा भासा आर संस्कीरतिक बिकासेक दइके संगिया रूपें तोहें हिन्दी आर खोरठा में कइगो किताप लिखल हा। तोहें खोरठा सिलेबसेक बहुत कितापेक संगिया संपादनो करल आइला हा। गिरिडीह कोलेजेक मानव–बिगियान बिभागें प्राध्यापक रहलो बाद डॉ० साहु खोरठा भासाक माइधमे ई छेतरेक संगे मानुसेक कठिन सेवा कइरं रहल हथ।

हियाँ दियल रचना टा इनखर एगो जातरा–बिरतांत लागइ।

❑ *जातरा–बिरतांत*

दारजिलिंग आर गंगटोकेक जातरा

डॉ० चतुर्भुज साहु

अइसे तो जहाँ–तहाँ आवे–जाएक आर जे–से जगह में घुरे–फिरेक चाहे कते किसिम के जातरा करेक अनुभव ढेइरे आदमी के होय सकेहे चाहे रइह सकेहे। कते झन तो पइत महिना आर पइत हपता हियाँ–हुआँ जइते–जइते रह हथ। मनतुक आपने पढ़वल कॉलेजिया बिदियारथी सब के आपने संग लयके ओखनिक सम्हरवेक जिम्मेदारी के आपन माथाक उपर ढोवेक संगे–संग किसिम–किसिम के सवारी से जातरा करेक आर जातरा करवेक अनुभव एगो दोसर रहे हे। ई जिम्मेदारी एगो बड़का जिम्मेदारी हे। तकरो में जकरा हमरे तरी जातरा में जाय परे हे, मानव बिगियानी बिदियारथी सबके गोंठ के आपन संगे–संग खेदले–खेदले आर गोंठउले–गोंठउले आर बतर–सिरे ओखनिक किसिम–किसिम के सवाल–जबाब के पियास के मेटवेक उता–सुता करे में कते कि–कि जिगिस्ता करे परे हे। मानव बिगियानेक बिसइयो तो बेसे डागर–चाकर बिसय हे– जकर में जाति–बिगियान तो बस्तुकला, तो संसकिरति से जोर–नार रखवइया किसिम–किसिमेक बात हेन–तेन ढेइरे–ढेइरे, झबरल–झबरल, डाइर–डहुरा, डोहँगी, डगी आर फुँधी हे ई मानव बिगियान बिसयेक झपरा गाछ कें।

तो तोहर साथे चाहे अइसन जातरा करबइयाक संगे, से जातराक डहरें जें डिहरे लागल हथुन, किसिम–किसिमेक अधपुरवा बिचार आर अधपुरवा गियान राखेवाला, अधडेरका

आर गोंठडेरका उमइरेक बिदियारथी जेखिर केर मइधे केउ तो ढेइर पुराना सामंतवादी नियर बिचार आर तइसने समझदारी राखे हे तो फइर केउ अजगुत आबगा, टाटका नियर–माने कि केउ तो गाछेक फेड़ेतरे चकरथुम होवे लागल हे तो दोसर केउ तकर आगा बाढ़े चाइप के चाइरो कर देखेक हुब राखे हे आर अइसन जातरा में तो आपन कलासेक से अनुसासनेक बोड़ मानेक दरकारो नाँइ बुझथ। से ले बुइधेक घोड़वो तनी बेसी दुलकी चाइल धइर लइ सके हे आर बइजकेक, बुझेक आर जानेक जिगिस्ता टा तकरे मोताबिक बेस टनक आर फइलगार बइन जाय सकेहे।

तो ले तोहें जाय रहल हाय आपन संगे अइसन छउवइन के डिहरउले आर केउ कोनो गाँव के देखइके, तो केउ कोनो मानुसेक झुँड के, ततो केउ कोनो सहर के देइख के, तो केउ कोनो पहार–टुँगरी, चाहे ओकर लाता–सुइंध, चाहे बिसेस गठन के देइख के कानो अंड़गुड़ सवाल कइर देलो ! तो अब मेटवा तकर गियानेक पियास के ! मानव बिगियानेक आपन गियान के संगे–संग इतिहासी गियान, भूगोली गियान, भूगर्भी गियान हेन–तेन कते बिसयेक गियान के मेसायके एगो गियान खिंचरी बनइभे तबे तो तइयार हतो अइसन सवालेक जबाब।

तो अइसने किसिम से सुरू भेलक, बिदियारथी सबके लइके हमर दारजिलिंग आर गंगटोकेक जातरा 1983 आर 1984 इसवीं एक धँव घाटसिला कॉलेज, घाटसिला आर दोसर धँव गिरिडीह कॉलेज, गिरिडीह ले।

तो घाटसिला कॉलेज से लगाइत 30 गो बिदियारथी के संगे दुरगा पुजा के छुटी में 'शोध कार्य' के चलते निकले के तय भेलक। आरो तय भेलक जे फलना तारीख के सभे बिदियारथी के कॉलेजेक अँइगना में जमा होवेक चाही। मकिन तय करल दिन 9 गो बिदियारथी हुँवा कमे जुमला। अब अलग फरदवाइ। ओखनिक घर खभइर भेजा। दोसर दिन बैंक बन्दी रहे, अब पइसा कइसें निकालबें। तेसर दिन तय भेलक कि हावड़ा–बंबई एक्सप्रेस गाड़ी से जरूर चलेक हे। ई तरी बिदियारथी आपन–आपन सुबिधाक मोताबिक कोइ गालुडीह, तो कोइ चाकुलिया में चढ़ला। आर हामें सबके गनती कइर के मिलावें पारली झाड़गरामे ।

नवो छुटल लड़कवइन के पाय के हमर एते खुसी भेलक जे कुछ कहेक नियर नाँय। जे नियर कि जेखिन कभी गोरखी करल हा ओखिन के अनुभव हतो जे आपन गोठेक कइगो गरू–डाँगर कधुँ भिड़इक गेल बाद जखन फइर सामने मोहइड़ जाथ तखन की तरी आर कते खुसी होवे हे। मेनेकक आगुवे कहल हियो जे पढ़ुवा बिदियारथी सब के आपन संगे डिहरवे में कते की–की फरदवाय आवे पारे। ई तो अखन सुरूवाते हे। हाँसते–खेलते, देखते–करते हावड़ा पोहँचली। हियाँक चकाचउँधी देइख के तो कते बिदियारथी हड़बड़ाय लागला। ओखिन सोंचबो नाँय करल हला कि अइसनों हड़बड़ाय के बतर मिलतक। हेन–तेन करते–करते साँइझ तक तीनगो बिदियारथी आँखिर बँउड़ाये गेला।

अब ले, नावाँ फरदवाय आये जोहड़लय। हमर धइर गेलक मुड़गड़ी जे अब हियाँ हावड़ा में कहाँ खोजबइन रे बाप ! आर कइसे खोजबइन–जदि ओखनिक खोजवेले भोभों से एनाउन्स करइबइ ताउ के जान सुने पइता कि नाँय ? हावड़ा तरी हुलमलिया जगहें

तो भोंभाक साड़ा नियर हाउ–हाउ, गुइल–गोहाइर चोबिसो घंटा लागले हे। मन्तुक कइसे–कइसे ऊ तीनों बउड़ाइल लड़कवइन के सुमति भय गेलइन जे हामनिक खोजते–खोजते दुसइम–बजइर के आर हरनठ हाय–निसार भयके सेसे एगो होटलें कुछ खायले समइला–आर ओखिन हुवें बइसलेहे हलथ तावले हामें जायके देखें पइलिअयइन। ले कोनो नियर तो जीव बाँचलक ।

मकिन एतने में छुटी कहाँ ! खोजा–खोजी में जे समयवा बरबाद भेलक तकर चलते कलकत्ता घुरेक बतरो बेंड़ाइल आर तकर उपरउति जे टरेनवाँ धरे गेले दिनेक आलो में जातरा करेक सुभीता हतलक से टरेनवों ताउले फरफाँक ! नाइर–पाँइर के आखिर राता–राइत चलेवाला कामरूप एक्सप्रेस धइर के निउ जलपायगुड़ी गेली। हुवाँ पोहँचेपर पता चललक जे सूप उझला पानी। बइरसाक चलते, माटी, पाखना आर चाटाइन धँइस के पहरिया रेल लाइन बेंड़ाय गेले हे आर पहाड़ पर धुकुर–धुकुर चढ़ेवाला छोटका टरेन (टोवाय टरेन) तो बंद होय गेल हे। सेले निउजलपाय गुड़ी से आगु बाटे जाय खातिर छुछे बसेक आसरा बाँचल रहे। मेनेक बसोक सड़क तो जगह–जगह, हियाँ–हुवाँ भँथाये गेल रहे। किलेना सिलिगुड़ी से दारजिलिंग तक गोटे डहर–सड़क आर रेल लाइन आदा–बाइद करेक नियर अगले–बगल में बनल हे। फइर कहुँ लाइनवा काटहय रोडवाके तो कहीं रोडवा काटल हय लाइनवा के। एहे सबके चलते कुछ बसवइनो बन्दे रहय आर कमे बस चल हलय।

अब दरकार रहे टरेनेक टिकट के जगह बसेक टिकट बनवेक। काहेना घाटसिला से दारजिलिंग तक के गोटे डहरेक टरेन भाड़ा दइ के हामिन टिकट बनउले रही आर ई कमवा कम फमइतेक काम नाय रहे। तकरो में निउजलपायगुड़िक टिकट बाबू रहे बंगाली बाबू। 'हिन्दी' कमे बुझे–बइजके पारे। जब ओकरा कहलिअइ टरेन बन्द के साटिकफिटिक दिये ले तखन ऊ तो एकतरि से अकचकाय गेलक। केजन अइसन समइसिया से ओकर कभुँ मुँहा–मुहिं भेल हलइ कि नाय! ऊ तो एक धाँव चसमवा जुतिआय के आर एक धाँव आपन चेडरा मुड़ियाक उपर हँथवा राइख के कइह उठल – "ओ रे बाबा! एमोन कोरेगा तो हामको चाकरी चोला जायगा। हाम तो गोरमेंट का छोटो चाकर हाय। हाम कइसे ई साटिकफिटिक देने को पारता। सिलिगुड़ि में बोड़ो इसटिसन हाय। हुवाँ का टिकिट बाबू साटिकफिटिक देने पारेगा।"

खइर कोनो नियर हामिन सिलिगुड़ी तक पोहोंचली। फइर हुँवा बंगाली बाबू से ओहेनियर के बतरस के बाद साटिकफिटिक मिललक।

सिलिगुड़ी से आगुबाटेक डहरवा के धाइरें–धाइरे बड़का–बड़का गाढ़ा–ढोढ़ा हइ आर खुब उँचा धसना सब काँथ लखे खड़ा हइ। पहाड़ी सोभा देखेक रीझे कोरीटेक बिदियारथी तो बसेक छतवे उपर चइघ गेला। तखन ओखनिक संग दिये ले हमरो सेहे करे परलक। मेनेक जइसीं–जइसीं बेसी घुरान सुरू भेलय आर धरहरा नियर बड़का–बड़का करछाहीं काँथ ठाढ़ भेल तरी खुब गाढ़ा–गाढ़ा धासना गुलइन देखाय लागलय जे बसवाक उपर से देखे गेलें हठेक कोनो जीव मानुस–तानुस एक मुठाक भुँइस नियर देखाय

लागलथिन् आर कखनो–कखनो बुझाय जे गाड़िया अब उलटलय तब उलटय। अ .. ऽ ..ऽ र ऽ रे ऽ रे ऽ.... डिगवाजी देलय तखन तो बिदियारथी सबके आय–बाय ठेके लागलइन, आँइख–कान घुरे लागलइन, केउ–केउ तो ओछरो हो लागला आर तब गाड़िया डँड़वे कइहके डेराइल छउवइन के नाँभेक बतर देल गेलइन। ओखिन बसवा भीतरे ढुइक के बइसला आर जेखिन हमरे संग उपरे रइह गेल रहथ ओखिन कटि ढीठ छउवा रहथ आर जेखिन नाँइभ गेला सेखिन तरि डरे एखनिक हाड़ नाय काँप–हलइन। एखिन हमर से किसिम–किसिम के सवाल पूछे लागला। एगो बिदियारथी पुछलक – बड़ी बीच बाटेक एगो बड़का टुँगरिक उपरे बनल घरवइन देखाइके जे अइसन–अइसन बोने–झारे एते ऊँचा टुँगरिक उपरें माड़ल लोक कि तरि जीय हथ आर ओखनिक कि आइझेक ई सइभ दुनियाँक हाल–चाइल कुछ मालुम हइन।

–हामें ओखनिक बतउलियन जे मानुस तो एकरो ले कठिन हालइत में रहे पारे हे आर रहे हे। जेतरि उतरी धुरूब चाहे दखिनि धुरूब बाटे चाहे एलासका बाटे चाहे गिरिनलइण्ड बाटे रहवइया आदमि सब धुरूब के आस–पास रइहइया आदमिअइन सबतो कइ–कइ महिनो तक रउदेक मुँहों नाय देखे पावथ। तो फइर कइ–कइ महिना तक राइतेक पते नाय, ना दिन सिराय, ना बिसियाम होवे न दुपहइर, ना राइत, महिना–महिना तक सगरघरी दुपहरे भेल नियर बुझाय। तब फइर आरो बताय देलिअइन जे एखिन सचे आइझेक बिगियानी परगति से चनफनाइल दुनियायेक ठेकान–टावान नाये के बराबर राखथ आर हजार–हजार बछर अगुवेक मानुसेक जिनगी नियर एखनो हों बेचारा नियर जिनगी जीये पर हइन। एहे तरी चाइरो बाटे देखते–भालते बतिअइते–करते हामिन पहुइच गेली करसियांग। ई हे एगो पहारि स्टेशन आर दारजिलिंगेक जिला के एगो सब–डिविजन। करसियांग के ऊँचाई लगाइत 5000 फीट हे आर ई दारजिलिंग से लगाइत 22 किलोमीटर पर बइसल हे। हियें हामनि के राइत काटे परलक आर एहे रतिये बिदियारथी सब के बुझाय गेलइन जे हामें जे ओखिन के बेसी ओढ़ना–बिछना लियेके कोल हलियइन से किले ? आर हामर बतिया नाय माइन के बबुवइनिक फेरा में ओखिन भुल कइर बइसल हथ। काहेंना रातिक काल्हा हावाक कनकही ओखिन के दारजिलिंग के पहाड़ दियेक सुरू कइर देल हलइन।

हियेंसे पता चललक जे ऊ छउवा टरेनवा अब दारजिलिंग तक चलेक सुरू करहलय। से ओकरे पर हामिन चइढ़ गेली। बिदियारथी सब रिझे गाड़िया चलते–चलते कखने–कखने नाइँ जा हलथ आर फइर कुइद के चघ लहथ। केउ–केउ लगस्तर बढ़ेवाला ऊँचाइ से इरइबो कर हलय। एहे किसिम से हमिन घुम स्टेशन नइजकइली। डुहरें रेल लइनवाक उपर बाली गिरउते देइख के छउवइन के बड़ा अजगुत बुझइलइन। ओखिन हमरा पुछे लागला जे ई लोहाक पटरी उपर बालिक बिछउना किले बिछवल जाय रहल हे ? तनी भाइभ कुन ई सवालेक समाधा करे परलक जे कितरी से कहे गेले एखिन बुझे पारता। माने पटरियें आर चकवाक बीच के घरसन सकति के बढ़वेले जेमें गाड़ी पिछरे नाँइ।

'घुम' 'स्टेशन' पहुँइच के हामे ओखिन के बताय देलिअइन जे ई हे दुनियायेक सबले ऊँचा 'स्टेशन' जकर उँचाइ हे लगाइत 8000 फीट, माने लगाइत अढ़ाइ किलो मीटर। घुम 'स्टेशन' के ई गुन सुइन के तो बिदियारथी सबेक सचे चकरी घुम होय गेलइन। घुमे सहर में गउतम बुध के दुनियाक सोबले बोड़ मुरती हे। ई बड़का मुरतिया देइख के तो कइगो छउवा अकचकाये गेल रहथ तखने हाम बताय देलिअइन जे गोटे दुनियाये बुधेक एतना बोड़ मुरती कहुँ नखे। एकर बादे हामिन ओहे छउवा टरेन से बतसिया–बतसिया लुप देखते–देखते दारजिलिंग वाटे सोझइली। ई मोड़वा आपन बाँका–ढेकाँ रूप खतिर नामजइजका हे। घुम से कहे मोड़ होयके आठ किलोमीटर चलल पर हामिन ठाढ़ वेरा लगायत दारजिलिंग पोहुँचली।

अइसन कि बहुते झन के मालुमो हतो दारजिलिंग के 'चाय' तो बड़ा नामजइजका चीज हे। छउवा सब अजगुत सवादी पाय के घरी–घरी चाय टे सुरपे लागला। ई किसिम से छउवइन तो आपन सँउख पुरवे में मताय गेला 'चाय' सुरपे में आर घुरे–घारे में। मेनेक हिन्दे हमर ठेइक गेलक फिरदवाय। किलेना हामनिक बड़का दल के लइखकें पँड़ाजीक गुमस्तवइन नियर बुझे लागला। ओखनिक मने के जन भेलइन जे आइज मोटका पोहुना मिलल हे। कइ हपताक कमाइ तो एके दिन माइर लेबइ। मेनेक होटल चारज सुइन के बिदियारथी तो बिदियारथी हमरो मसमिल होय गेलक। तकर बाद दारजिलिंग सरकारी कॉलेजें पिरिंसिपल से मिलेक रहेक जोगाड़ लगउली।

जइसें राइत भेलय कि छउवइन के धरलइन छटपटी। कठुवाय लागला जाड़े। एक–एक ठिने तिनगो–चाइरगो छउवा सटा सइट सुतेक कोसिस करथ। मेनेक जे माँझे पर–हल वोहे तनि कनकनि से बाँच हल सेले सभे कोय माँझी सुतेले जिद करथ। तो अब धारिं रहे के ?

खइर दोसरका दिन से आपन–आपन पसिंदेक मानव बिगियानी कामें छउवइन के हबड़ाय देलिअइन। केउ लेपचा, केउ भुटिया, केउ सारकी, केन्द्र गोरखा तो केउ आन कोनो बिसयं पर सोध करेक आपन काम ओसरउला।

तो सोध के काम कोनो नियर कइर पुरउला, मेंतुक ई जातरा से छउवा सब कम परेसान नाय भेला। एक बाटे दाजिलिंगेक जाड़ साध हइन तो दोसर बले हुवाँक रहवइयाक खान–पानेक तरीका। हमर बिदियारथी सब जे चिजवा सपनो में नाय सोचल हता बइसनेहे खान–पानेक रेवाज हुवाँक अदमिअइन में देइख के ओखिन एकदमे चोकाय गेला। भाला देख–हथ बड़का–बड़का डाँगर सब के काइट के रोडवे धारी जहाँ–तहाँ उलटाय देलें हथिन। कहीं गाय काटाइल हे, तो कहीं बरद। तो कहीं–कहीं काड़ा–भइसें। आर एहे नियर किसिम–किसिम के सिकार बेचाय लागल हे आर होटलो में मिलेहे ओहे सिकार। अब तो बिदियारथी सब होटलें खाय–पिये से भिड़के लागला। मेनेक आखिर खइला कि ? लाचारी में आखिर सुखले रोटी चेबवे लागला चाहे बिसकुट–पावरोटी खायके कोनो नियर भुख मेटवे लागला। माने हियाँ कहल जाय सकेहे जे कल्हा हावा आर अधभोरवा पेट। ई दुयोक जालाँय दारजिलिंग जातराक जोस आर हिमालयेक एवरेस्ट, कंचनजंघा हेन–तेन चोटिअइन

के देखे पावेक खुसी, तकर छाड़ा परकीरतिक किसिम–किसिमेक मनहरवा रूप देखेक खुसी, 'चाय' बगान देइख के उपजल रिझ सभे बेड़ाय–भाँड़ाइ जा हलइन। जाड़ तो छउवइन के ई नियर काहिल कइर मारलइन जे कइगो के ठंढे माइर देलइन आर ओखिन बेजार पइर गेला आर हुँवा बितवल दसो दिन सायदे केउ तनि बेसतरी नहइला, बिचकुन बेसी छउवा तो नहइबे नाय करला।

दारजिलिंग के काम सिराय के हामिन सोझइली गंगटोक। ई हे भारतेक नावा राइज सिकिम के राजधानी। दारजिलिंग से सिकिम जाय खातिर साँपेक डहर नियर बाँका–ढेंका, बोहल तिसता नदिके धाइरें–धाइर हे गाढ़ा–ऊँचा पहाड़ी रोड। सिकिम के कहल गेल हे फुलेक नगरी। से फुलेक नगरी तक जायवाला डहरवो में कते किसिम के फुल, गाछ, पाल्हा, टुँगरी, पाहार आर रकम–रकमेक मनमोहवा सोभा। बिहानें सात बजे दारजिलिंग से बाहराय के साँइझ चाइर बजे हामिन गंगटोक पोहँचा–पोहँची भेली। हुआँ पोहँचेक अगुवेहे एगो बड़का फेकटरी देइख के छउवइन पुछला उटा कथिक फेकटरी हलय। हामे बताइ देलिअइन जे एहे हो भरतेक सियाड़ी छेतरे बनल नामजइजका दवाइ फेकटरी दवाइ बने हे आर तकर आगु हे सिकिमेक रंगपो मद फेकटरी। से मद सूधे फलेक रस से बने हे।

ई तरी हामिन कहे पारी जे दाजिलिंग जातरा से सिकिम जातरा छउवइन के तनी बेसे लागलइन। आर तकर बाद सब खुसी–खुसी घर घुरली।

11

डॉ० ए० के० झा

20 जून 1939 ई चंडीपुर (गिरिडीह) में बाप लक्ष्मी नाथ झा आर माञ कुसुम बाला के घारे ए०के० झा के जनम। तोहर पुरा नाँव अजित कुमार झा। थापाइ–थुपुई सँवई ले ही तोहे बेस चनफनियाँ। पेटरवाइर हाई 'स्कूल' से मैट्रिक फस्ट डिविजन आर संत कोलम्बा कॉलेज हजारीबाग से 1963 ई0 में तोहें बिगियान बिसई से स्नातक करलाय। 'विज्ञान' में बेसी रूचि होवेक चलते तोहें मउसम बिगियानी हलाय।

झा जी 'अखिल भारतीय विज्ञान कांग्रेस' के सदइसो हला। मानुसेक बिकासे बाधा दिए वाला पुरना खाम खेयाली रीति–रिवाज, भूत देबता, जादू–टोना, कांना पतियार गुलइन के तोहें खाँटी बिरोधी आर आञा 'मानववादी' बिचारधारा के समरथक आर उपासक। बाम्हन घरें जनम लेल परहुँ तोहें बाम्हनबादी सोसक के घोर बिरोधी।

हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, संस्कृत आर खोरठा साहित, कइगो झारखंडी भासाक तोहें विद्वान हलाय। खोरठा भासाक सभे विधा में – कहनी, निबंध, सबद छाया, नाटक, उपनियास काइब में तोहर रचना छापाइल हों। खोरठा भासाक बेयाकरन, रस–छंद, अलंकार लिख भासाक थिर करवइया तोहर अनठेकान किरती हइ। 'खोरठा गइद–पइद संगरह', 'समाजेक सरंजुइत निसइन' (प्रबंध काइब), 'मेका मेकी न मेट माट' (नाटक) हेन तेन कितपवइन राँची विस्वविद्यालयेक छेतरीय एवं जनजातीय भासा विभागेक कोर्से सामिल हइ। तोहें विभागेक संपादक मंडल के सदइसो हलाय। आकसबानी राँची से हुँ तोहें 'सम्बद्ध' हलाय। 29 सितम्बर 2013 तारीखें इनखर निधन से खोरठा साहित जगतेक एगो उज्जवल तरिंगन निझाञ गेला।

'पुटी आर पालु' एगो सबद छाया लागइ। एकर में देखवल गेल हइ जे 'पुटी' नांवेक एगो जनी बिस खाइल परें आपन मरद 'पालु' के मानबबादी विचार टाक साई देल हइ।

❑ *सबद–चितर*

पुटी आर पालु

डॉ० ए० के० झा

पालु ! तोञ ई कि करलें।

ई जे हामर कते साधेक मोरोन टाउ अकारथ होवे लागल हे।

माने, मोरब तो कइ घरिक मइधी, मेनेक एखन जे हामर लादाक पेंदा ले साड़ा आवे लागल हे, जे पुटी ! तोराँ बाचेक रह–हलउ ! पुटी ! भाइगेक जे कल्पना करल गेले हे, से खामखेयालिक लइर–जइर ले ताजिनगी लरेवाला तोर पालुवे तोर ले इ तरी चेठगर भाइग लागउ, जइसन हाजारें एको गो मानुस के बड़ी संधने मिले, नाँइ मिले !

हाँ–हाँ, चेठगर भाइग ! खामखेयालीं कुरचेक भाइग नाँइ! आर, ओकर रास्ता लागइ, समेक असल–मिसिंड भाइग जनमवेक गाँचेक सेरेस्ता ! से भाइगेक गोड़इति कराक नाँइ।

पालु, आइझ हामें बुझे पारे लागल हिए, जे पालक सागेक पालक नाम तोंञ काहे राखल हें आपन ले। तोराँ तो हाम कइ बइर पूछलो रहिअउ ने कि बुइझ के तोञ आपन पालक नाम राखलें, ठठाउ करल रहिअउ न हिन्दु मतेक सासतरेक पालक बा बिस्नु भगवानेक चेला बनेक भेभस तो नाँइ कइर रहल हें। मेनेक तोञ फुरछाइ के आपन नामेक खोलाखोली एक अरथ टा नाँइ जनउलें। नाँइ जाने पारल रहिअउ तकर हाम भेउ। मकिन एखन एक–एकें जइसीं सिनेमाक रिलेक मतर तोर कमवइन के फोटो होतो हामर माथाक परदाञ तोर संगे काटल सोलऽ बछरेक जोहडल ढांगा रिलेक झलफलइथी दगदगाइल जाइ रहे, तइसीं आपरूपी ऊ अरथ टा फुरछाइल जाइ रहल हे।

तोर कमवइन चिचआइ के आर टनक रावें कहहउ जे, जेरकम पालक साग दामें खूब सोस्ता मेंतुक कामें खूब खासता, विटामिने भोरल, केउ तोरल आर पेट भोरल। मल्किन फटकफुलाएँ मगन रहवइयाँ अमीर आर अमीरेक भेंभस करवइया 'चालु' लोकवइन अइसन गुनकारी पालक सागेक धाइर बाठूँ कचिते जाथ– 'साग पात के खाई, जंगलों खाइ, बाबू नाँइ !'' माने, आम लोकवइन ले फरहर–झलफल–छलछल, मल्किन ई बेबस्थाक मोटा आर तलिआइल लोकवइन ले नुकाइल चुकुमुक चेमसाइल–चिपास।

पालु ! एखन जब घुरपाके घुरवइया हामर मनटा एकठिनें थिराइ गेल हे आर हामर गातेक तखनेक चरूआ चेठा ले आर अब ठाँइ नाँइ रहलइ, तखन हामर मनवाँ जजेक जघञ आपरूपी पोहँइच गेले हे आर फइसलाक तउल डाँडी ..... एक बाटे तोराँ आर एक बाटें हामराँ बइसाइ के तउले लागल हे।

पालु ! एखन हामर मनेक मइधें जे झलफल बिचारेक ढेउ उठे लागल हे – जे बुझा आर बुइधेक पोहा बिस खाइल बादें पोंगाइ के पनपनाइ उठल हे आर आरो उठते हे तकर दुइयो आना रकम बुझनगर हाम जदि बिस खाइक आगु बने पारतलों तो कइसुँ ई अइगटंगी हाम नाँइ करतलों।

मेनेक अब कि हतइ । ई चिठिया तोर ठिन पोहँचेक कते पइहल्ही हामर सब फुराइ जीतक ! सब फुराइ जीतक !

ई तरी फुराइ जाइक बात हाम एखन एहे ले उखरव लागल हों जे कोनो जीउ मोरल बादें आर नाँइ जनमे – तोर ई बतियाक भेउ अब हामर ले आर भेउ नाँइ रहलक! एखन जनमल ई फरीछ गियानेक भकभक आर धपधप आलोञ ढेइर रहइसेक तखनेक मोहड़ा उघरे लागल हे ! आर तोर काम आर बतिअइन अब निछक आयाँ आर डाहाँ निठा लागे लागल हे। आर यदि कइसुँ केउ आपन्हीं टोइ के कुछ जिगिस्ता बा दवाइ बिरो कराइ के हामर जोउ घुराइ देलक तो फइर हामर धोवल पोंछल, लउतन आर असल मानुसेक रूप टा देइखके बेबस्थाक छुइत–छँइत छुवाइत आर छेवाइ दें भोरल छुइत काइल आलोञ अंधुवाइल लोकें हामरा चाँड़े चिन्हो हो नाँइ पारत आर । तोञ चिन्ह तो लेबें जरूर किले कि से रूपटाक बाप तोहिं हमीं। मल्किन रिचिक हाइचक होवे पइर जीतउ तोरहूँ।

तोरो गावें पालु ! हाम एगो दोस देबउ जरूर–किले ना, तोञ•कखनो सुगुम बासी आर कखनो साड़ाइ के फरफरइले आर सरसरइले एते रागें–बेगें अगुवइले गेले जे हामर मनेक आठांग जालो तोराँ धरा–छुवा करे नाँइ पारलो। तो तोराँ हाम कपार बुझे पारतलिउ! आलो कि आंधार गंगाइ ! मेतुक अंधार ले आलो आर अंधार दू टाइ देखाइ ! के जान सइले तोञ सगरघरी आर सबदिने आन निजेक जरूरत के पसरे ले आर मेसाइले फरखीं राखल हीं !

पालु ! ढेइरे बइर हाम तोराँ कहलो रहिअउ जे तोर अइसन तो आर ककरो देखे नाँइ पाइल हों ! आपन छउवा–बेरा ले आइझो तक माने तोर काम आर काथा गुलइन के हाम, मोटा मोटी नटुआ नाच आर भेभसें आर कखनो–कखनो पेंघो बुझहलिअउ। बाप घरे रामायन, महाभारतो आदि कते देब आर भगवानेक जीवन कइहनी पढ़ल–सुनल हलों। मेंतुक उगुलइनेक मइधें ढेइरे कइहनी गुलि खिस्सा तरिए बुझाइ। तो मानुस कि एते लागानेक ऊपरहोवे पारे।

एतेने नाँइ, रितु–रूपु–कुथु–रेंगटा–राँधा–कोइया–टुसु–सुनु–गोबर, थोमा, करइ, गुड्ड आदिक संग समय–समयें हाम कि आर कइसन संबंध राखल हों, से जानिये के तोञ हामराँ माफ करले आइल हें। कहियो हामराँ फुइट–फरनाइ के कुछ कहलें तक नाँइ। आब्या–आब्या कभुँ–कभुँ रागलें केबल। साजाइ दिएक बात तो धूरें रहोक। सुधे एहे आसाञ जे बादें हाम बेस बइन जाइब – बादें ठीक मानुस बनब आर तोरो मानुस भाब टा बेस भाबें बुझबउ।

एकें ठिनें दू लोकेक मइधें एते फरक रहा टा कि आन केउ चाँड़ें बुझे पारतइ ! तोञ के जान आर ककरो हाँथो धरल हभीं ना नाँइ। केउ एहोउ नाँइ सहजे भाभे पारे जे एगो निरदोस मानुस एते सइह सके हे बा तकर संघी सगरघरी रहवइया कउ एते गुन्हों करे पारे। मोंदखावा लोकतरी। बा खइर खावा गरू तरी ! ई दू टाइ अजगइबी बात।

एंक बइर तोर एगो दोस्त बुकु आइल हलउ। ओकरो जोऽ–जिगिस्ता कथा–काइदा लुइर–लाप बहुत–टा तोरे रकम। मल्किन ओकरो तो से रुपटाक तइनको लाफालाफी करे नाँइ पारलिअइ, आर ओकर ऊँचा कथाञ मन नाँइ गड़वे पारल के चलते आखिर पाराए गेलक !

पालु ! कम–ले–कम हामराँ तोञ सोझा–सोझी सास्तिओ देल रहतलें तो आगुवे हमार कुछ चेठा घुरतलक। तबे तोर निछक आयाँ बात गुलाक फाव आर फोरी नाँइ बुझतलिअउ। मल्किन कहाँ तो हाम देखल हों जे हामर नइहरें हामर एगो काकाक बेटा (पितिया) भाई के हामर दसमासी भारी गातेक भोजों एकबइर पिएले एक लोटा दइ देल रहइ। भोजी रक्त रोहाइन, झोरोबोरो। आर दादा उल्टे उँड़इर के उधिआइ–फुँफुवाइ उठल रहे, "जानि भइ के तोर एते मेजाज जे हामें पानी देबउ तो पीबें।"

आर कहाँ तोञ ! जे हाफ्ता कइ दिन तक दिन राइत बाहर से डिउटी कइर के थकल–बजरल आइल बाधूँ जदि हामर कोन्हों असुक–तसुक देखलें तो तखन आपन थकानी बिसइर के जरूरतेक जुकुर उल्टे हामरे गात सोंटा–सोटी, हँसता–हँसतो करे लागले। जे परथाञ जनी के चरनदासी मानल गेलेहइ आर ओकर से प्राइ ओइसने बेबहारो

करल जाहे, सेवा सुसारो तइसने करल जाह। तइसने हावाञ बोड़ भेल केउ कि रकम भुइएँ रइह के सरगेक (आकासेक) बात गमे पारे।

एतने नाँइ, जाहाँ दोसर लोकेक बुता–खेमता, उमइर भेल के संगे–संग बदलइत रहे हे – पचीस बछरेक लागालागि ले प्राइ दोसर लोक पूरा जुवान रहे है आर तकर बाद करें–करें लागाइत तीस–बतीस बछर तक थिराइ के तब लापें–लापें ओकर बोल–सोवांग खिआइ–खरके लागेहे। ताहाँ आइज ले सोलऽ बछर आगु तोराँ जइसन पाइल रहिअउ, एखन चालिस डेगल्हूँ प्राइ तइसने पावहिअउ। बिचकुन, जखन तोञ हामर मन टा बेस फरहर देखे हें तखन, तखनो ले तोराँ से तीहें बेसिए सकत पावहिअउ। एक सोउ डिग्री ले ऊपर तक जरजराइल बाधूँ हामर मन टा तइसन बुइझ के हुबेक हदहदीं तोञ हामर सब रकम संग देले हें। साइथ सँठइले तरी।

आर तथुँ हामर मंद–बेसेक त लें तोञ आपन मनटाक अइसन मेसाइ देलेहिं जे हामर मनटा कखनो कोनो कारनें कटियो लरूवाइल बा उसटल देखलें (आर हामर ततऽ–ननऽ–क चलते प्राइ ओइसन होते रहे मन टा हामर, ओहेतरी) तोर मनटा ई बात टोते मतर एकदम थिर पानी बइन जाहउ।

मेंतुक, आर हाम आपन मनेक ऊ फहम टा छपवे नाँइ पार–हिए जे हामरे चलते तोर मनटा। थिर भेलोटा हाम बुझहलिए जे तोर मइधें कुछ दोस रहउ आर कभीं–कभीं तो इहाँ तक हाम भाइभ बइसल हलों जे होवे पारइ, हाम तोराँ आँइखेक काँटा लगहिअउ, तोञ हामराँ आँखिक तर देखे–देखे नाँइ खोजेहें। आर कते–कते, कि–कि !

दोसर लोकेक पटतइरें तोञ आपन मइधें कइगो अजगइबीं बाइनो तो बंइदवल हें! जे रकम, साधारन मरदेक तुलनाञ तोञ कचिते कोन्हों आन जनिक आँइख भोइरे के थनवेहे, बिसेस काम–दरकार छाड़ा–से 'इंद्रेंक आक्छरिए' राहोक ना ! सइले आन लोकेक धापें हाम्हूँ बुझ–हलिअउ जे तोञ के–जान नाटके करेहें।

हामर पूछल में एक–दू बइर तोञ फरनइबो करलें जे तोञ समाजेक कोनो बातें, कोनो दायें जनी ले मरदे के बेसी दायी बुझहें। आर जे रकम कोनो एके गो दोस–गुन्हा ले परिबारेक मइधें बोड़ (बेसी बुतावाला) छोट बा कम बुता वाला छउवा के बेसी रागल जाहे–सइए रंग समाजेक कोन्हों खारापी–खोट–खयातन ले जनिक पटतइरें तोञ् मरद के बेसी दायी बा दोसी बुझइत रहे हें !

जदि हाम कहियो, कहियो देतलिअउ जे तोर ई बाइन गुलइन जे आनखाइ बात! ना देखल ना सुनल ! तोञ ई बिचार किले राखेहें, लोकें जे होही उड़इब्थुन।

तब तोञ जबाब दे हलें जे तोञ ऊ सिंधांत, ऊ सेरेस्ता के माने हें जकर मइधें बा जेटाक मतें मानुस–मानुस के मानुसे बुझल जाइ। बेसी आर कम सुतार पावेक हकदार बा छोट आर बोड़ नाँइ।

एखन, तोर ठिन रहइते पढ़ल–सुनल ई बतिया हाम गहे पारे लागल हो जे ना कि आयाँ समाज बिगियानेक डहरें अइसने मानल जाइ पारे। मल्किन हाम आपन बापघरे से बिगियानेक नामें तो घिन आर गाइरे गगदाइल देखले–ओनवले आइल हों। जेटा के

एखन आर 'गदगदाइल' नाँइ कइह के 'गजगजाइल' आर 'गिजगिजाइल' कहेक मन करे हे। मेंतुक तोराँ बिगियानेक बिचारेक मनवइया रूपें टोइ के हामर बाप–भाइ आर ओइसने चाकर–चिकन आर 'चालू' लोकवइन तखन तोराँ गादा–गादा गरिआइ के थइया करहल्थुन, आर तोर नामें पेचेक–पेचेक थूँक–हल्थुन। तो ई भेल ऊ परिस्थितिक परिचइ, जकर माझें हाम बाढ़लों, जोवइलों तो हाम कइसें बुझें पारतलिअउ, तोर मतें दुनिआइ बेंढ़ा आर हामर बुझाञ दुनिआइ छाड़ा ऊ बात–बाइन आर काम।

आर एको बात बड़ी घुइर–घुइर घमवे लागल हे जे तोञ हामराँ पढ़वे–लिखवे आर झालाझालि करे–करवे लें कते–कि नाँइ, किरी ले कोरी तक कोसिस करलें ! आइज से पन्दरऽ बछर आगुवे ले, माने जखन हाम बीसेक पासा–पासी रहीं तखने ले। हामराँ आपन गोड़े ड़ँडवेले । मल्किन हाम तोर से बोड़ बाइनेक बातियाखुँ तोर बोकामु आर बाकरइतिए बुइझ लेल हलिअउ !

पालु, हामर पालु ! कि हाम कहबउ तोराँ, एखन हाम बुझे लागल हिए जे हाम तोर ले सास्ती नाँइ पाइके उल्टे तोरे सकत सास्ती देले आइल हिअउ ! एहे टे हामर एखन के पुरका–पुरकी पछर !

मेनेक हाम जानहिअउ जे तोंय हामराँ जरुर माफ कइर देबें। किले कि आइज तक ले हामर दरजनों बोड़–बोड़ गुन्हाँ सुगुमउले माठले माफ करले आइल हें। हाँ–हाँ, दरजनों गुन्हाँ आर सेउ अइसन–अइसन गुन्हाँ जे ओइसन एकक गुन्हाँ पेछाञ एकक गो बा आरो बेसी मानुस–बिसेसें जनिए–मारल गेलहथ, हामर तखनेक से 'आदरस' समाजेक हाथें, कोन्हों तरी से गुन्हाँ धरल में। माने कि हाम एकाइ एते गुन्हाँ तोर प्रति आर सइले मानुसेक प्रति करले आइल हों जते गुन्हाँ दरजनों मुड़ लेले आइल हे आर एखनो लइ रहल हे।

आर सइले, हामराँ तोञ माफ कइर देल बाधूँ हाम आर आपन के माफ करे नाँइ पारिए। मेंबक जदि हाम कचित बाँइच उठलों तो अब से तोर पुटी मनें–देहिं कोनो रकम तोराँ चेंदे नाँइ पारतउ। आर तोर अड़गुड़ ओड़गोड़वा कामें जते धूर संभब, जरूर पीठहाँथा देतउ !

ई कि ! अब तो बुझायो रह हे जे केजान ई बिसटा हामराँ सेसवे नाँइ पारतक नाकि। किले कि बिसटा खाइल बाद गोड़ाक (डेढ़–दू घंटा से जे तरी गात मोचरानी, ओकोल–बोकोल आर बेकोल टा तातातातही बाढ़ले गेल रहे–लइसन तो आर नाँइ गमाइ रहल हे करीब–करीब आध घंटा से। तो बिस टा के जान आपन जाऽ मतर गात टा के झोंझइर के अब गात टाक बसीं आइ जाइ रहल हइ के जान। एखन ओकर से बनबनियाँ बेग टा थाकि–थाकि थिराइ लागले हइ जे। आर अब रसें–रसें रिचि–रिचि गात मोचरानी टाक थान मेंदमेंदी आर जलाचार आलइते ऊ अनकुर अबस्था टाक थान निसाक नींदेक मातु–मातु, घोर–घोर अबस्थाञ लिए लागल हइ जे।

बुझाहइ तोर फुटी बाँइच गेलउ ! हाँ तोर पुटी ! अबरी सुधे तोर। माने–मनें मथाञ् मानुस पुटी। गियान्हूँ आर गाथूँ । बाकी आगुक से आजवाइर–अलंजार अपज्जर पुला छुवाइत ! साँप !

❋❋❋

❑ जीबनी

बड़का बुजरूक बिरसा

✍ डॉ० ए० के० झा

छोटानागपुरेक बड़का बीर क्रांतिकारी बिरसाक जनम 15 नवम्बर 1875 ई0 उलीहातु गाँवे भेल हलइ। ओकर माँञ बापेक नाँव भरमी आर सुगना मुंडा हलइ। बिरसाक छउवा बेरा बहुते गरीबी में पार भेलइ। सई खातिरो ओकर पोढ़ा–लिखा बेस सिरें नाँइ होवे पारलइ। जोदियो बा बिरसा बेसी पोढ़ा–लिखा नाँइ करे पारल (कितापेक गियान) ताउ परकीरतिक कोराँञ रइह के जे पढ़ा पढ़ल ओकर से छोटनागपुरेक गउरव पाहारेक मुँधना ले बेसी ऊँचा भेलइ।

वइसन बेपटतरिया बड़का बीर 'क्रांतिकारी' बिरसा के धोखा से, आपन दलालेक जोरें, गोरामहापरभु चाहे पाँड़रा परभु (अंगरेज़) सब गिरफ्तार करल्थिन आर राँची जेहलें भोइर देल्थिन। जून मइहनाँञ माने 9 जून 1900 ई0 से सुरू में परचार करल गेलइ जे बिरसा के उबाँइत पोखइर (हैजा) भेल हइ। तकर बादें आठ जूनें बिरसा निफुट भइ साँठाइ उठलक। मेनेक 9 जूनेक झलफलिए परचार करल गेलइ जे बिरसा गइर आर अलाचार भइ गेल हे। फइर सेहे दिन अड़बेरिया ले परचार करल गेलइ जे बिरसा सिराइ (मृत) गेलक।

अइसन अजगुत आर अजगइबी खभइर से बुझनगर लोक चोकाइ उठला–ओखनिक पाँड़रा परभु सभेक अइसन परचार के ओतन–पोतन (आलोचना) होवे लागलइ। पता चललइ जे उंटा पाँड़रा परभुक सरकारेक फरफँदिया चाइलें–बिरसा महान मोरल नाँइ ओकराँ मोरवल गेलइ।

मानुस परेमी लोक सब डाक्टरो सभेक मत के पता करल्थिन। जानल गेलइ सरकारी कुटवाइले के भेउ गुलइन । से ले झारखंड परेमी आर मानुस परेमी लोकेक करजिक साड़ा देखा तो आइझो को रकम बाहरा हे।

के कहे बिरसा के मोरल,
ऊ तो हे मने मथो भोरल !
बिरसाक करनी दगदगा हे,
बिरसाक नाम्हीं जगजगा हे !
पचीसे बछर उमइरें बिरसा,
पाँच सौ के करनी करलक !
चेंदाइल लोकेक चिन्हा चेठा के,
हुलेक हुबें टानी धरलक !
सुगना आर भरमिक बेटा,
बेपटतरिया बीर बनलक !
जकर राइजें बेरो नाँइ डूबे,
तकरो हरनठ कइर छोड़लक !

हे 'क्रांति' के रंफ तोराँ,
अनगइन–झनगइन,
दिनगइन जोहाइर !
तोर आलो नाँइ निझइतउ
कतनो करे केउ कुऽ कोंचाइर (हल्ला) !
जोहाइर, जोहाइर, बिरसाक जोहाइर !!!

आइझ तक के इतिहासें पाइ अइसने हे भेल आइल हइ ! सासक बिधाता सब अइसनेहे करल आइल हथ। अइसन इतिहास बनाइ देल जाहे आर आयाँ अरथें ज़ेखिन इतिहासेक चाका के आपन अजगुत उपगारी कामेक जोरे गुड़गुड़ाई के आर गड़गड़ाइ के चलवइत रहथ। ई खामखेयाली इतिहास ले सेखिन के दइहनाइ देल जाहे। मुदा दोसर बाटे ओइसन हुबगर लोकवइन आपने हे इतिहास बइन जाहथ – आयाँ इतिहास, जीउगर इतिहास।

मानुसेक बिकासेक आर आजदिक हुबेक इतिहासेक एगो चमचमियाँ अधियाइ हे बिरसा महानेक सदा जुवान जिनगी – पचीसे बछरेक जिनगी – मेनेक एतने में पिरथिबिक अन बिसरवा आयाँ इतिहासेक ऊ डागर डेरका डाँड़ी बइन गेलक तभी तो उपरेक कबितवें कहल हिअइ जे कते–कते लोक पाँच सउ बछर बाँचे गेल्हुँ अइसन अजगुत उपयोगी बड़का–बड़का काम सबके करे नाँइ पारतला, तइसनेहे महान काम के बिरसा छोट–मोट उमइरें कइर देखवल। सइ ले बिरसाक बीतरताक बखान करइतें एकठिन कहल हिअइ–

"मोरेक मुंध मरमें मातल बिरसा,
जकर डरें फिरंगी फिर–हला दिसा (पखाना)।"

मेनेक बिरसा के से आयाँ "क्रांतिकारी" महान रुप टा के उचित गउरब नाँइ देल गेले हइ – बेस भाभें पइरचवल नाँइ गेले हइ।

हियाँ केउ–केउ कहे पारथ जे बिहार आर भारत सरकार तो बिरसा के बहुत बड़का मान देले–हथ। एकर ले बेसी बात आर कि होवे पारे जे बिरसा के भगवान कहल जा हइ। मेनेक, ई लेताइरें लोक के बुइझ लिएक चाही जे, एहटाइ तो भेलइ असल बीड़ा–बीड़िक बात। जे कोन्हों क्रांतिकारी के भगवान केइह के परचार करे गेलें ओकर करांतिक परभाव टा मइलछाइ जाइ। कोनो 'क्रांतिकारी' के आयाँ मानुस रुप टाइ समाजें बेस कामेक परभाव नाँइ परे पारइ। सेहेले गउतम तरी महान करांति करवइयाक परभावटाउ खिआइ गेलइ–भारत ले तो से परभावटा प्राइ–प्राइ सिराए गेलइ।

तो, बिरसा तरी महान 'क्रांतिकारी' बीर सभेक जिनगी से मिलेवाला इंगित आर हुब के सीख 'छुमंतर' कइर दिएक एहे भाँड़ चेस्टा गुलइन से साबधान होवा जरुरी। जे में समाजेक मनें बेस आसरा जनमे जे, ओखनिए रकम बड़का–बड़का काम सबके आरो लोक करे पारथ। जे हामनिए रकम साधारन मानुस ले आगु बाइढ़ के आपन जगजगिया जिगिस्ताक जोरें बिरसा रकम ओइसन लोक गुलइन महान 'क्रांतिकारी' बइन जाथ–आर, आरो लोक से रकम बने पारे! करे पारे !

अइसने भाँड़ चेस्टाक बिरोधे–मोजेस गुड़िया कहल हथि जे, बिरसा कोनो धरम पइरचवेवाला लोक नाँइ रह–हलक। ऊ तो एगो खूभे बड़का 'क्रांतिकारी' रह–हलक आर क्रांतिए हलइ ओकर धरम ।

'क्रांतिकारी' लोकेक 'क्रांति' के काम ले उपजल परभाउटा के मइलछाइ दिये ले चाहें गुचाइ दिए ले कते रकम जनबिरोधी कुटचाइल चलल जाहे। एन०ई० होरो ई काम के 'चरित्र हनन' के नाम देल हथि।

कहे नाँइ हतइ जे झारखंडेक कते–कते महान बीर आर आजादिक जोधा सबके इतिहासेक पाता ले छिगराइ दिएक जिगिस्ताक पेछाहूँ अइसने भाँड़ चेस्टा रहल हइ। सेहेले सिनगी दई, चंपा दई, कइली दई, गया मुंडाइन .... आरहो हेन–तेन महान इतिहासी काम करवइया बेपटतरिया बीर जनी गुलइन के सरकारी इतिहासे उचित थान नाँइ देल गेल हइ। आइझ ओखनिएक इयादें झारखंडे 'जनी सिकार' मनवल जाहे। मेनेक ई झारखंडी लक्ष्मीबाई गुलइन के सरकार एखन ले उचित महत आर थान देल नखइ–देसेक इतिहासें ओखनिक कामेक से रकम जगजगवल नाँइ गेले हइ। हुँदे फइर बिरसा सहित आन–आन अमर करांतिकारी बीरो सभेक इआद के भारतेक इतिहासें आयाँ सम्मान नाँइ देल गेले हइ।

कुछ लोके बिरसा के अन्ध बिसुवासी रकम देखवेको कुटचाइल करल आइल हथिन। से ले अइसन झूठ बातेक जोरगर बिरोध कइर के सही बात के जानेक चाही।

बिरसाक महान मानबवादी 'क्रांतिकारी' गुनटा के धरम परचार के रकम बुझा टा भारी भूल। ई बात के सब के बुझेक चाही आर मने हुब धरेक चाही जे जेखिन के जगत कुछो नांइ देलइन, ओखनियों बिरसा तरि बहुत बड़का समाजी काम कइर सक–हथ, करले आइल हथ आर आगुवो करे पारथ।

❋❋❋

12

पारस नाथ महतो

31 जुलाई 1952 इस्वीं पारसनाथ जीक जनम राँची जिलाक ओरमांझी थानाक हतवाल गाँवे भेल हइखिन। तोहर माञ पंचमी आर बाप झुबा महतो एगो बेस तलियाइल किसान बेगइत। सुरूवे ले तोहें पढ़े में चनफनिया आर चेठगर। तोहें हुइबेक जोरें बी०एस०सी० पास कइर आपन मातरी भासा खोरठा से एम०ए० राँची विश्वविद्यालय से करल्हे। हिंयाक माटिक दई के तोहर बड़ी टान। एहे लेल हियाँक मानुसेक हितें हियाँक खोलल 'कॉलेज', स्कूलें, तोहें बड़ी मदइतगर साबित भेल्हे। तोहें एगो बेस करमी समाज सेवियो लाघे। एखन राम टहल चौधरी कॉलेज ओरमांझी में तोहें उप–प्राचार्य पद के सीमा बढाइ माटिक छउवा–चेंगइर के सिखित कइर एगो बड़का काम कइर रहल हा।

आपन जनम थान माटिक टानें तोहर धेयान अमर सहीद सेख भिखारी के उपर गेलो। तधिये से तोहें सेख भिखारी के अता–पता, टावा–ठेकान करे खातिर उता–सुता करे लागल्हे। बड़ी खोइज पुछाइर करल परें भारत के आजादिक सिपाही आर छोटनागपुरेक माटिक सपुत सेख भिखारी के जनम से मोरन तक अमर गाथा तोहें पइल्हे, से हे कइहनी खाँट रूपें हिंया उखरवल गेल हइ।

❑ *जीवनी*

सेख भिखारी

पारस नाथ महतो

ई जगतें केउ इतिहास लिखे हे, केउ पढ़े हे। ई दुइयो से कठिन कल जे आपन जिनगानी टा इतिहास बनावे हे। इतिहास बनावे वाला बिरसा मुंडा, बिसनाथ साहदेव, गनपत राय, नीलाम्बर, पीताम्बर, कइली दइ सिनगी दई संगे–संगे सेख भिखारी केरो नांव जुटल हइ।

सेख भिखारी के जनम 1819 इस्वीं तखन के ओरमांझी एखनेक सिकेदरी थाना खुदीया लोटवा गाँवें नाँवजइजका जमींदार घरे भेल हलइ। भिखारी के परदादा (आजा) जलाल आँबरागढ़ेक चउकीदार हला, कि बेटा बिलन्दु बड़ी बीर आर बाहादुर हला। बाम्हन पुरोहितेक कुटि–चालीं एकर परिवारेक सभे सदइस के मोराइ देल गेल हलइ। गाछेक जइर रुपें छोट छोउवा बिल्न्दु झुर तरें नुकाइ सभे खड़जंतर आपन आंखी देइख लेल हलइ। काशीनाथ महतो के परिवारें ई बाढ़ल आर बाढ़ल तो बहादुर रुपें। आपन दादा के ई बहादुरी देइख–सिख पहलवान के बेटा सेख भिखारियों लइ गले बहादुर भेल जे ककरो धा नाञ सहले।

एकर बहादुरी देइख खंटगा के राजा उमराव सिंह आपन सेख भिखारिक देवान बनवल। मुदा सइ संवई रहे 1857 के बारीक नामी गदर। संउसे भारतें अंगरेज सरकारेक सिपाही सब विद्रोह कइर देला। जकर में झाँसी के रानी लक्ष्मी बाई, कानपुरें, तात्या टोपे, मंगल पाण्डे, बिहारें, कुँवर सिंह आरो वीर सब एकर नेतागिरी करे लागला। छोटानागपुरो में विद्रोह के आइग उठल। एकर संघीं चुटुपालू घाटीबाद। भला जुग से आजाद उड़ल

चेरंइ कहुँ खाँचा में बंद रहे वाला हे ? उमरांव सिंह, घासी सिंह के संगे–संगे सेख भिखारियो गोरी सरकारेक गुलामी / तवरपी करेले आपन आदमी सब के बारन कइर देला। फइर सुरू भई गेल आजादी के लड़ाई।

चुटुपालू घाट ले चाडू तक अंगरेजी फउद के हटाइ देला। चाडू घाटें तो बड़का जबर गाड़हा बनाइ देला जेमें–अंगरेजी फउद पार नाञ हवे पारथन। सेख भिखारीक मदइत लइके डोरंडा फउद के जमादार माधो सिंह आपन सिपाही सबके 'विद्रोह' करे खातिर उकसवला। ई सब के तोप के डरें राँची के अंगरेज कप्तान ग्राहम आपन तीन गो अफसर लइकें हजारीबाग भाइग गेल। आपन जान के तनिको केयार नाञ कइर विद्रोही सिपाही सबके सेख भिखारी बड़ी मदइत करले नतीजा राँची सहर ई सबके कब्जा भइ गेल। तखन बिसनाथ साहदेव के छोटानागपुरेक राजा बनवल गेलइ। सेख भिखारी के संगे आदिवासी के संगे–संगे मोमिनो बहादुर लड़ाकु रहन। ई आजादिक सुड़सुड़ी सुइन छोटानागपुरेक कमिश्नर डाल्टन पिठौरिया के डहरें बगोदर भाइग गेल। 1772 ई0 से चइल आइल अंगरेजी सासन 2 अगस्त 1857 के दिन छोटानागपुरें खतम भेल।

दोसर सेख भिखारी के उमदा काम हल। सिख फउद के फुसलावे वाला। राजा बिसनाथ साहदेव के चिठी लइ चुपें–चुपें सेख घहुँइच गेल सिख फउद के मेजर बिसन सिंह के नजीकें आर कहल – "अंगरेज सबके मदइत करा टाटका गँवारू काम लागो। हमर देसेक कोने–कोने ई गोरवइन के विरोध कइर रहल हथिन आर तोहिन नाञ जाना हाय।"

तेसर दमगर काम करला कि संथाल बिदरोह के आर उकसाइ देला। जकर में सिधु–कान्हू के भड़कावल आइग अंगरेज के बिरोधें आर लहइक उठल। सुरेन्द्र साही के अगुवाइ में हजारीबाग के दुइयो जेहलखाना तोइर देला आर संथान बिदरोही सब बाहराइ गेला। सइये संवई जखन जगदीशपुर के बाबु कुँवर सिंह बिदरोह करला, हिंदे कुटिचाइल आर खड़जंतर कइर अंगरेजी फउद राँची चँहइट गेला। राँची से एलान भेल कि जइसने होक सेख भिखारी आर राजा उमराव सिंह के घइर लेब बा माइर कें फेंक देब।

23 सितंबर से 20 अक्टूबर 1957 तक ई झारखंडेक ढेर आजाद सिपाही फांसी में झुइल गेला। सेसें दुइयो धराइ गेला। उमराव सिंह आर सेख भिखारी–दुइयो ई धरतिक लाल के खुइने धरती लाल भइ गेली – से दिन रहे 6 जनवरी 1858। जघऽ रहे टैगोर हिल (राँची) के नजीकें एगो गाछ। मोरल परे अंगरेज मेजर मेकडोनाल्ड दुइयोक लास कर चुटूपालू आना करवलइ आर आस–पासेक गाँवेक बिदरोही सबके देखवे डरवे आर धमकवे खातिर 8 जनवरी के एगो बोर गाछें लसवइन टाँइग देलइ। सई साखी बोर गाछ जकर एखन नाँव फंसियाहा बोर हके। सइ गाछ के एखनो एगो चिन्हा रूपें हुवाँक आदिवासी गैर आदिवासी लोक देखहथ।

एखनो ओकर जाइल–जनमल बाँचल हथिन, मुदा केउ पुछे वाला तक नाञ। भारत माँयेक ई आजादिक सिपाही सेख भिखारी के घर धँइस रहल हे। ऊ अरगुंजल बोने एगो आलो जनमल हल जे ऑलोञ बोनेक डहर सुझऽ हल से हे बोन आइज आँधारें हइ। देखा जोदि केउ तनी आधेक आलोक चिनगीनी लइ हदकवे पारे तो बोन फइर इंजोर भइ जाइत।

***

13

सुकुमार

साँवर रंगेक एकहरिया गात। बेस हुइबगर, चनफंनियाँ आर चेठगर। जेरंग नाँव सेहे रंग सुकुमार मोहड़ा। सुकुमार जी के जनम 2 नवम्बर 1956 ईस्वीं गिरिडीह जिलाक भेंडरा गाँवे भेल हलइन। माञ राधा, बाप बिस्वनाथ बेगइत के ई दुलरवा छउवा के जान हल कि एकदिन ई खोरठा छेतर के सपुत सुकुमारेक गीत कुल्ही–डाँड़ी पोखइर पिडीं आर बोनेक झुरें पातें गुँजत। हाँ, सइबत। राँची रेडियो ले इनखर सुमधुर गीत आइजो बाइज रहल हे। परवेसिका पास करल सुकुमार आपन 'स्वाध्यायें' हिन्दी आर खोरठा में बेस गियान अरजन करल हथ। दुइयो भसवइनें ई कबिता, निबंध, गीत, उपनियास आर नाटक लिखल हथ। 'पत्र–पत्रिकाहुँ' इनखर रचना छपल आइल हइन।

'हरिशचन्द्र तारामति', 'ज्वाला दहेज की' (हिन्दी नाटक) उर्मिला प्रकाशन भागलपुर से छपल। खोरठा नाटक 'डाह' कते बेर गाँवें खेललो गेल हइ। संगे–संगे सुकुमार जी एगो बेस 'चित्रकारी' लागथ। बिहार /झारखण्ड सरकारें ई सेवा करल बादें एखन खोरठाक सेवाञ लागल हथ।

ई रचनवें गोटिना खोरठा नाटक 'डाह' से ई एकांकी पइचल गेल हइ। 'विवेक' (कारखानाक मजदूर) आर 'सेखर' (खेतिहर) दुइयो भायेक कुटीचाइल आर डाही 'बिरा ट' कइसें भिनु करवे हे। से हे देखवल गेल हइ। डाह करलें दोसरो के संगे आपनो मटियामेट होइ जाहे।

❑ *एकांकी–नाटक*

डाह

सुकुमार

खांधा – दू

मोहड़ा–चाइर

(जग्गा आर बिराठ डिपटी से घुइर रहल हथ)

जग्गा – बिराट ! आइझ तोंय करखनें कोन्हों अजगुत देखलें!

बिराट – केकर बारे में कहे हें ?

जग्गा – अरे, ओहे बिबेक के बारे में कहहिउ । आइज छुटी माँगे ले आपिस आइल हल। बुझा हलइ जइसे मउगी से झागरा कइर के आइ रहल हे सइये तरी।

बिराट – उ मउगा, मउगी से कि लड़तक। हामरा तो कोन्हो दोसर निअर बुझइलक।

जग्गा – कइसन ?

बिराट – बुझाहे आइझ जरूर दुइयो भाई टाना–खिंचा भेल हथ।

जग्गा – *(फुसइक के)* आस्ते बजिक। सेखर आइ रहल हउ। *(अखरें सेखर गमाहे)*

बिराट – आइझ बड़ी चाड़े खेत से घुइर रहल हें सेखर। एखन तो बेस तरी पाँचो नाइ बाजल हइ।

शेखर – आब हाड़ तोहर के खटेक जुग सिराइ गेल बिराट ।

आब हाम्हूँ बड़ भाई तरी आठ से पाँच खुँटाइ गेल हों। आब दिन राइत खेतें खटक खेमोता नखे हामर ठीन।

खोरठा गइद-पइद संगरह

विराट – हाँ ! इटा भेलउ ना एगो बात । आर हाँ आइझ तोर बड़ भाई घारें तो नखउ? कहाँ गेल हउ ?

शेखर – कोट गेल हथ।

जग्गा – कोट ! कि खातिर ?

शेखर – हे एगो अइसने बात ।

बिराट – खइर ! इटा तोर आपन नीजेक बात लागउ । नाँइ कहबें तो नाँइ कह, मेंतुक एगो बात कह – तोंय । एखन घारें कोन्हों रकम के झमेला तो नाँइ करल हें केकरो सें ?

शेखर – अब आर सहे के खेमता नाँइ हे बिराट भाई । आब हामरा उ घारें रहना बहुत जुलूम बुझा हे। कुछु बुझे में नाँइ आवे हे जे कि करों ?

विराट – बस – भइ गेलउ सब सत्यानास । आब हामें फुरछाइ के बुझइ गेलों।

जग्गा – की भेलक ?

बिराट – भेलक की ? ओहे भेलक जकर भाभना हल। नाँइ मालूम आइझ–काइल के छउवा सभेक कते दिनें अकिल हतइ ? आब देख ना कचकच । हिंदे सेखर से तनी कहा सुनी भेलक हुँदे बिबेक के कान खड़ा भइ गेलक।

सेखर – तोहर कहेक मानें ?

बिराट – जोदि तोंय एतना छोट–छोट बात के बुझे नाँइ पारे हें तो तोर घार दुवाइर कइसें चलतउ। आच्छा बताउ तो कहीं तोंय घार–दुराक बाँटा–बाखरा करे खातिर तो नाँइ लड़ल हें ?

सेखर – जखन भाई केरे मन पलइट जाइ तो करल की जाइ ?

बिराट – सेटा तो बेस बात लागइ। तोंय जोदि लड़ल हें तो आपन हक खातिर लड़ल हे, मकिन एहटउ तो भाभे हतउ जे, जे तोरा काइल पीठ देखवल हउ उ तोरा आइझो देखवे पारउ। कि तोंय बइजके पारें जे इ समइयें तोर बोड़ भाई के कोरट जाइक की दरकार परलइ?

सेखर – हामरो तो कोन्हो बुझे में नाँइ आइ रहल हे एतेघरीं।

बिराट – तोंय जोदि एतन बुझनगेर रहतलें तो तोरा दुखे की हतलउ ? जब कि तोंय जमी–जघऽ के बाखरा बाँटे खातिर आपन भाई से झागरा कइर के ओकर कान के खड़ा कइर देल ही, सोचे पारें जे तोर भाई एखन कोरट ई खातिर गेल हतउ जे में ऊ आपन बाटेक सभे कागज–पतर आगुवे से मजगुत कइर सके। इटा छोइड़ आर कोन्हों कारन होवे हे नाँइ पारे एकाइ कोट जिबाइ।

जग्गा – की दुइयो भाई के माँझे कोन्हों हिंटा–हिंटी चइल रहल हइ नेकी ?

बिराट – फकरें रह ई सब के जग्गा । बेकार माँझे हामनी छँटइबें। जेकर चुव–हइ ऊ आपन छारतइ।

सेखर – तो की भाई हामराँ एते धूर तक धोखा देता ?

बिराट – एहे बात तोर मनें आपन भाई खातिर आगुवो हलउ ने ? जे तोरा पेटें छुरा मारे पारइ ऊ पीठूँ मारतक–इटा कोन्हों अजगुत नाँइ।

सेखर – ओह ! ई तरी आर कोन्हों नाँइ हामें फूँचाइ–जाइब । हामराँ ई दूइयो जनी मरद मिल के जनमेक मुरूख बनाइ के राखला। ना दुनिआइ देखे देला ना बुझे देला।

बिराट – तकर मजा आइझ बुइझ रहल हें ने ? इटा कोन्हों भाँड़ेक बात तो नाँइ लागइ?

सेखर – आब जे की करों–कंदे जाउँ कुछ बुझे में नाँइ आइ रहल हे।

विराट – (मोट निकास फेइर के) – तोरा एगो बात कहहिअउ मानवें।

सेखर – देख भाई – तोंय कोन्हों अइसन–तइसन नाँइ बुइझ लिहें। बात उठल हे तो बजिक रहल ही – नेतो हामरा कथिक धक हक। हमें कहबंउ खर्रा चाहे गोली लागउ चाहे छर्रा ...। हाँ – कि कहे खोज हलों – ए ..... तोर घारें बंधुक हउ ने ?

सेखर – ब .... ब ..... बंधुक हे तो मेंतुक एकर से मतलब ?

विराट – हा ! हा ! हा ! हा ! हा ! हा ! तनी देखीं जग्गा सेखर के। सुधें बंधुक के नामें एकरा छइट दिए लागल हइ। ई लोक कधियो आपन जिनगी में कुछ करे पारतक ?

सेखर – मुदा बंधुक तो हामें चलवें हे नाँइ जान–हों – ऊ तो गइर–मउकें भाइ चलव–हथ।

बिराट – बेकुफ कहीं के । तो कि हामर कहेक एहटे मानें हलइ जे तोंय आपन भाई के जाइके गोली माइर दिहीं ? एकर से तोरा फइदे की हतउ ?

सेखर – तबें ?

बिराट – तबें की ? अरे ऊ तो हामें एगो तोरा उपाइ बतव–हलिअउ। तोर भाई कोरट गेल हउ ने। ओकरा आवें दिहीं। फइर जब उ एकाइ घारें रहतउ – तखन तोंय कोन्हो तरी बंधुकवा निकाइल ले आर तनी डीगर नियर–अइसन नाँइ एकदम कोंकइरे – के बाझल रावे ! तोंय जो, आपन भाइयेक भीर । आर आपन बाखराक सब कागज पतर ओकिल के बनवाइक संगे लेले जो। आर जाइके ओकर आगु तर राइख दिहीं, आर कहीं की एकर में सुगुमबेंर सही कइर दे ने तो आइझ हामें फइसला करिएक आइल हों – आइझ या तो आपन बाखरा लेबउ – ने तो तोर जान। तनी छइब करिहें हुवाँ । एकर से होवे पारइ जे तोर भाई दबइर जाउ आर तोर कागजवइन में सही कइर देउ। बुझिहें जे साँपो मोरतक आर डाँगो नाइ टूटतक।

जग्गा – माइन गेलिउ बाबु गुरू तोरा ! कि दिमाग खटइलें हें।

बिराट – मुदा सेखर अइसन करे पारतक तब ने ?

सेखर – *(मुसइक के)* हाँ अइसन कइर लेबइ बिराट भाई । ठीके कह–हक तोहें। हामें आइझे साँझी ओकिल साहेब ठीन जाइ के कागज–पतर बनवाइ लेहों।

बिराट – हाँ जाइ ने। अरे बाबा जमी–जघऽक ई जुगें हइथवे खातिर कते किसिम के ददेज उठवे परे हे इटा तोंय की जाने गेले। एखन तोर उमइरे कि भेल हउ। तनी सुन जोदि ढीठ बने पाइर गेलें तो फइर जिनगी भइर चीची भात रहतउ। आर तोंय आपन बड़ भाई के कोन्हों माइर थोरे रहल हीं। ऊ तो छुछे एगो छइब करमीं तोंय।

सेखर – ठीके हइ, तो हम जाही ! *(चइल आ हइ)*

जग्गा – *(फुसकल भामें)* ई तरें–तरें दूइयो भाई के कते दिन से झकझक चइल रहल हइ?

बिराट – मुदा अब ढेर दिन तक आर नाँइ चलतक। साला बिबेक, फोरमेनेक पूँइछ बनल हे। आब तोंय छुछे देखले जो जग्गा, जे ई घार की तरी घोंघराइ जा हइ हा .. हा ... हा ! भाइयें–भाइयें फूट कइर बरबाद नाँइ करलिअइन तो हमर नामे बिराट नाँइ हा.. हा .. हा .. हा।

1

भुनेश्वर दत्त शर्मा 'ब्याकुल'

तोहर जनम 1895 ईस्वीं हजारीबाग जिलाक बिसुनगढ़े भेल हलो। सइ समइए हिन्दी साहितें भगति आर सिंगारेक रचनाक जुग हलइ। मुदा, देसेक सासन गोरा महापरभुक हाँथें रहइ। छोटानागपुरेक धरतिहुँ 'ब्रिटिस–साम्राज्य' के बिरोधें उलगुनान सुरू भेल हलइ। से ले ब्याकुलजी भगति आर सिंगारेक रचना छोइड़ देसेक आजादी खातिर गीत आर कबिता लिखे लागला। तोहर बहुत रचनागुलइन कालेक खोहें एखनो कहुँ चाँताइल–चिपाइल हउ, जकरा बाहर करेक दरकार हइ।

जनकबि ब्याकुलजी 'अंतजातीय' बिहा करला, जकर खातिर सामाजेक कडा विरोध सहे भेलइन। तावो कबिक मने जाइत–पाँइत, ऊँच–नीचेक परति विरोध बाढ़ल गेलइ।

तोहर रचना सँवइ–सँवये बिसुनागढ़ेक 'सुखद खोरठा साहित्य कुटीर' बाट ले बाहराइल हउ। तोहर रचनें परेम, बिरह, गियान, माँएक महातम आर दुलारेक भाव भोरल हउ। ब्याकुलजी 17 सितम्बर 1984 में सिराइ गेला ।

'छउआ दुलार' कबितवें व्याकुलजी सामाजेक बिकास खातिर गाँवेक छउआ सभेक बड़ाई करल हथिन, जे सोब हाँथें पेंसिल आर काँखें पोथी लइ जाहथ।

छउआ दुलार

भुनेश्वर दत्त शर्मा 'ब्याकुल'

हामर बाबु, हामर सोना,
हामर सुगा पढ़े ले गेल !
सुनगे अकली ! सुनगें खगिया !
उँच कलेजा आइझे भेल !

डँड़वे धोंती, हँथवे पोथी,
देहियें अंगा, मथवे तेल।
ठुमकी ठुमकी डहरें चललइ !
देखी के अँखिया तिरपित भेल !

पाटी चिरी सिथा चमकइलइ,
देलइ काजर दुइयो अंखियें !
इसकुलवा में बाबु भगनी,
के छउवइन संगे खेले खेल !

पाटी चिरी सिथा चमकइलइ,
देलइ काजर दुइयो अंखियें,
इसकुलवा में बाबु भगनी,
के छउवइन संगे खेले खेल !

सुनगे अकली, सुनगे खगिया,
उँच कलेजा आइझे भेलइ !
गिरहस्थ के बेटा हरजोतवा,
बोने बोन चरावे गाय।

डँड़वें भगवा मथवें फेटा (पगरी),
घाठा–लपसी मट्ठा खाय !
ओठें खैनी पिच–पिच थुके,
घार–बाहइर अंगना खरिहान !

***

2

श्रीनिवास पानुरी

पानुरीजीक जनम 25 दिसंबर 1920 में धनबाद जिलाक बरवाअड्डा नाँमेक गाँवें एगो साधारण चासाक घारें भेलइ। तोहें 1946 से खोरठा में काइब लिखेक सुरू करल्हें। फिरंगी राइजेक गाँव से देसेक मुकति खातिर कबिता लिखकें तोहें हियाँक मानुस के गाँवेक काम करल्हे। कालिदासेक 'मेघदूत' के खोरठा में अनुबाद कइरकें खोरठाक खेमता के उजागर करे में तोहर सबले बोड़ जोगदान हो।

गरीब, दुखी मानुसेक जनगीक मरम के काइब रूपें तोहें लिखल्हें। तोहर भावें भोरल कबिता में ई छेतरेक दारून दासा के छँटा देखा हइ। खोरठा साहितेक साधना में तोहें काइब, कहनीं, उपनियास, नाटक आरो कते रखम किताप लिखल्हें। तोहर मुइख रचना मे उद्बासल कर्न चाभी–काठी, झींगा–फुल, मातरीभासा, मेघदूत, रक्ते राँगल पाँखा आदि हो। खोरठा साहितेक संगे–संगे हिन्दी साहितेक सेवा भी तोहें करल्हे।

पानुरीजी कई बछर तक 'जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची' के सल्हाकार मंडलेक सदइस रहला। 'आकाशवाणी' राँची बाट ले समयें–समयें तोहर कबिता परसारित भेल रहलो। 7 अक्टूबर 1986 के पानुरीजी सिराइ गेला आर खोरठा साहितेक एगो जुग बित गेलइ।

हिंयाँ 'किसान' कबितवें पानुरीजी चासाक महातम बतवल हथ। कबिताक मतें चासांक चासें सामाजेक जान हइ।

किसान

श्रीनिवास पानुरी

हम किसान,
हम बुनी गहुम,
हम रोपी धान,
हम लगवी आम,
लाल लाल सेव,
कि अनार –
मीठा–मीठा रसधार ।
हाम फूटवी गुलाब, हम फूटवी गेंदा,
खोंइस जकरा जरें, निजें रिझे सुन्दरी –
देइख आइनें मुँह।
खाइ के हमर अन बन्दूक लइके जुवान,
अड़ल हे सीमा उपर बँचवे देसेक सान।

जोदि हाम नाँइ लगवी धान,
तो बेकार जुबानेक बन्दूक–गेआनिक गेआन
'क्रिकेट' कहस कि टेनिसेक खेल,
बड़का बड़का रासटेक मेल।
सभे इन्द्रजाल – नटराजेक खेल
होइ जाइ फेल।
हवा बाँटे जहर,
आर मानुस बने दुसमन,
मेंइट जाइ दोस्ती – हँथियारेक बाइढ़,
चाँद लोकेक दरसन,
आर ध्रुव लोके सपना,
सब होइ जाइ चूर,
दुनिया बने सोसान।
– हाँ जोदि हाम नाँइ रोपी धान
हम किसान
हम बुनी गहुम
हम रोपी धान।

3

महेश गोलवार

जनम – 01 जनवरी 1911
जनम थान – रामगढ़ जिलाक गोला गाँव
निधन – 03 अगस्त 1996

खोरठा आर हिन्दी में लेखन। कइगो पतरिका आर संकलने परकासित। श्रीनिवास पानुरी सम्मान से सम्मानित पहिल खोरठा साहितकार। 'जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग' बाट ले बिसेस सम्मान से सम्मानित।

'जय जवान जय किसान' कबिता में देसेक जवान आर किसानेक महिमा के बखान करल गेल हइ।

जय जवान, जय किसान

महेश गोलवार

'राष्ट्र' के आन–मान, देस के जवान सब
देसेक जवान के परान हे किसान सब।
जान हाथें राइख सगरो घुरे जवान सब,
काम ले जगत उबे, मकीन उबे नाञ किसान सब।
देसेक दुइयो बीसी लागथ सब जुवान, सब किसान।
जय जवान, जय किसान ।।

समुदरेक ढेउवेक गागानिक आवाज घोर,
हड़कँपवा जाड़ कहीं गरमिक ताव जोर,
तरबाइरेक धार सहे, जंगरा जवान सब,
बइरसाक माइर सहे, गतरें किसान सब।
हलदिल नाञ बीर–धीर हइ जवान, हइ किसान।
जय जवान, जय किसान।।

सतरु के बोहवइ लोहू संतरे धाराञ जवान,
घामे सप–सप देही, हँसुआ हाथें किसान।
खेले जवान लोहुक फगुवा, कुटा लखें जीव जान,
बिपइत काइट–काइट काल ठेलइत रहे किसान।
चुप सधवा, बोड़ निडरा सभे जवान–किसान।
जय जवान, जय किसान।।

दुसमन के देइख आरो उमइक उठे बीर,
गात–हाथेक बोलें कोड़े कुआँ पथरें चासा धीर।
पइत साँसें देसेक पहराञ मगन रहे पारे जवान
जोजना के सुघर रूप देहे बेबहारें किसान।
जय जवान, जय किसान।।

बिपइतें देइख संगी के बजर तरी डाँट मन,
चाँड़े गइल मोम तरी हउवे लागेहे नरम,
भुखल जगत के डाकसुइन के किसान भाइ,
राखल–रूखल धान गहुम तुरते देहे लुटाइ।
हाड़ेक भीतर माँजा कठोर गातें कोमल जान।
जय जवान, जय किसान।।

सतरू के छातीं रुप माँचाइ चढ़ी लहुलुहान
सभे बाट ले सभे से जइसन सुरूज महान।
बजर मुठाञ मुइठ धरी मुँह बिदाइरके
हाथिक उपर माहुत तरी सभे भाइ किसान जे।
सुख सान्तिक गोड़ा हइ जवान, हइ किसान।
जय जवान, जय किसान।।

देसेक हितेक तरे मोरे खातिर डाँड़ाइ राइत–दिन
हेंठ माथ करों हम तकरे गोड़ ठिन।
देसेक पेट भोरे खातिर किरिया किसान खाइल
हामर परेम लेवे जुकुर से हे लखें ओहो भेल।
ओखनिक जनम सफल ओखनिक मोरन महान।
जय जवान, जय किसान।।

4

सन्तोष कुमार महतो

कवि महतो जी के जनम 2 सितंबर 1930 में गिरिडीह जिला के गांगजोरी गाँवे भेलइन। 1957 ईस्वीं तोहें भूगोल बिसयें एम०ए० करल्हे, तकर पर 1958 में डिप–इन–एड। तोहर जिनगी शिक्षण कार्य में बीत रहल हो। राँची, बाँधडीह, चास, बोकारो, थर्मल के हाई इसकुलें तोहें सेवा करल आइल हा। खेती–बारी करे में तोहर बड़ी रूचि हो। सामाजिक कामें तोहर सेवा भुले नाञ पारतक, गाँव–घरेक लोक। डी०वी०सी० उच्च विद्यालय चन्द्रपुरा में सहायक प्रधानाध्यापक रूपें सेवानिबरित। संतोष कुमार महतो जीक मिरतु 24 नवम्बर 2013 साले भइ गेलइ।

"एक मउनी फूल" खोरठा काइब संगरह उनखर एगो 'चर्चित कृति' हइ।

'एखनेक जिनगानी' कबिताञ अतीत कालेक सुख आर बरतमान कालेक दुख के बरनन करल गेल हइ। कि रंग हरिहर झारखंडेक धरती कल–कारखाना खुइल के हियांक हवा–पानियो मनीन भेल जाइ रहल हे।

एखनेक जिनगानी

सन्तोष कुमार महतो

जे दिन से भेल उठा–पाठा,
भुइल गेलों महुवाक लाठा।
आर नाञ सई भेलवा पाका,
आर नाञ जुटे भैंसेक माठा।
एक काचांइ दू सेर बिलाती
केउ पुछे, नाञ मुराइ बइरसाती।
टाकाञ सोल पइला चार
तखन रहे सस्ता बाजार।

एखन कारखानाक छाइ गिर भारी,
खेतें नाञ धान बारी नांञ तरकारी।
कि–कि देखे हवत ई जिनगानी,
मलीन भेल हमर हियाँक हवा–पानी।

खेत गाढ़ा भइ गेल दान्दइर,
आर से नाञ कुहके गाँवे मान्दइर।
घरेक बाहरें सड़कें बिजली बाती।
मुदा घर नाञ सुझे अमावसियाक राती।

एरे जुवान, माटिक बेटी–बेटा,
एखनो तोहिन करा तनी चेठा।
माञ, माटी भासा खातिर,
आर मानुस के बँचवे खातिर।
उठा तनी चाडे करा,
आपन माटिक मान राखा।
तोहिन केरे उपर आसा।
हामिन के तोहनिक भरोसा।

❋❋❋

5

पी०के० मरांडी (आँथरी)

घार – बड़तुली, पोंगादी (दुमका) जिला संताल परगना

जनम – 1941 के आस–पास

मरांडी जी के देस परेम आर हियाँक माटिक उपर टान बातें–बातें मिले। ई मोटा–मोटी एखन पुरखउती खेती–बारी करिए के काम चलवथ। मेनेक आगु बछर कएक नउकरियो करल हला, 1962 ले 1967 के आस–पास तक बी०आर०टी०एफ० (बोर्डर रोड टास्क फोर्स) भारत सरकार के भीतरें। अबे हजारीबागें रहथ। मरांडी जी जे जोर नारवा भासा (सदानी) के परजोग करथ, उटा खोरठा–सादरी पीठिया भाब के बेस–सिरें फुरछवे। मेनेक मरांडी जी के खोरठा परेम आर झारखंडी संस्कीरति से अपन उतिक भाब के उपर भारत परेम के सुंदर पटतइर हे इनखर कलम आर एहोउ रचनवाँ। मरांडी जी बेस गावोहो पारथ – मेनेक खासें सँउतारी में। एहोउ रचनवें कुछ–कुछ सँउतरी परजोग हलइ, जकराँ उनखर इच्छा मोताबिक खोरठे बनवल गेलेहइ।

❑ *कविता*

बाह रे अंगरेज !

पी०के० मरांडी (आँथरी)

अंगरेज हामनिक चीपल जीवें–परानें,
लहइर फुटाइ देलक गातें आर मनें।
देला ओखिन देखनउटी आजादी,
मुदा भारत के भेलक बेजाञ बरबादी।
ओकर छँइहरें जे आपनो लोक हला,
ओखनियो आपन के नाँइ चिन्हला।
से आजादिक भइ गेल कते दिन,
तभुँ भारत रइह गेल दीनें–मलिन।
अंगरेज आगु आइल हल, बइन के बेपारी,
बनाइ छोड़लइ भारत के, खेपा–अधकापारी।
सिखउलक हामनिक कहेले, यस–नो–वेरी गुड,
धच्चर बनवेक नामें, पोलिस करवल आपन बुट।
अब हामनिक एकें, जुमेक हे, जागेक हे,
अंगरेजी चेलवइन के, दिल के दागेक हे।।

❋❋❋

6

डॉ० ए०के० झा

कवि परिचय पृ0 40 में देखा

चाइल चीन्हा

डॉ० ए०के० झा

महाजन तो बीस लागो,
आर दलाल लागो साँप !
दलाल के चमचम जालें,
भाई नाँइ दीहा झाँप !
दलाल तो भाइ करतो मेल,
कहतो मीठा बात !
जानोहो नाँइ पइभे,
आर करतो भीतर–घात !
दलाल के चिन्हे में,
जदि कइर गेल्हे भूल,
घर–बारी लुटाइ जीतो,
माथा को आर चुइल !
लुटतो मुड़ेक चुइल !
महाजन के सच्चा हित,
आर तोहिन को झुठा मीत,
चाइल–चाइलें भुलाइ लेतो,
एहे दलाल के रीत !

घरें अइतो, संगे बइसतो,
तोहनिक संगे नित !
एके टाकाक काम कइरके,
दस गो लेतो खींच !
धोखा दलाल के रीत !

सभे ठक से, लुटवइया से,
ओकर मेल–मिलाप !
देइख बोका धोखा खाइ
जे हइ ओकर बेस धाक
दलाल के फाँके–फाँक ।

ऊ अंगरेज के बनउलइ बाप
बिसपीपरी बनल बीर बिरसाक !
लुंदरी लुटेकराक बनउलइ बाप
कइर सिनगी दई के सतरक चिन्हाप !

तिस पइसा ठइक के तोरे,
तिन पइसा देतउ दान,
तिने पइसा दानेक जोरें,
बढ़ाइ लेत आपन मान !
धाक जमलें खुइन चुसतो,
गमई लेतो ऊ जान !
लुटे–लुटाइ वालो से तो
पटरी ओकर एके टान !
मीठा बोली आग मुहें
ई लाइ ओकर निसान !
दलाल खेलाइ के ले जान !

सधवइया के दहिना हाँथ,
ऊ भुलवे लाइ कहतो बाप !
ठकेक आगु कहतो बाप ।
सोल–S अनिया हितेक कामें,
आनतो ऊ बड़का बिध्नी !
जमींदार आर धनिक सेवाञ,
नाँइ करतो कमी !

कहतो धन–धरमेक सेवाञ,
मोरियो के बनभे सुखी !
गीहब के कहे भाइगे से तोञ
बइन गेल हें दुखी !
कहज सुन दान–धरम कर,
बइन जीबें जुनजुमात सुखी !
तोर नाम से लक्ष्मी जी के,
कइर कराइ देबउ पूजा !
धरम हतउ धन बाढ़तउ
बिहान बसियाम बफा दूआ !
आर कहतो, धरमें पइसा नाँइ निंघरें
भींजल लुगा अइसन निंगरे !
जखन पइसा फूराइ जितउ,
भारी सुदें देतउ रिन
बइन बइसलउ महाजन,
तोरे पइसा तोरे जमीन !
बइले गेलें तोञ् दीन–हीन !

तोर धनें धुनें–धाधाइ,
करतउ तोरे खाराप !
महाजन तो बिस लागो,
आर दलाल लागो साँप !
दलाल के चमचम जालें,
माइ नाँइ दीहा झाँप !!

7

प्रह्लाद चन्द्र दास

प्रहलाद चन्द्र दास के जनम कतरास के नजीक उदलवनी गाँवें 6 फरवरी 1950 में भेलइ। चासा घारे जनम लेलो बाद बी०एस०सी० तक पढ़ला। तकर बाद इंजीनियर बनला आर एखन बोकारो कइरखाना में उप–प्रबंधक रूपें काम कर हथ ।

दास जी एगो बिदवान बहनी लिखवइया लागथ। हिन्दी के ढेइर बेस–बेस कहनी तोहें लिखल हा, जकर खातिर तोहर बड़ी नाम भेलो । जखन माँइ कोरवा भाखा खोरठाक परति अनुराग जागलो, तखन तोहें खोरठा में कबिता आर कहनी लिखे लागल्हे । तोहर लिखल कबिता–कहनी में भावेक सागर हइ जकर में जुइब के मानुस बहुत–कुइछ पावे पारे।

दास जी हिन्दी पतरिका सृष्टि' के संपादक लागथ। तोहर संपादन के बड़ी नाँम भेल हो। तोहर बहुत कबिता–कहनी परकासित भेल हो। खोरठा के तोहर उपर बड़ी आस हइ। एखन जनवादी लेखक संघे जुटल हा।

मानिक हामर

प्रह्लाद चन्द्र दास

काहे लोर/आँखीं तोर,
सुखाइल मुख/मनझान मन!!
हे मुँहे हाँसी झर–झर, झर–झर,
काहे आइझ काँदू–काँदू ?
झर–हो नाञ एको सबंद
काहे अइसन ?
काहे अइसन, कंगालेक 'रतन'
मानिक हामर ?
हामरो दोस, बुझहों हामें,
मनेक आगी, सिझहों हामें,
निजेक बे–सबुरेक फल,
भोग–हों हामें।

काहे हामर भेल जइसन?
पहिल बेर जखनी देखा,
तखने काहे जइसन बुझलों –
पहिल बेर जखनी देखा,
तखनी काहे जइसन बुझलों,
एते निसछल हाँसी जकर,
मने जकर एते स्वागत,
जरूर पेरमेक नदी हतइ,
मनेक भीतर कल–कल, छल–छल।
किन्तु तकर गंजना खाली,
कारी–सीरी रंगेक खातिर,
निठा बात कहइक खातिर,
निजेक हक माँगइक खातिर ?

रोइज–रोइज केर उलाहनाय,
चेहरा मलिन, उजाड़ भेल,
माटी जइसन कठिन–कठोर,
देइख के काँइद उठल मन,
पेरमेक सोता खेइल के हामें,
पखन दियेक चेस्टा करलों,
मेंतुक लागल लोके आँखी,
मानिक हामर।।

हामर एखन कारावास !
सबूर करहिं कते तभूँ,
मन हामर कलइप उठे हे।
हामें एखन एते धूरि ?

के पूछतो तोर हाल–चाल ?
मन जखन छेक–छातुर हतों कोनो रकमे,
सुबइक उठवे मनें–मनें,
केउ जे नाञ तोर बुझे पारतउ,
मने के बेदना ?

के तोर माथाञ हाथ दइके सांत करतो,
घावेक ऊपर सेंक देतो –
दवाई लगइतो, मानिक हामर ?

हाँ/गीदर–बुतरू जरूर तोर,
बुझनगर केर परिचय देल हथु !
एहे टाय हामर मनेक संतोस !

अब / हामर मनेक एहे इच्छा,
जाहाँ रहि सुखे रहिहें,
मन जखन अकबकाय जितउ,
गंजना केर भार बाढ़तउ,
जरूर तखन हाँक दिहें।

कहीं रहब, कोनो रकम
अइबउ हामें जरूर तखन
मानिक हामर !

जोदियो हामें बुढ़ाय जाइब,
देहें सकति रहत नाञ
जरूर करब, जते पारब
तोर खातिर,
मनिक हामर !!

8

भारत यायावर

8 दिसम्बर 1954 ई. में कदमा (हजारीबाग) में जनमल भारत यायावर हिन्दी साहित्य में एम०ए० लागथ। एखन चास महाविद्यालय चास में हिन्दी प्राध्यापक।

हिन्दी के नाँव जइजका कवि भारत यायावर के एखन तक तीन कबिता किताब छापाइल हइन आर कई गो कबिताक देसी बिदेसी भासा में उल्था छापाइल हइन। साहित्यिक पतरिका – 'विपक्ष' के संपादन आर फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य पर शोध कार्य में संलग्न 1988 में चतरा के साहित्यिक संस्था परिवर्तन बाट के इनखरा नागार्जुन पुरस्कार से सम्मानित करल गेल हइन। कबि यायावर जी 'जनवादी लेखक संघ' के परिचित साहितकार लागथ।

इनखर दू गो खोरठा कबिता 'बखरी' आर 'बसंत राग' हिंया दिअल जाइ रहल हइ। 'बखरी' कबिता सोसन के विरोध में निम्नवर्गीय परिवार के 'प्रतिनिधित्व' कइर रहल हइ। एकर में जमींदार घरेक अतियाचार एगो कामीन बखान कर–ही। 'बसंत राग' में मानुसेक दुगो भाव फुरछाइल हइ।

बखरी

भारत यायावर

हाम बखरी नाँइ जिबो बाबु ।
हाम नाँइ जिबो बखरी !
बखरी में गोबर काढ़ते–हाथ सइड़ गेलो बाबु !
हाम बखरी नाँइ जिबो।
बखरी के बचल–खुछल जूठा खाइत
हाम कब तक रहब बाबु,
हाम बखरी नाँइ जिबो !
हाम जिबो आसाम, जिबो पंजाब
हाम बखरी नाँइ जिबो !
बखरी में माइर खाइत, माँड़ पिजइत
हामर जीवन भेलो भसान!
हाम बखरी नाँइ जिबो !

❋❋❋

बसंत राग

भारत यायावर

उ लांबा–लांबा डेगें आइल।
आँधी उड़वल ।
धूरा आँखीं भोइर गेल।
डहरें चला दाइ भइ गेल।
लाले लाल पारास बोन दहकइ।
एकदम भीतर तक।
हिया तक दहकाइ गेल।

आप्त स्वर : दुनिआइ के माइर परल अइसन।
कि दुनिआइक अइसन तइसन।
अइसन तइसन ई बसंत के।
ई राग के अइसन–तइसन।
कोइली गइली।
बरसों बिना नहाइल जंटाइल चुइल वाली

गंवई स्वर – उ छौंड़ी भी गइली –कुहू–कुहू।
काहे काँदेहे गे कोइलिया।
कते दरद हइ।
के संतवल हो गे कोइलिया।
कि कुछु लुटाइ गेलो गे कोइलिया।
काहे काँदे हें गे कोइलिया।

रीतिकालीन स्वर – ई कोइलिया काँदे नाँइ, गाव–ही !

रीतिकालीन स्वर – अइसने कह–हय कवि !
अइसने कह–हल मदें डूबल लोक –
ई बसंत राग हइ ।
राजाक अगुवानी में गायन हइ।

आप्त स्वर – दुनिआइ के माइर परल अइसन
कि दुनिआइक अइसन–तइसन।

अन्तः स्वरः – मेनेक अइसन–तइसन कइर के
कहाँ जिबें भाई ?
रहबें तोंय हिंये ।
मोरबें भी हिंये।

आप्त स्वर – हाँ–हाँ रहब हियें,
मोरब भी हिंये।
मेनेक ई रकम नाँइ
कि दुनिआइ के आधा लोक
हाजार बछर पेछु बाँचे
आर आधा लोक हाजार बछर आगु।
बसंत कोकरो मने 'मदन' जगवल
आर कोकरो उहरें चला दाइ कइर दे।

9

अनंत कुमार झा

जनम – 1955 ई0

जनम भुँइ – चंडीपुर, कसमार, गिरिडीह।

पेसा – गिरस्थाली।

रूचि – समाजेक कुपरथा के गुचवा, मैनेक परंपरा बाद ले मन पुरापुरी छूटल नखइन। तबे परचारें बिसेस मन नाँइ दइके आपन काम्हीं गतल रहथ । अनंत जी खोरठा छाड़ा हिंदी आर बंगलो जान–हथ।

बरतमान कबिता, 'मरदेक पुथइल' अनंत जीक मनेक मइधें नुकइल हुइलेक सोझ–सइर साड़ाक सकत साबुज हे। जकर में ई सड़वल हथ जे आल बेरा ले मोरेक पहर तक जनिसब मरदेक, 'मरदानी' के माइरे मोरते रह–रथ।

मरदेक पुथइल

अनंत कुमार झा

जखन हामर जनम भेलक
गाँवे–घरें बजर गिरलक !
चाइरो धाइर थोथी उठलइ,
जे फलनाक बेटी भेलइ !

करे–करे हामें बाढ़े लागलों,
माइ–बापेक मन बेथाइ लागलइन!
जइसन कि बेटी जनमा टा,
अनखाइ खाराप लागइ रे !
सभे लोक ओकराँ तो
कहब्थिन आभागाइ रे !

जदि घरें कुछ अभाब नाँइ,
तावो पुरा रहाइ नाँइ,
नाँइ भेलें तो 'अमर रथ',
चइघ के जाइ।

छाड़ा नखइ आन उपाइ !
माइ–बाप आर भाएक अधीन
एते दिन तो रहलों !

बादें जकर नाम न घर गाँउ के
ठेकान सुनल हलों –
तकरे अधीन रहे भेलक,
तकरे हाथें परलों !

तनियो कुन जदि हामर बा,
माँइ–बाप के दोस–भेलइ !
तबे जिनगिक गाड़ी हामर,
गेंद रकम लेब्दाइ गेलइ !

कते सहब आर कते नाचब,
ई पुथइलेक नाच रे !
जे इसपिरिंग चिपो देलइ,
तो नाचे लागलइ नाच रे !

पुथइल को एगो माइन हइ,
मेनेक मानुसें जनि जाइत के,
कोनो नखइ जे माइन रे

हुचुक भेल्ही नाचाइ लेल्हीं,
दुनियाइ में ई जीना के
ना मोल हे, ना माइन रे !

10

बंशीलाल 'बंशी'

कवि परिचय पृ0 12 में देखा

गाँवेक मानुस

बंशीलाल 'बंशी'

गाँव घार सभे छोइड़, बनलों सहरी बाबु।
माँइ माटिक चो–ऽज गेल, आइज भेलों काबु ।।
पेछु आगु एकोतनी, नाँइ भाभलों ठाँवें।
आपन गोड़े छेउ दइ, खोढ़ा भेलों हामें।।
गाँव केर हबा–पानी, छुइट गेलइ गाँवें।
राइत दिन जहर खाहों, दवाइयेक नाँवें।।
कहनी छुटल बुढ़ी दादिक, मगज भेल भारी।
मंहगिक मारीं जनी–मरद, रोइज मारा–मारी।।
आम–जाम केंद महुआक छाल पावा दाई।
पीपर, नीमेक छाँहइर, कहाँ पवइतो भाई।।
गाँवेक लइर दुइट गेल, सहरिया भइ गेलो।
सहरियाक ठाठ राइख, मंहगी चीज खइलों।।
महंगी बसुतें देखा, पथल काँकर पावाइ।
आब्गा जहर कहइत्थु, भेल सुधे पावाइ।।
भेल जिनिस खाइ लोकेक, पेट भेलइ तुंबा।
नाना रकमेक रोंगें, मानुस भेला कुंबा ।।
गाँवेक नाता दादा, मामा मामी मौसा।
सहरें आइके बिसइर गेलों जोरनारेक खिसा।।
एंके ठाँवें रहइतें, सहरें चीन्हा चिन्ही नाँइ ।
भाई कहइतें केउ ककरो, आइज हिंया नाँइ।
बोड़–छोट, उँच–नीचेक, फेचांग दिनें रातीं ।।
धरमेक नाँवे मारा–पीटा, दिनें काटा–काटी।
देसेक सकत करे ले, गाँवें घुरा भाई।
मानुस बइन रहेक ले, मानुस बना भाई ।।

❋❋❋

11

शिवनाथ प्रमाणिक

कवि परिचय पृ0 24 में देखा

पयान गीत

शिवनाथ प्रमाणिक

नजइर खोल रे जुवान,
हँकइद बोल रे जुवान,
भइ रहल तउतन बिहान,
जाग रे जुवान

मानववादिक लउतन लहर,
एकीसवीं सदिक अइतो बतर,
जनी–परद मिल–मिस के,
बढ़ावा देसेक मान । नजइर ....।

लुवाठी लइ जगर–मगर,
धरइले तोञ् सोझ डहर,
गुचवल चल काँटा–कुसाक,
चला मजदूर–किसान । नजइर ...।

बिना भये प्रीत नाञ,
प्रीत नाञ तो रीत नाञ,
समतावादिक रंगे–ढंगे,
कर समाज के निरमान । नजइर .....।

विज्ञानवादिक लउतन लहर,
मानुस धरल चाँदेक डहर,
पोंगापंथिक छिनगाइ के,
सोझ डहर के पयान । नजइर ....।

पूँजीवादिक रगदा जोर,
जातिवादिक पतरी छोड़,
उड़ीस–मखरिक भस्सम कइर,
लहराव निसान। नजइर ....।

बंबरा नियर हदकल छुट,
बिजली नियर मलकल छुट,
जनसकतिक उलगुलाने,
भेल झलफले सोहान । नजइर .....।

12

शांति भारत

कवि परिचय पृ0 27 में देखा

जुगेक मरम

शांति भारत

इंजरिया रातीं हवेहे,
बिहान हवेक भरम,
हा जुग ! बुझे नाँइ पारलों,
तोर सइभताक मरम ।

सँड़क धारीं मोटरगाड़ीं,
चिपाइल कोन्हों मानुस,
कातर भावें माँगेहे मदइत,
आँइख घुराइ चइल जावा,
आइढ मानुसेक करम । हा जुग ....।

चाइरो बाटें हदकेहे,
घिरनाक भीसन आइग,
काने सुना हाहाकार,
धीएक काम करेहे,
आगीं आझिक धरम । हा जुग .....

भेल हइ ओसार नदी,
मानुसेक लाल रक्तें,
देखा, आँइख खोइल,
खाँट भेल जिनगी,
सोस्ता आइझ मोरन । जा जुग .....

भाँगल घार लाचार,
महलेक कटू बेबहार,
हाय, अभाबेक संसार,
अपमानेक ई जुगें,
बाँचत कइसें सरम ? हा जुग ....

धरा उलगुलानेक डहर,
आनेले गियानेक लहर,
धोवेले हियाक जहर,
लउतन इतिहास लिखेले,
मांगा नीति नरम।

ऐ जुग! बुझे हवत आइझ
तोर सइमताक मरम ।

13

सुकुमार

कवि परिचय पृ0 13 में देखा

बेंडाइल सवञ

सुकुमार

दोसी आँइख फोरवा नाञ्
काना कहनिहार
साध खातिर जूताक माला
चोरेक पेंचे हार।।

निमर लोकेक मुड़ हेंठ, डिंगर बनल सांढ़।
देह पोसवा दूध पिये, हाड़ तोड़वा मांड़।।
हार जोते बाँवा हाथ, दहिनाक भेल राज।
बाम मेला खटनिहार, कोरहिक मुड़े ताज।।
पढुवा सब भटक–ऽ हथ, मटके हे मुरूख।
हितकरवाक पतरी में, निकले हे भुरूक।।
मानुस खातिर मोरनिहार, माइर खाइ बुले।
जानमारवाक जय–जयकार, ढेलूवा में झुले।।
गलुवाहा सरग गेलक, गुमनमुँहा हेंठे।
माञ गेली चुल्हाक दुवाइर, मोसिक मानइ बेटें।।
दादाक दीदा रोइज फोरइ, घार फोरवा मितर।
सोनाक पिरहें बइसल लोकें, कानें पिंधइ पितर।।
जेनी भेली गोड़ेक जूता, मरद मुड़ेक मउर।
बोनतरीआ दोतइन खातिर, बइन गेला चोर।।
तेल गरेहेक तेल मिलइ, छूछा छुछुवाइ।
लुइरगरहइन लरकल हथ, लेंगर अगुवाइ।।
मानुस के नेती नियम, हेंठ गेलक नाँइभ।
दुखेक दवाइ कहाँ पइभे, दिले देखा भाइभ।
सवञ सुतल पेटकुनिया, जीवन ताके तारा।
सहे होतो जोदी होभे, तोहें चेठाहारा।।
जानती में आपन गोड़े, गिराइ लेभे टांगा।
सुकुमारें कि करतो, नीजे साभिन जागा।।

14

प्यारे हुसैन 'प्यारे'

'प्यारे' जी के जे रंग नाम सेहे रंग इनखर काम। प्यारे जी के कबितवइन माटिक चेठा, माटिक बेटा–बेटी सब के नींद से जगवेक बात आर पोंगापंथी, खामखेयाली डहर के निंग्छाछोरिक बात पावा हइन। ई लगस्तर खोरठा कविता के साधना में रत हथ। तोहर जनम चंदनकियारी के नजीकें कुसु टांइड़ (पिंड्राजोरा) में 9 जून 1957 ईस्वीं में भेल हो। बाप अब्दुल गफुर आपन गरीबिक चलते आपन ई होनिहार पुत कवि प्यारे के मेटरिके तक पढ़वे पारलथिन। खेती–गिरहस्थी में रांगल प्यारे जी के मुँहें हर सँवइ खोरठा कविता परसफुट होवइते रह–हइखिन।

'डाइन भूतके सबूत नाञ' कबितवा में हामिन के समाजें भोरल डाइन–भूतेक पुरना चाइल के बिरोध करल गेल हइ। ई बिगियान जुगें, ई खाम–खेयालिक बात गुलइन के कोन्हों सबुत नाञ। ई गुला मानुस बिकासेक डहरे काँटा–कुसा लाइ, जे सब के निंग्छाछोरी होवे चाही।

डाइन भूतेक सबूत नाञ

प्यारे हुसैन 'प्यारे'

कंदे डाइन कहाँ भूत,
एकर कहुँ नाञ सबूत,
कथाक–कथा धुत–धुत !
डाइन–भूत सब झूठ।

सोंखा–पीर डाकें तोञ
दोड़ले अइतो दनदनाईं।
भाखा कूँदतो ठाइन–ठाइन
बेजार बढ़ाइ देतो जाइन।

पेंदले दिवतो गोबोर माटी,
धुप–धुना आर अगरबाती।
सिंदूर काजर चिसी–चासी
घरें–दुवाइरें सइरसा झिंटी।

निंगसाई लेतो लुगा–फाटा,
भूते मांगइ जोड़ा–पाठा!
चार–चिउरा लेतो सीधा
सोंखा पीरें बांधतो बोझा !

जोदी बेजारी मोइर जितो,
ओझांइ भूतेक दोहइ देतो!
ओकर पासें करबें गोहाइर
चाइर जूता पइवें माइर।

ओझाक कथाँइ रहवे भूली,
टाँगे हतो काँधे झुली!
बिगियान जुगें आँइख खोल
डाक्टरें देतो बेजारिक बोल !!

***

बिना सिंघेक काडाइँ

प्यारे हुसैन 'प्यारे'

माइ गो एगो माइ,
खाधान कारखानाएँ,
तोर छउआक ढुँसइ माइ,
बिना सिंधेक काड़ाँइ !

माइ गो एगो माइ !
रोगा मुँहा, ढेनपेटलाक,
माछी ढनकइ पुँठाइँ।
बजर मुड़ाक आँखि किची,
तनी गोड़ उठइ नाँइ !

माइ गो एगो माइ।
बाइदें–बइहारें रोगाइँ,
हेली–हेली खाइल!
पुँठा फाटल देखि रोगाक
दया करती सँबाइ

माइ गो एगो माइ !
धानें पोआरें रोगा,
तनि गेल चिकनाइ !
खेतेक आइरें झालइ,
मारी देलइ धँसाइ !

माइ गो एगो माइ!
धान–पोंआर छाड़ि रोगाइँ
घीवेक छाँकल खाइ !
चिकन–चिकन खाइ रोगा
एखन गेलक मताइ!

माइ गो एगो माइ !
रूखड़ देहीं, फाटल चाम
रोगाक गेलइ तेलाइ!
रउदेक डरें, जुड़ा धाइरें
बइसइ पाँखाक हावाइँ।

माइ गो एगो माइ !
एखन पुँइछें गोबर लेटी
आवे रोगा झुमाइ–झुमाइ !
माताइ के एखन माइ !
काड़ाक मुड़े बाजराइ टाड़,
गुँड़ा–गुँड़ा कइर देबइ हाड़ !
सेटा छाड़ा उपाइ नाँइ
एहे हुब दीहें माइ !
माइ गो एगो माइ !

15

प्रदीप कुमार 'दीपक'

कवि, गीतकार, गायक 'दीपक' जी के जनम 24 जनवरी 1965 ई0 में भेल हइन। बिहार राइज के लोहाक कुटीर उद्योग के नाँवे परसिध गाँव भेंडरा (गिरिडीह) के बसिंदा फिरंगी विश्वकर्मा आर सुमित्रा जी के बेटा कवि दीपक जी लागथ।

छोटानागपुरेक धरती के झारे बोने इनखर गीत राँची रेडियो से गुँइज रहल हइन। तोहें एगो चनफनियाँ चेठगर रचनाकार लाघे। एखन गाँव केरे डाकघरें सरकारी नउकरी में तोहें हा ।

'कखन हतइ भोर' कबितवें कवि के एगो आसाक आलो झलक–हइ।

कखन हतक भोर

प्रदीप कुमार 'दीपक'

जन्दे जाहों तंदे आँधार, कखन हतक भोर।
जन्दे भालों तंदे आँखीं, डबडब हे लोर।।
एक पतरी भात खातिर, लोक कते बउवा–हथ।
एक चुरूवा दुधक लेल, गीदर कते टउवाहथ।।
मिसिन रकम हाड़ तोड़वा, काम रौंदें कर–हथ।
ताओ नुन भात खातिर, साँझ बिहान मर–हथ।।
नाँइ भाँजे पारों कन्दे, दुखेक पथान–ओर।
जन्दे मालों तंदे आँखीं, डबडब हे लोर।।
आधार धरें डिबरीतर, कोन्हो छउवा पढ़े हे।
आपन आँखीं जी जिवनेक, लौतन आस गढ़े हे।।
मेतुक पढ़ल लिखल बादें, नउकरी लेल दौड़ हे।
चाइरो दिग घुरल बादें, आपन कपार फोरे हे।।
दुइयो आँइख हाथ रहइतें, कामेक नखे ठोर।
जन्दे भालों तंदे आँखी, डबडब हे लोर।।
आँगना तर खेल–हथी, सभे बेटी धिया।
मुड़ियो आर पुतरो ले, हुलइस उठे जिया।।
सियान भेलें रूप गंधें, पर घर जवइया।
सेहो बेटिक दहेज राकस, माइर देहे जिया।।
कते बेटी जइर मोरला, रूपें गुनें घोर।
जन्दे भालों तंदे आँखी, डबडब हे लोर।।

16

दर्शन प्रसाद सिंह

दर्शन प्रसाद सिंह जी के जनम 1 जनवरी 1948 ईस्वीं में खामारगोड़ा (कतरास) में भेलइन। तोहें राजकीय मध्य विद्यालय सेन्दरा बाँसजोरा (धनबाद) में शिक्षक रूपें सेवा करल हा। हिन्दी में स्नात्तकोत्तर करल परे एखन तोहें शोध कार्य में रत हा। तोहर खोरठा आर हिन्दी कविता 'युद्धरत आम आदमी' 'उत्तरा' आरहो हेन–तेन 'पत्र–पत्रिका' में छपले आइ रहल हो।

ई कवितवें धरतिक पुत सबके चेठा घुरवेक मंतर सिखाइ रहल हइ।

धिक रे ! धरतिक पुता

दर्शन प्रसाद सिंह

लइ–दइके एके गीता
धिक रे ! धरतिक–छँउड़ा–पुता।
परेक सिरे खाहें
गाछ चेइघ मुतेहें।
मंहगी बाढ़ल राइत–दिन
तावो खोजहें टेरीलीन।
कोरही लोकेक गातें धुन
मुँह सुइख भेतो चून।
अइसने दिन कइसें जीता
धिक रे! धरतिक छँउड़ा – पुता।

घर अइबें फाइँद–फुइँद
भाखा करबें कुइँद–कुइँद।
छाइन हो तोर टुटल–फाटल
मायेक साड़ीं ताली साटल ।
नजइर गाब्वाई भाभ तनी
मलीन भेल हवा–पानी।
चार–दाइल भेल तीता
धिर रे ! धरतिक छँउड़ा–पुता ।

नरम भेल माटिक गात
पोइड़ रहल बोनेक पात।
काँदेहे हमर जनमथान
फुराइ रहल लोक–गान।
मातरीभासाक मान राख
मानुसवादिक मान राख।
मूँह खोल तनी मीता
धिक रे ! धरतिक छँउड़ा–पुता ।

17

बिनोद कुमार

बिनोद कुमार के जनम हजारीबाग जिला के दारू गांवें 18 नवम्बर 1961 ई0 में भेलइन। इनखर बापेक नाँव मथुरा प्रसाद लागइ।

बिनोद जी खोरठा आर हिन्दी में कविता आर कहनी सुरूवे ले लिखल आइ रहल हथ। 1981 बछरें तोहें संत कोलम्बा कॉलेज हजारीबाग से बी०ए० पास कइर 1986 ई० में एम०ए० (खोरठा) प्रथम श्रेणी में पास करल्हे। मातरीभासा खोरठा के आगु बढ़वे खातिर तोहें दिन–राइत लाइग परल हा। तोहर रचना समाज के लउतन डहर देखवल आइ रहल हइ। हिन्दी आर खोरठा कविता, कहनी आकाशवाणी आर दूरदर्शन से कई बेर परसारितों भेल हो। तोहर उपर खोरठा जगत के गउरब हइ। एखन तोहें राँची वि०वि० में खोरठा के व्याख्याता लाघे।

ई रचनवें हामर देश भारत के जुबान सब के आपन कर्त्तव्य के इयाइद कराई रहल हइ।

देसेक जुवान

बिनोद कुमार

तोंय जुवान देसेक सान,
तोंय सपुत देसेक मान।
देसेक लेल माटी खातिर,
करें तोय लहुक दान।

सभेक नजइर तोरदन,
भाभ जुगुत ई खन।
माँइ माटी बेहाल हथ,
छउवा हिंया काँद–हथ।

माटिक सपुत एके भाइ,
बिकासेक लेल देहक साइ।
कुटि चाइलें फूट परलें,
माटिक टोना टुकरा करलें।

ई चाइलें बरकइत नखो,
दुसमनें माटी लुइट लेतो।

चाइरो बाट ले जुट हवा,
देसेक खातिर एक गुट हवा।
बाँचतो तबे माटी माँञ,
नाँइ तो करबें खाञ–खाञ।

तोंय जुवान देसेक सान,
तोंय सपुत देसेक मान।
देसेक लेल माटी खातिर,
करें तोंय लहुक दान।

18

शिवनन्दन पाण्डेय 'गरीब'

'गरीब' जी के जनम 18–9–1956 ई० गिरिडीह जिलाक देवरी परखंडे मझिलाडीह घोरंजी गाँवेक एगो गरीब बाम्हन परिवारें भेल हलइन। सिराइल बाप सीताराम पाण्डेय माँइ सावित्री जी के एकलउता बेटा गरीब जी निस्टो एखुन तक गरीबें हथ, मुदा तोहें माटी आर मातरीभासा के धनी मानी बेटा लाघे। तोहर मन चेठगर आर हुबगर रहेक कारन खोरठा जगतें एगो 'लोकप्रिय' कवि के रूपें नाँव जइजका हा।

खोरठा भासाक संगे–संगे 'संस्कृत' मेहु तोहर अधिकार समान रूपें हों। ई जुगेक दहंजल आर संतवल जदि केउ साहितकार हे तो तोहर नाँव आगु बाटे हइ। परसासन, सासन, आफिसरसाही के मारल कवि गरीब जीक कविता सस्वर पाठें सम्सेलनें जुटल लोक मोहित होइ जाहथ।

तोहर 'धरती छोटानागपुरेक' कविता में हिंयाक सांस्कृतिक आर आर्थिक सोसन के बखान करल गेल हइ।

धरती छोटानागपुरेक

शिवनन्दन पाण्डेय 'गरीब'

बोन–झारें घर हमर, हमर नागपुर हे,
नाना खनिज–बनज हियाँ देसेक रुर हे।
रातीं सहर दिन अइसन, दिने गाँव राइत हे,
नागपुरें बिजली न, मानुसेक करामाइत हे !
टाँइड़–गोड़ा सब रकम, बहियारी जमीन हे,
घर–दुरा चँइट लेल, दोसरे जमीन हे।
धरती मायेक गाभें, कोयला सोना चाँदी हे,
दोसरेक तो महल बनल, हमर तो बरबादी हे।
घुसखोर कहाँ से आइल, कोठिक भीतर चोर हे,
ओकर जनिक आँखीं काजर, हामर जनिक लोर हे।
जमी–जंगल लुटाइ रहल, हमर घर फाँक हे,
हाथें–हाथें हथिआइ लेल, ओकरे तो धाक हे।
डिस्को के रंगचंगे, तनिको नाञ भेल हे,
करमा–सरहुल परबें, माँदइर फोइर देल हे।
करिया–गोरांइ मेल नाञ, एहे हमर भूल हे,
छोटानागपुरेक धरतीं, समतावादिक मूल हे।
जनी–मरद दुइयो बेगइत खटेके लुइर हे,
सहेके सीमा टुइट गेल, मुदा एखनो सबूर हे।
बोन झारें घर हमर, हमर नागपुर हे,
नाना खनिज–बनज हियाँ, देसेक रुर हे।

19

रामशरण विश्वकर्मा

'मास्टर साहब' के नावें नाँवजइजका हास्य–व्यंग्य कवि रामशरण विश्वकर्माजी के जनम 15 अगस्त 1940 में भेंडरा गाँवें (गिरिडीहें) भेल हलइन। जसोदा आर हरलालजी के सपुत कवि विश्वकर्मा जी के खोरठा साहितें काका हाथरसी' कहल गेल हइन। इनखर फिंगाठी कबिता गुलइन बेंड़ाइल आर बोड़ाइल समाज के सरजुइत कइर सोझ डहरे डिहरवेक जिगिस्ता कइर रहल हइन। 'कवि–गोष्ठी' आर 'कवि–सम्मेलने' इनखर कबिता बहुत पसिंद करल गेल हइ। खोरठा के संगे–संगे हिन्दी केरो ई रचनाकार लागथ।

एखन डुमरी अंचल के रामनगर स्कूलें मास्टरी कर–हथ।

हाँसिक जोगाड़

रामशरण विश्वकर्मा

तोहनी ई खभइर सुनले होबा जरूर,
एगो बड़का सेठ आइ के थाना,
करे लागल काँदना।
हामर देसें गुँडा नाँइ!
जकरा बनइबइ 'बोडीगार्ड' !
दरोगा कहलक सिपाही से जउ हिन्हे हुँदे,
चाइर गो गुंडा लान, जंदे मिलतो तंदे!
काहे ले काँदा हा बाबा !
कि हामर देसे गुँड़ा नाँइ ।

सिपाही गेलक खोजे ले कासी, परियाग
तावो नाँइ पइलक एगो गो गुँडा
सिपाही कहलक ए बाप ! ए माँइ !
किरियो खाइ ले हामर देसे गुँडा नाँइ !
जते हला बड़–बड़ गुँडा
एम०एल०ए०, सांसद बइन गेला !
जते हला छोट–छोट गुँडा
मुखिया–सरपंच बइन गेला !!

20

विश्वनाथ दशौन्धी 'राज'

जनम बछर – 15 अप्रील 1943, जनमथान – मत्मुरना (कतरास) जि0–धनबाद। निधन 16 अक्टूबर 2009।

सम्प्रति – व्याख्याता, गंगा नारायण इंटर कॉलेज कतरासगढ़ (धनबाद)।

कविवर 'राज' जी राँची विश्वविद्यालय से एम. ए. करल पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय देवघर से डिप. इन. एड. करता । विद्यार्थी जिनगी से ही लिखेक परति इनखर अनुराग भेल आइ रहल हइन। एखन तक दरजन सेहुं बेसी हिन्दी आर खोरठा में कविता, कहनी छपल हइन। खोरठा साहित जगतेक पुरना–परिया के कवि पानुरी जी के राजजी संगी लागथ। राँची आकासवानी ले अनठेकान रचना इनखर परसारित भेल हइन। खोरठा साहितेक नाना विधा–उपनियास, कहनी, कबिता, निबंध परकासन हवेले जोहइड़ रहल हइन।

तोहर लिखल हिन्दी उपनियास ढलती साँझ का सूरज' आर कबिता संगरह 'वेदना के पंख प्रगति प्रकाशन आगरा ले छइप बाहर भइ गेल हो। कई बछर तक तोहें खोरठा पत्रिका 'तितकी' के संपादनों कइर चुकल हो। एखनो तोहें लगस्तरे लिख रहल हा।

इनखर कबितवइनें –लहर आर तनी सुन रे मानुस' – मानुस के सेरेस्ता देखवल गेल हइ। मानुसें–मानुसें विभेद सोसन करेवाला मानुसेक दुसमन हवे हे। से ले ई जगतें सबले बोड़ मानुस ।

लहर

विश्वनाथ दशौन्धी 'राज'

नाञ मानलें हमर बात,
बहुत जोरलियो हाथ।

आर तोरा कते कहबो
ककरा–ककरा आर कहबो।
हमरे घर
हमरे ढेंकी
हमरे कुइट देलें
नतून गातेक रकत
हमरे चुइस लेलें।
लागी हम्हूँ मानुस
हमरो चाही रोटी

रहे खातिर घर
हमरो चाही माटी ।
आर सभे मानुसेक हक
हमरो चाही खांटी।

बाँचे खातिर ...।
एके संगे, एके माटिक
बहराइ हजार बेटा
तोइर देब्थु थोथना
बाँइध मुड़े फेटा।
नजइर गाब्वाई हेर
कइसन लहर आइज उठल
टुटतो धांसइन तोर
कहाँ रहबें ढुकल
अब लेबो आपन हक
ताइक रहबें तोञ भक।

चेत!चेत! एखनो चेत
आर नाञ चेराव हमर खेत !

तनी सुन रे मानुस

विश्वनाथ दशौन्धी 'राज'

तनी सुन रे मानुस
मने गुन रे मानुस ।

मानुस छाड़ा ई संसारें
केउ नाञ बोड़।
पुराना चेथरा भेद–भावेक
उताइर फेंक,
आव ..... गुमान तोर ।
माइर–पीट लाठी–लाठी
नाञ धरम काटा–काटी,

ई माटी ककर मेल,
कते अइला कते गेला।
चिल झापटा तबे काहे
उड़त आकासे मानुस जाहे,
उड़े जहाँ मानुस
आकासे नाञ ठिकाना
नाञ ठौर।
चाँदेक चकमक सुरूजेक आलो
से तो बड़ी दूर,
हियाँ मोरल ओंजरोंय लोर।

रे मानुस !
तो आब नाञ
एहे माटीं
दुइयो एके खाटीं
आकास छोइड़ रांगब
एहे माटिक सुखल पाता,
दुइयो हाथे धइर,
जोरब मानुसेक टुटल नाता।

32

वासुदेव महतो

जनम – 08 जनवरी 1946
जनम थान – छोटकी डुंडी (करमा), जिला – रामगढ़
माँयेक नाम – फाको देवी
बापेक नाम – बोधनाथ महतो

सिक्छा – पढ़ाइयेक असुबिधाक चलते इनखर पढ़ाइ लिखाइ मामुघार गाँव सिरू (रामगढ़) से सुरू हे। राजवल्लभ सिंह उच्च विद्यालय, सांडी–चितरपुर से मैट्रिक परीक्षा 1963 में पास करल। बादें 1967 में सन्त कोलम्बस कॉलेज, हजारीबाग से गणित प्रतिष्ठाक संगे बी0एस0सी0 पास करला। बी0एड0 1976 में आर एम0एस0सी0 1983 में गणित बिसइये करल हथ।

अध्यापन – 1970 में रामगढ़ उच्च विद्यालय, कोयरीटोलाक स्थापना भेल आर हुँवें गणित आर विज्ञान विसइयेक मास्टरी सुरू करला। दू–तीन जगहे बदली हेल बादें गाँधी स्मारक उच्च विद्यालय, रामगढ़ कैन्ट से 31 जनवरी 2006 में सेवानिवृत हेला।

शिक्षक नेता – मास्टरेक संगे राजनीतियों में रूचि हेल। ई खास कइर के जनवादी विचारधाराक लोग लागथ। शिक्षक संघ से जुड़ेक कारण 1988 में अनुमंडल सचिव, 1992 में जिला सचिव (हजारीबाग).आर 2000 में उ0 छोटानागपुर प्रमंडलेक अध्यक्ष चुनइला।

कृति – एन एप्रोच टू केमेस्ट्री (1985), न्यूमरिकल डाइजेस्ट इन फिजिक्स, न्यूमरिकल डाइजेस्ट इन केमेस्ट्री, खोरठा लोकोक्ति (1987), खोरठा बेयाकरनेक खोमचा, खोरठा बेयाकरनेक दमराही, कतरन (2010), खोरठा निबंध (2016)

सम्पादन – रामगढ़ जिला स्मारिका आर झारखण्ड संदेशेक प्रधान सम्पादक। खोरठा पाठ्यक्रम निर्माण समितिक सदस्य, खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष।

ई एखन तक खोरठा साहितेक सेवा कइर रहल हथ।

दामोदर भेल खिदोर

वासुदेव महतो

केहू बोले धारा –धारा
केहू बोले मारा–मारा
गाँवे मचल
बड़ा सोर,
सजनी गे, दामोदर भेल खिदोर।
नदिया के धारी–धारी
कान्दे शेख भिखारी

पनिया पिये
सांवरी ढारी–ढारी
अंइजरा में,
डंक मारल बड़ा जोर,
सजनी गे, दामोदर भेल खिदोर।
ओहारीक धारी–धारी,
माय बेटी ढरकावे लोर,
देवनादेक कोराञ बइसी,
पपियहा हांसे बड़ा जोर,
सजनी गे, दामोदर भेल खिदोर।
पेटभीतरे हीरा–मोती,
पानी से बिजली बाती,
चहुँओर करे इंजोर,
सजनी गे, दामोदर भेल खिदोर।
दामोदरेक मांदे ढुकल,
हीरा चोर,
उकुल–बुकुल मनवा करे,
जिया उड़े सरगेक ओर,
सजनी गे, दामोदर भेल खिदोर।

❋❋❋

झारखंड के आँखिया ले ढरकी गिरे लोर

वासुदेव महतो

मधुवन में ढुकल चोर,
पारसनाथ ले भागल मोर
दामोदर भेल अगम खिदोर,
सबरनखा कान्दे बड़ा जोर,
झारखंड के अँखिया ले ढरकी गिरे लोर,

हवा बसात छेकाय गेल,
बाँधल बाँध लुटाइ गेल,
छारल छाइन उजइर गेल,
चले पइछमहा हवा बड़ा जोर,
झारखंड के अँखिया ले ढरकी गिरे लोर।

पिंजराञ बन्द भेल बन्दी,
गीतहर के गीत सुनो,
उदासी के सहनाइ बाजे चहुँ ओर,
झारखंड के अँखिया ले ढरकी गिरे लोर।

भोरेक कोइलिया माड़ल परदेश,
हिरणी के बसेरा में बघवा के प्रवेश,
कारी बदरिया के सन्देसवा सुनी,
करेजवा फाटे बड़ा जोर,
झारखंड के अँखिया ले ढरकी गिरे लोर।

दामोदर से हीरा बोले,
सबरनखा से सोनामती बोले,
पतरातू से बिजली देवी बोले,
भिखारी के भेखे, ढुकल चोर,
झारखंड के अँखिया ले ढरकी गिरे लोर ।

जल, जमीन, जंगल के पपीहा सतावे,
फल–फूल से निर्मोही आपन घर सजावे,
कब्रिस्तान समसान में दखल जमावे,
खेत–खलिहान गोटे कोलाहल पूर जोर,
झारखंड के अँखिया ले ढरकी गिरे लोर।

खोरठा भासाक बिसेसता

कोनो भासाक आपन बिसेसताक ओजह सें ही अलग ठाँव–ठेकान, नावँ देल जाइक। खोरठा भासाको आपन बाछाठ (बिसेसता) हइ, जकराँ हामिन हेंठे उखरवल बिंदु से समझे पारबइ :–

(क) खोरठा मूल रूपें झारखंडे बोलल जाइवाला भासा लागे, तकर छाड़ा ई हमर देसेक भीतर प0 बंगाल, आसाम, अंडमान–निकोबार आर बिदेसें मारीससे बोलल जाहे।

(ख) खोरठा के बोलवइया मुइख रूप से सदान (झारखंडी गइर आदिवासी) सब लागथ सइ ले एकरा सदानिओ कहल जाहे।

(ग) कुछ आदिवासी समुदाय जइसन – महली, कमार, बेदिया, बिरहोर, मुंडा हेन–तेन के माँयकोरवा भासा (मातृभाषा) लागइन।

(घ) खोरठा कोन्हो खास जाइत चाहे सम्प्रदाय के भासा नाय बिचकुन सभे समुदाय के भासा लागे। आपन छेतरें दू गइर भासा–भासी समुदायेक बीचें ई परियाक परिया ले मेलुक भासाक (संपर्क भाषा) काम करते आइ रहल हे।

(ङ) सरकार एकर मानता 'द्वितीय राजभाषा' आर 'क्षेत्रीय भाषा' के रूपें देल हइ।

(च) खोरठा झारखंडेक सबले बोड़ छेतरे लागाइत 31 से 46 हजार वर्ग कि0मी0 में लागाइत दू करोड़ आबादी के बीच बोलल जाहे।

(छ) खोरठाक उत्पत्ति सिंधु घाटी सभ्यता के लिपि खरोष्ठी के भासा से मानल जाहे।

(ज) खोरठा के भासिक रूप में 'आर्य–अनार्य' दुइयो भासा परिवार के परभाव पावल जाहे।

(झ) एकर लोक साहित ढेइरे तलियाइल–सरगताइल हइ।

(ञ) एकर सिस्ट साहित बिकासमान हइ।

(ट) एखन खोरठा भासा में नौवाँ से लइके एम0फिल0 तइक पढ़ायेक बेबस्था हइ आर हेंठेक कलासें पढ़ाइ सुरू करावेक उता–सुता चले लागल हइ।

(ठ) झारखंड राइज सेवाक कइएक गो प्रतियोगिता परीक्षा में खोरठा के एगो बिसय रूपें ठाँव देल गेल हइ।

***

स्टॉकिस्ट और वितरक :-

फोन : 06553–226703, 224738

मो0 : 9431146226
7781955425
9430725444

शिशु ज्ञान केन्द्र
ज्ञान भारती

सभी प्रकार की पुस्तकें, कॉपियाँ एवं स्टेशनरी के लिए सम्पर्क करें।

लोहार टोला, रामगढ़ कैन्ट : 829122

मूल्य : ₹ 100/-

Suchita Computing, Ramgarh #94313